'सृजन शब्द से शक्ति का'

अन्तरा शब्दशक्ति

दिसम्बर-जनवरी २०२० संयुक्तांक (अंक-६)

मासिक वेब पत्रिका

साझा संकलन - दिसम्बर एवं जनवरी माह में अन्तरा शब्दशक्ति वेब अंक में प्रकाशित रचनाओं का

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

'सृजन शब्द से शक्ति का'

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

साझा संकलन

INBN - 978-93-5372-088-9

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
संपादक- प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६
मोबाईल- ६४२४७६५२५६
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण- २०२०, अन्तरा शब्दशक्ति- साझा संकलन
मूल्य- १२०.०० रूपये
मूद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक

वेब अंक

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

एक कदम और,..!

आज आप सभी से साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि १ अक्टूबर २०१६ से अन्तरा शब्दशक्ति का वेब अंक सृजन शब्द से शक्ति का आरंभ किया। **ISSN** या **RNI** नंबर की जटिल प्रक्रिया से बचते हुए अन्तरा-शब्दशक्ति हर माह के अंत में इसे एक साझा संकलन और ई बुक के रूप में संग्रहित करेगा। इसमें कविताएँ, लेख, लघुकथा- लघु कहानियाँ और अन्तरा शब्दशक्ति के साहित्यिक समाचार, आगामी कार्यक्रमों की सूचना आदि सम्मिलित होंगे।

आशा है इस प्रयास को भी आप सभी का पूर्ववत स्नेह और आशीर्वाद मिलेगा

डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

अनुक्रमणिका

अब तक प्रकाशित रचनाकार

०१
मंजू सरवगी 'मजरी'
प्रदीप अरोरा
अर्चना कटारे
नरेन्द्र पाल जैन
जयकृष्ण चांडक 'जय'
हेमलता राजेन्द्र शर्मा
राधा गोयल
नवीन जैन 'अकेला'
सीमा शिवहरे 'सुमन'
कीर्ति प्रदीप वर्मा
डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

०२
सुरेन्द्र भसीन
तरूणा पुंडीर 'तरूनिल'
सुरेन्द्र चतुर्वेदी
विपुल शर्मा
नीरज त्यागी
शीलकांत पाठक
डॉ. आर.के.तिवारी
राकेश
राजेश्वर राय 'दयानिधि'

०३
सुरेन्द्र कुमार महाजन 'तन्हा'
डॉ. वासिफ काजी
उमाकान्त यादव
वी.के.सिन्हा
प्रतीक प्रभाकर
रामप्रसाद यादव
कृष्ण भारतीय
रत्ना पाण्डे
अमिताभ बुधौलिया
सोमेश त्रिवेदी
रेशमा त्रिपाठी

०४
राजीव रंजन शुक्ल
राजू उपाध्याय
शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'
अपेक्षा व्यास
कुंवर उदय
सीमा शिवहरे 'सुमन'
डॉ. आशु जैन

०५
अशोक जमनानी
राजेश 'प्रखर'
दीपशिखा 'सागर'
ज्योति खरे
अजय श्रीवास्तव
गुलशन प्रेम
डॉ. रूचि चतुर्वेदी
बलविंदर भनोत
कोमल वाणी
प्रीति कर्ण
सुमित अग्रवाल

०६
मुकेश दुबे
चन्द्रप्रभा सूद

०७
शिखरचंद जैन
मुकेश कुमार सिन्हा
बाबुलाल शर्मा 'बौहरा'
कन्हैया साहू
चन्द्रविजय प्रसाद 'चंदन'
कुशल जैन

०८
सुहास भटनागर
प्रीति सुराना
रमेश चंद्र शर्मा
किशोर छिपेश्वर
यू एस. मिश्रा
तारकेश्वर शर्मा 'विकास'
रेशमा त्रिपाठी
महेश राजा
सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा'
कृष्ण मोहन प्रसाद
यस. अनंतकृष्णन

०९
डॉ. दीपेन्द्र पाण्डेय 'उजाला'
चौधरी मदन मोहन समर
सीमा अग्रवाल
वन्दना दुबे
सुभद्रा वाजपेयी
सुमित ओरछा
रामकिशन शर्मा
शेखर अस्तित्व
निहारिका चौधरी
रजनी रामदेव
उपेन्द्रसिंह सुमन
विनोद कुमार जैन

१०
विश्व हिन्दी दिवस विशेष
संकलनकर्ता - डॉ.प्रीति सुराना
प्रो. सरन घई

११
मिथिलेश कुमार दर्द
नीना सिन्हा
सरस्वती मिश्र
माधुरी मिश्रा
रश्मि शर्मा
आभा सक्सेना दुनवी
रूपल जोहरी
डॉ. सध्या रूहेला
राखी कुलश्रेष्ठ
राजमती पोकरण सुराणा
रागिनी स्वर्णकार 'शर्मा'

१२
अरूण सातले
हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'
आभा चंद्रा
सीमा हरिशर्मा
राजू उपाध्याय
राधा तिवारी
प्रयाश जोशी
गरिमा सक्सेना
बुसरा तबस्सुम
पद्मा प्रसाद
दिव्या राकेश शर्मा
रेणु मिश्रा

१३
निधि अग्रवाल
किशन स्वरूप
नेहा नाहटा
रूबी प्रसाद
हर्षिता पंचारिया
नरेन्द्रपाल जैन
विवेक कवीश्वर
सुरेन्द्र कुमार द्वारका
राजबहोर पाठक 'मनोज'
अपेक्षा व्यास
मनोज जैन

१४
मकर संक्राति विशेष
संकलनकर्ता - डॉ. प्रीति सुराना

१५
वेदप्रकाश लाम्बा
मंजुला बिष्ट
अनामिका चक्रवर्ती 'अनु'
भाऊराव महंत
अविनाश ब्यौहार
सुभाष रूपेला
सुमन जैन
डॉ. सलिल समाधिया
डॉ. ज्योतिसिंह
कुंवर बेचैन

१६
डॉ. लक्ष्मी कुशवाह
लोकेश महाकाली
शैलजा पाठक
स्वदेश मल्होत्रा रश्मि
सीमा व्यास
क्षमा सिसोदिया
प्रज्ञा जायसवाल
एमानुएल दीप
नीति अग्निहोत्री
कुमुद अनंजया

१७
राजेश्वरी
भूमिका जैन
सुभाष पाठक 'जिया'
आरती डोंगरे
डॉ. कनक पाणि
सुधांसु शेखर पाठक
लक्ष्मण रामानुज लड़ीवाला

१८
नितिन श्रीवास्तव

१९
सुदीप भोला
मुकेश सोनी 'सार्थक'
रामकिशोर मेहता
अरूण कुमार अरू
सुदर्शन चक्रधर
अर्पणा संतसिंह

२०
नेहा नाहटा
दिनेश देहाती

२१
शब्द कोविद सम्मान २०२०
सांतवा अन्तर्राष्ट्रीय सोशल मीडिया सम्मेलन

२२
ठाकुरदास 'सिद्ध'
आर्यावर्ती सरोज 'आर्या'
पूनम कतरियार
उपेन्द्रसिंह सुमन
नीलमणी पाण्डेय
सुरेश नायक
'मंगल' जितेन्द्र
विमल तिवारी 'आत्मबोध'
कैलाशचंद्र यादव

२३
गणतंत्र दिवस बिशेषांक
संकलनकर्ता- डॉ. प्रीति सुराना

२४
शहीद दिवस विशेषांक
संकलनकर्ता- डॉ. प्रीति सुराना

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

संपादकीय..✍ सहेजने की आदत डालें

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

विगत दो महीनों से कार्यक्रमों की अत्यधिक व्यस्तताओं के चलते दिसंबर और जनवरी के अंक प्रकाशित नहीं हो पाया। किन्तु ये नहीं है कि हमनें आपकी रचनाओं को पाठकों तक पहुँचाने का इरादा छोड़ दिया। दरअसल सहेजने की आदत में एक बहुत बड़ा फायदा है कि हम जब चाहें यादों को जी सकते हैं। इसी मंतव्य के साथ हैम उस बार संयुक्तांक में लेकर आ रहे हैं भूली बिसरी बातें।

परिवर्तन संसार का नियम है। जो आज है वो कल हो जरूरी नहीं। दिन का रात में बदलना रात का फिर दिन हो जाना इससे बड़ा कोई और उदाहरण किसी भी जीवित व्यक्ति के लिए नहीं हो सकता। कल और कल के लिए आज का होना अनिवार्य है। जो कुछ भी अभी घटित हो रहा वही पल पल बीता हुआ कल बनेगा और जो आने वाला पल है वही भविष्य है और चाहे बीता हुआ हो या आने वाला कल उसके लिए जरूरी है आज का होना ठीक एक परिकल्पना को सच करने के लिये आवश्यक सामग्री की तरह। ये बात और है को परिकल्पना के साकार होते ही वह एक खोज, एक याद, एक अतीत की उपलब्धि बनकर रह जाएगा। खैर,..!

समय ये सोचने का है कि आज और अभी के अलावा सब कुछ परिवर्तनशील है तो आज और अभी को सार्थक कैसे बनाया जाए। कैसे जीये कि जीवन में मलाल न रह जाए।

परिवर्तन का समय कोई नियत काल नहीं है बल्कि पल प्रतिपल है। अभी अभी ही साल बदला है, अभी अभी ही बसंत की आहट आई है। माघ में ही फागुनी बयार की दूर से आती सनसनाहट सुनाई देने लगी है। फाग रंगों की बहार लेकर आएगा, बासंती मधुमास जीवन मे उम्मीदों के रंग भरकर इठलाता हुआ गुजर जाएगा। सोचना ये है गुजरते हुए हर पल को यादगार, आदर्श और अमिट बनाने के लिए क्या किया जाए।

क्यों न सहेजने की एक बहुत खूबसूरत आदत डाल ली जाए। आज जो भी घट रहा है पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, मानसिक और शारीरिक स्तर पर हर पल जो परिवर्तित हो रहा है उसे कुछ इस तरह लिख लिया जाए कि जो बदला वो क्या था और जो बदलाव हमारी ओर से अपेक्षित था वो क्या था? क्या जो अपेक्षित था वो सही और उसके लिए किए गए प्रयास पर्याप्त थे, या जो हुआ वो सटीक था, नहीं था तो क्यों नहीं।

यकीन मानिए, दस में से एक ने भी सिर्फ दैनिक जीवन के अनुभवों को डायरी पर लिख दिया तो उनका यह कार्य आने वाले कालखंड में मार्गदर्शक दस्तावेज बन जाएगा जो कि ये बताएगा कि अपेक्षा उपेक्षित सिर्फ और सिर्फ समर्पित हो कर किये गए प्रयासों या समर्पण में कमी के कारण होती रही है। फिर बात सपनो की हो या अपनो की, देश या समाज की हो या कल और आज की।

बस एक सोच है ये की सहेजा जाए जीवन से जुड़ी हर अच्छी बुरी घटना, सही गलत की बातों और हालातों को। कल हमारे बाद जब यादों की संदूक खोली जाए, तो धुंधली तस्वीरों और पीले पड़े कागजों में बिखरा पड़ा हो वो हर पल जो सचमुच बदला जा सकता था, शायद बीच का एक भी पल बदल दिया जाता तो सब कुछ, कुछ और होता।

इन्हीं संभावनाओं का नाम जीवन है किंतु उससे भी बड़ा एक सच ये भी है कि परिवर्तन संसार का नियम है पर दिन का रात में और रात का दिन में बदलने का क्रम और काल निश्चित है और जब भी उलझेंगे इन रहस्यों में अंतिम जवाब होगा ये तो नियति का खेल है, और हम आप फिर तलाशने लगेंगे आज और अभी को छोड़कर आने वाला कल, क्रम चलता रहेगा, विचारों का आरोह और अवरोह भी सतत याद दिलाता रहेगा कि परिवर्तन संसार का नियम है और जो न समझ पाएं वो रहस्य नियति,.. अतः चलते रहें जब तक संभव है, और हो सके तो सहेजने की आदत डालें चाहे तस्वीरों में, कलात्मकता में या चाहे लेखन में डायरी के पन्नों पर, किताबों में या सोशल साइट्स पर,...कभी भी पर कहीं न कहीं सहेजें जरूर पल-पल को,....!!!

एक और खुशखबरी अगला अंक स्मारिका के रूप में प्रकाशित होगा जिसमें शामिल होगा सृजन फुलवारी से अन्तरा शब्दशक्ति तक का सफर। आप सभी की शुभकामनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 01 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

नव वर्ष 2020 की हार्दिक शुभकामनों सहित वर्षाभिनंदन विशेषांक

मंजू सरावगी मंजरी

नया साल, नया उल्लास
पूरी होगी सबकी आस
सब मिलकर करें विकास
जमीं पर ले आये आकाश

दिसंबर जा रहा दे कर
खटटी मीठी सुहानी यादें
नया साल आ रहा है ले
नई उम्मीद, नयी सौगातें

वक्त, साल नववर्ष आयेगा
हम पुराने इंसान ही रहेंगे
नये सुविचार, नई कल्पना
हमारे नये संकल्प रहेगें

बड़ो का करें सम्मान
संस्कारों का करें मान
अपना पराया भूल कर
रिश्तों का रखें ध्यान

नित्य नया सृजन करें
नये नये अविष्कार करें
नये संकल्प के साथ
नये भारत का निर्माण करें

स्वच्छ भारत बनायेंगे
गंदगी गरीबी दूर हटायेगें
शिक्षा का करके विस्तार
शिक्षित भारत बनायेंगे

बेटा बेटी एक समान
समाज को दो यह ज्ञान
बेटी पढ़ाओ, आबरू बचाओ
नये साल का हो अभियान

घर गली गाँव या शहर
बेटी घर से निकले निडर
सबका यही संकल्प हो
बेटियाँ हमारी सुरक्षित हो

नया साल हो सबको सुखदाई
सबको नये साल की बधाई

प्रदीप अरोरा

उत्साह की अपील

घड़ी की गतिमान सुइयों के साथ
टिक-टिक सा स्वर
अहसास दिलाता है
बीते पलों का,

पल-पल के साथ
दिन गुजर जाता है
हर सांझ ढलने पर
मिलता है
'विश्रांति का सन्देश',

यह विश्रांति
यदि
शिथिलता में
हो जाए तब्दील
कर्मयोग रह जाएगा अधूरा,

विश्रांति
आत्मविश्लेषण का है पड़ाव
जहां पहुंचकर
हमें देखना है
उद्देश्य की शेष परिलब्धियाँ
आने वाले दिवस हेतु
कितने उत्साह की
करती है अपील,

यदि
सार्थक रूप में
हम सुन पाए
घड़ी की टिक-टिक
और
कैलेंडर के
बदलते पन्नों की फडफडाहट
तब ही 'प्रदीप'
सुबह की पहली किरण
दोहरा उत्साह लिए
करेगी स्वागत
'कर्मयोगी' का ।

अर्चना कटारे

उमर की किताब का एक
पन्ना फिर पलट गया
देखो देखते देखते
दिसंबर चला गया

उम्र की डोर से एक
मनका गिर गया
बचपन बीत गया
देखो बुढापा आ गया

खुशी इस बात की है
कि कुछ तजुर्बा दे गया
हर उमर का एक मजा था
मन इसी में खुश हो गया

वक्त वक्त की बात थी
वक्त जाने कब बीत गया
वक्त के दौर से
हर वक्त गुजर गया

आज जो था कल की
चिंता मे बिता दिया
कल न आया कभी
शरीर जर्जर हो गया

समय था जो मुट्ठी भर रेत
की तरह निकल गया
लम्हा-लम्हा फिसल गया
समय भाप बन उड गया

फिर बूढा दिसंबर गुजर गया
नया साल आ गया
कोहरे ठंड का दुसाला ओड
नया साल आ गया

करेगी प्रकृति स्वागत नयी कोपलों की
छायेगी नयी बहार नयी उमंगों की
आयेगा फिर चैत्र का महीना
ऋतु राज बसंत की

चलेगी बसंती हवाऐं
गायेंगी राग मल्हार की
कोयलों भी कूकेंगी,
स्वागत में नये साल की

नरेन्द्र पाल जैन

नये वर्ष की प्रथम रश्मि ये,
जीवन आलोकित कर दे,
खुश्बू फैले मुस्कानों की
रंग उमंगों के भर दे।
अम्बर की आँखों से बरसे
प्रेम सुधा रस धरती का,
हवा सुवासित होकर मन की
खिड़की के खोले परदे।

खुली आँख से जो देखा है
पूरा हो सबका सपना,
प्रेम की ईंटों से चुनवा दो
सबके दिल में घर अपना।
नागफणी मुरझा जाने दो
हरसिंगारी फूल खिले,
मौन रहे करुणामय सरगम,
खुशियों की माला जपना।

जयकृष्ण चांडक 'जय'

मुझसे मेरी कोई कहानी मत पूछो !
रोशन घर में ये वीरानी मत पूछो!

देख-देख खुद को रोने से क्या होगा,
कहां गई वो शोख जवानी मत पूछो!

छप्पन भोग भी सामने उसके फीके हैं,
वो बचपन की मीठी गुडधानी मत पूछो!

सूखे पत्तों सा बहाकर ले जाऐगा,
बहते दरिया से उसकी रवानी मत पूछो!

हो गया हो शहीद, लाल जिसका सरहद पर,
उस बेकल मां की आंख का पानी मत पूछो!

अनमनी सुबह बची है रात भी कांटों भरी,
कैसी थी वो शाम सुहानी मत पूछो

'जय' बीते वे दिन सभी कुछ खट्टे, कुछ मीठे थे,
नये साल में मुझसे मेरी यादें पुरानी मत पूछो!

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

हेमलता राजेंद्र शर्मा

ऐंसा हो नव वर्ष, तुम्हारा आगमन ।
सुरभित ज्यों, मधु मास मे उपवन ।
अज्ञान तम घटे, अब मनुज का।
भास्कर मन मे ऐसे उगे ।
प्रदुषण मुक्त हो, हमारी पवन ।
विश्व मे अब, कोई न रोगी रहे ।
अंत हो आतंकियो का विश्व से ।
आपदाओं के घनें कुहरे छटे ।
शेष न रह जाये, कष्ट की सम्भावना ।
तरु पात सम सारी, वेदनाऐ झरें।
जननी जने अब राधा, दुर्गा, जानकी ।
सृजन हो प्रेम का, दुष्टों के प्राण शिव हरें ।
त्रष्णा मिटे त्रप्त हो, वन खेत आंगन।
घन घना के घटाऐं ऐसे बरसे।
ओढले धानी धरा, फिर हरित ओढनी ।
कर्ज से न अब, कोई कृषक मरे।
फहराये धवल ध्वजा, अब हिन्द की ।
और उच्च हिमालय शाँति दूत बने।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

पदमुक्त हुए २०१६,
२०२० को सौंप रहे
पद भार
सौगातें जितनी मिली
कर देना आभार,
इस वर्ष दोगुनी कर
कर देना रिपीट।
पर मेरे देश से
द्वेषता कर देना डिलीट।
जाते जाते सबको
दे जाना तुम झप्पी,
और कान मे कह जाना
दुःखी भारत माता
अच्छी नही लगती!!
जिस मिट्टी में जन्मे
और अन्न जहाँ का खाते हैं
इंसान तो क्या पशु भी
वफादारी निभाते हैं
अन्न मालिक का खा कर
पशु भी पूँछ हिलाते है।
खुद भी चैन से सोओ
औरों को सोने दो
भाई चारे से रहो
जियो और जीने दो।

राधा गोयल

कैसे मनाऊं मैं नया वर्ष

जब बाग में बुलबुल चहकेगी और कोयल नगमे गाएगी,
हर फूल पे जब यौवन होगा और कली कली मुस्काएगी।
जब मौसम अँगड़ाई लेगा हर दिल में जवानी छाएगी
जब अम्बर झूम के नाचेगा और धरती नगमे गाएगी,
उस दिन मनाएंगे नया वर्ष, जब रुत पे जवानी छाएगी।

जब पलाश के फूलों से धरती का आँचल पट जाए,
जब शिरीष के फूलों का कालीन बाग में बिछ जाए,
जब सबके मन के उपवन में, मौसम की मादकता छाए,
जब कामदेव आकर, लोगों के दिल पर दस्तक दे जाए।
खेतों में नई फसल नाचे, और झूम झूमकर इतराए,
जब सूरज बहुत सुबह आकर, अपनी अरूणाभा बिखराए,
जब लोग सुबह उठकर मौसम का लुत्फ उठाने को जाएँ,
पेड़ों पे लदे फूलों को देख दिल में भी खुशहाली छाए,
उस दिन मनाएँगे नया वर्ष, जब रुत पे जवानी छा जाए।

कैसे मनाऊँ मैं नया वर्ष, क्या नया कहीं कुछ आया है?
तुलसी का पौधा सूख गया है, पारिजात मुरझाया है।
सुबह के पाँच बज चुके अब तक सूरज नजर न आया है।
लगता है वो भी शीतलहर को देख-देख घबराया है।

सब लोग रजाई में दुबके बागों में सन्नाटा पसरा,
दुबका बैठा है सूरज भी धरती पर अभी नहीं उतरा।
है फसल वही, खेती भी वही, नभ में भी छाई है बदली,
जो हाल दिसम्बर में ठिठुरन का, उसकी दशा कहाँ बदली?
सिर्फ कलैण्डर बदला है, बाकी तो सभी पुराना है।
चौत्र प्रतिपदा के दिन ही, मुझको नववर्ष मनाना है।
मौसम पर यौवन आएगा, तब ही नववर्ष मनाना है।
जब कृषक झूम के नाचेगा उस दिन नववर्ष मनाना है।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

आओ....

नव वेला के
नवागमन पर
आओ मिल कर
साथ चलें!

काट तिमिर को
नवल प्रभात में
आओ मिल नव
रचना करें!

नवीन विचार हो
नवीन आचार हो
आओ मिल नव
रचना करें!

पहुँचेंगे शिखर पर
सत्पथ पर चल कर
आओ हृदयंगम यह
विश्वास करें!

प्रगति का लक्ष्य
उत्कर्ष का संकल्प
आओ मिल हम
प्रार्थना करें!

लोभ छोड़ दें सभी
मोह तोड़ दें सभी
आओ सब में यह
भावना भरें!

हो कर्म उत्थान हेतु
हो वृहद प्रेम का सेतु
आओ जन मन में यह
संदेश भरें!

नवीन जैन अकेला

सद्भावों के दीप जलाओ नये साल में
वैमनस्यता दूर भगाओ नये साल में
रुठ गये जो हमसे, हमसे दूर गये जो
मनुहारों से उन्हें मनाओ नये साल में
बीते बर्ष जो हुई सारी गल्तियां गिनकर
सुधार करो सफलता पाओ नये साल में
जात-पात का भेदभाव सब मिट जायेगा
देश प्रेम की अलख जगाओ नये हाल में
देश धर्म से बड़ा धर्म नहीं कोई जग में
वन्देमातरम मिलकर गाओ नये साल में

सीमा शिवहरे 'सुमन'

सब हो मंगल

नव वर्ष कुछ नया करें हम
जो प्रगति का आधार हो !
सब हो मंगल, न रहे अमंगल
देश बढ़े जयकार हो..!!
मेरे देश का बच्चा-बच्चा
उन्नति का आधार हो!
नारी की अस्मिता लुटे न
पुरूष वर्ग उपकार हो...!
गौरेया हर आँगन में लौटे
बच्चों की किलकार हो!
कोई भूंखे पेट न सोए
दानवीरों की भरमार हो..!
नव वर्ष कुछ नया करें हम
जो प्रगति का आधार हो !
स्वच्छता की घटा हो छाई
खुशबुओं भरी बयार हो!
गंगा फिर हो पतित-पावन
गौ माता द्वार-द्वार हो...!
निर्णय क्षमता तीव्र हो सबकी
सरस्वती कृपा अपार हो !
हां-ना की उलझन में कोई
काम नहीं बेकार हो...!
नव वर्ष कुछ नया करें हम
जो प्रगति का आधार हो !
बेटियाँ कहीं न बेंची जायें
पापियों का संहार हो!
स्वार्थ से नेता वोट न माँगें
मनोभाव परोपकार हो...!
संत नियत काबू में रख्खें
मन में भरा ना दुराचार हो!
नारी बेंच दे आँख का पानी
इतनी ना लाचार हो...!
नव वर्ष कुछ नया करें हम
जो प्रगति का आधार हो!
सब हो मंगल, न रहे अमंगल
देश बढ़े जयकार हो..!!

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 02 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

सुरेन्द्र भसीन

ऐसा भी
होता है कभी
कि किसी पेड़ को आवाज मिल जाये
और वह हमें हमारी तरह
बोल-बोल कर दिखाने लगे
और भावनाओं में बहकर
ऊँचे स्वर में कोई मीठा गीत गाने लगे।
ऐसा भी
होता है कभी
कि किसी पेड़ को पर मिल जायें
वह एक जगह खड़ा न रहे
उड़- उड़ कर अनजान प्रदेश जाने लगे
और तरह-तरह के पहाड़ों-झरनों व नदियों को
अपने उड़ान के खट्टे-मीठे तजुर्बे बताने लगे।
मगर ऐसा होता नहीं है कभी
प्रकृति का पेड़
चाहे कितना भी ललचाये
जो प्रकृति ने उसे नहीं दिया
वे पैर या पर
वह पा नहीं सकता
और प्रकृति के नियम को
कोई भी झुठला नहीं सकता।

बिदाई

तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'

बिदा होने से पहले जब
मैंने नजर भर देखा
केवल वर्ष ही नहीं,
जीवन का एक बड़ा हिस्सा
जुदा कर चुकी थी मैं!
उन बेफिजूल रिश्तों को,
जो मतलब के लिए जुड़े थे।
उन सामाजिक बंधनो को ,
जो बेड़ियाँ बन चले थे।
उन छलावों को जो
मुझे ही छल रहे थे।
उन उम्मीदों को,
जिनमें दंश पल रहे थे।
बिदा होकर जब
हम आगे को बढ़ते हैं,
जीवन के कैनवस पर
कुछ नए रंग भरते हैं।
कुछ सृजन के,
कुछ अध्यात्म के,
जीवन के महाकाश में
स्वत्व की तलाश करते हैं।
तब लगता है विदाई
दुख का नहीं,
जीवन की मरुभूमि पर
नवांकुर का खिलना है,
अपने वजूद का ,
स्वयं अपने से मिलना है।

सुरेन्द्र चतुर्वेदी

दूर हुई आवाज हूँ जैसे,
खुद से ही नाराज हूँ जैसे।
मुझसे नजरें चुरा रहा है,
मैं उसका हमराज हूँ जैसे।
बूढ़े पेड़ मुझे ताके हैं,
मैं भी उम्रदराज हूँ जैसे।
अहसानों की बात करे है,
उसका मैं मेहताज हूँ जैसे।
जिस्म नहीं सुन पाता मुझको,
रूहानी आवाज हूँ जैसे।
नाप रहे हैं आसमान कद,
भीतर की परवाज हूँ जैसे।
अश्क मुझे फिर बांच रहे हैं,
मिटा हुआ अल्फाज हूँ जैसे।

शक, शक, शक

जंगल से गुजरता हूं
तो बचे पेड़ शक करते हैं
गांव से गुजरता हूं
तो बचे खेत शक करते हैं
मुहल्ले से गुजरता हूं
तो खरोंच से बचे
पड़ोसी शक करते हैं
शहरों से गुजरता हूं
तो परिंदे शक करते हैं
मैंने ऐसा क्या कर डाला
कि सूरज-चांद-तारे-नदी सभी
मेरी नीयत पर शक करते हैं
मेरे संगी-साथी-सहपाठी-सहोदर सभी
मेरी नीयत पर शक करते हैं
मेरी चुनी हुई प्रिय सरकार
मुझ पर शक करती है
आइने में झांकता हूं
तो खुद पर भी शक करता हूं
मेरे पृथ्वी-मिशन में
आत्मा के विक्रम-लैंडर के
हार्ड-लैंडिग पर
जब कोई गले लगाकर प्रेमभरा ढ़ाढस देता है
तो मैं उसपर भी शक करता हूं
शक मैं तो
तुझपर भी
शक करता हूं !

शीलकांत पाठक

विपुल शर्मा

क्यूं नही दिखता
किसी को
दर्द मेरा
मेरी तस्वीर.के साथ
क्यूँ नही आती तस्वीर
मेरे दर्द. की
देखते हैं सब ही
तस्वीर मेरी
जाने क्यूँ नही
दिखते किसी को
भाव दर्द के
मेरी तस्वीर मे
हल्की सी स्मित ही
रहती है
सब देखते हैं मेरी स्मित
लगता है सबको
नही है कोई दर्द मुझे
शायद इसलिए नही दिखता
किसी को दर्द मेरा और
नही लेता है कोई
मेरे साथ तस्वीर मेरे दर्द की

नीरज त्यागी

कोई तो है

मेरे मन को छूने का हुनर वो जान गया है।
आँखों मे छिपे अश्को को पहचान गया है।।
कोई रिश्ता नही है उससे लेकिन वो मेरे मन
के हर कोने के छिपे दर्द को पहचान गया है।
हर एक रिश्ता जब मुझे हर वक्त छल रहा था।
वो मेरे दर्द को अपना मान मेरे साथ चल रहा था।।
ना उसने,ना कभी मैंने अपने रिश्तों को नाम दिया।
मैं जब भी जहाँ थका,उसने मेरा हाथ थाम लिया।।
वो कोई दोस्त नही,प्यार नही ना ही मेरा साया है।
जब छल रहा था काल मुझे,मैंने उसे पास पाया है।।
माना रिश्तों को एक नाम देना भी जरूरी हो जाता है।
कोई तो है,ये एहसास इन बातों को कहाँ मान पाता है।।
चलते रहना साथ यूँही,जब तक जीवन का अंत ना हो।
रिश्ता कोई बने ना बने,एहसासों का कभी अंत ना हो।।

डॉ.आर के तिवारी 'मतङ्ग'

मैं विकट अँधेरे का राही
राहें भी विकट ढूँढता हूँ
करता हूँ उजाले से नफरत
ष्प्यालेष् से मोहब्बत करता हूँ
तेरे समाज से बेहतर है
तेरे मतङ्ग की मधुशाला
जो निपट उजाले के राही
कपड़े भी उजले हैं पहने
उनके भीतर हर तरफ
दिखाई देता है गड़बड़ झाला
जो साथ हमारे लगे रहे
सबके हाथों में पत्थर थे
मेरी मजार पे सब के सब
पहनाते फूलों की माला

फ्रेंच फ्राईज ... व्यंग्य

राकेश

नए साल के पूरे दिन का एक छोटा हिस्सा किसी शॉपिंग मॉल में मनाना तय हुआ, विषय था कुछ पहले खरीदी हुई चीजों को बदलना और बच्चों का खेल मनोरंजन कर वापस घर आना। इसी दिन की सूक्ष्म पड़ताल से हमारी जिन्दगी पर हम ही यह व्यंग्य कस रहे हैं और खुद ही अपने मजे ले रहे हैं। अमूमन हम सब बड़े शहर के लोग ऐसे ही हैं, सो आइए हम सब अपने मजे लेते हैं ।

सामान वापसी के काउंटर पर जैसे ही कहा कि बदलना है, महोदय के चहरे पर रंग बेढंग हो गए और सधी हुई सीधी आवाज में बोले की आपको वही लेना होगा जो अभी लिया था। फिर बोले क्रेडिट नोट देता हूँ उसी केटेगरी की कोई चीज ले लें। मैं पलटा कि एक अनुभवी सेल्स मेन दिखे, मैंने फिर पूछा की क्या इस क्रेडिट नोट का इस्तेमाल किसी दूसरी चीज को लेने में नहीं कर सकते? उत्तर मिला, हाँ कर सकते हैं।

इतना सुनते ही हमारी उपस्थित विकल्पों की सूची कई गुना बढ़ गई और कई हजार वर्ग फीट के इस स्टोर में हम एक अदद पसंदीदा चीज ढूंढने में सपरिवार जुट गए। याद आता है जब हम छोटे शहरों की दुकानों पर मन भर कर एक जगह बैठ कर सारी खरीददारी करते थे और कई बार तो बिना खरीदे भी लौट आते थे पर दुकानदार कभी जरा भी उदास नहीं होता था। चाय और जूस की खिदमत होती थी सो अलग। एक ही कपड़े के कई रंग, एक ही रंग में कई तरह के कपड़े, आप जाहिर करो जो हाजिर होता था और दाम भी वाजिब, एक थैली कपड़े रख कर और एक एक्स्ट्रा खाली जो हम निर्लज्ज हो कर साधिकार लेते थे और दुकानदार खीसें निपोरते हुए देता था। अब थैली के ६ रुपए अलग लगते हैं, थैली ऐसी मिलती है की घर पहुँच जाए तो गनीमत। अब एक किलोमीटर की दूकान में एक अदद कपड़ा पसंद आया तो उसका साइज नहीं है, बमुश्किल पसंद और साइज के बीच तालमेल बैठा तो ट्रायल रूम में राशन की दुकान से ज्यादा लम्बी कतार, शायद ये हमारे लिए सबक था ताकि हम उन लोगों की जिंदगी की तहों में झाँके जो दो जून की रसोई के लिए इसी तरह संघर्ष करते हैं, हमारा संघर्ष तो फिर भी AC के भीतर था। याद आता है पहले घर ले जा कर कपड़े जाँचते थे और पसंद न आये तो बदल लो अब तो शहर इतने बड़े हैं की बदलने के लिए आधे दिन की छुट्टी लेनी पड़े और बदलने के तरीके इतने लम्बे, बिल के पीछे के टर्म्स-कंडीशंस उफफ !! किसी तरह ड्रेस ट्रायल रूम में नंबर लगा और जब तक हमने एक ड्रेस खरीदी तब तक वो तमाम लम्हे चुपके से सरक गए जो नए साल की शाम घर के सोफे पे पसर चाय की चुस्कियों के साथ होठों से लगाने का मन था। जिन्दगी भी इसी रेलमपेल रफादफा हो जाएगी ऐसा लगता है।

अगला पड़ाव था बच्चों के लिए गेम्स जोन ले जाना यहाँ भी भीड़ से सराबोर माहौल, शोर से भरे गेम्स, न खुला आसमान, न पसरा मैदान, बच्चे आँख पर वर्चुअल डिवाइस (काल्पनिक चित्र दिखाने वाला चश्मा) लगाकर हवा में बल्ला उछाल रहे हैं और स्क्रीन पर रन और विकेट की काउंटिंगधगिनती चल रही है। एक गेम खेलने की अवधि लगभग १ मिनट और कीमत २६-४६ रुपए। हमने कभी पिताजी से लकड़ी का बल्ला और गेंद माँगना चाही तो जाने क्या- क्या जतन करने पड़े और आज बच्चों को न बोलो तो ये विचित्र व्यवहार करेंगे। किसी तरह तकरीबन ४६६ रुपए के गेम्स खेलने के उपरान्त हम बाहर निकले फिर भी बच्चे कुछ उदास ही थे।

हम सुबह से शाम मैदान में खेलने वाले लोगों के लिए इस घुटन वाले कमरे में लुत्फ लेने जैसा कुछ नहीं था, बचपन में मैंने न तो माँ बाप की आँखों में बच्चों के खोने का भय देखा, न ही रूठ कर असामान्य व्यवहार किया कभी। हम पूरे गाँव में जहां मर्जी वहाँ खेले और खूब खेले। अब मुझे ही अपने बच्चों को कहीं भी भेजने में डर लगता है।

चूँकि सोचे हुए समय से ज्यादा हम इन दो कामों में लगा चुके थे भूख लगना स्वाभाविक था, बच्चों ने खाना चाही फ्रेंच फ्राइज (आलू के तले हुए लम्बे से दिखने वाले टुकड़े), हमारी फिर वही नौबत, राशन की कतार कहो या भूखा याचक जो एक विदेशी दुकान पर हमारे खेतों में उगे आलू अपनी तरह से तल कर हमें देगा, पहले पैसे लेगा जो आलू के प्रति किलोग्राम दर से तुलना करे तो लगभग १०० गुना ज्यादा दामों पर बेच रहा है। हम थाली में परोस कर बिठा के खिलाने वाले लोग, एडवांस पैसा देने पहले लाइन में लगे अपने बच्चों को१०० ग्राम आलू चिप्स खिलाने की कवायद में अपनी शिक्षा, परवरिश और सलीका सब दाँव में लगा कर भारत के आधुनिक शिक्षित समाज के अगुआ लोगों में शुमार हैं। हमारी जिन्दगी उन्हीं फ्रेंच फ्राइज की तरह है जो उगे तो अपनी माटी में मगर बिके परदेशियों की कढ़ाही में तलने के बाद।

-राकेश

राजेश्वर राय 'दयानिधि'

पाप बढ़ा जब-जब धरती पर आये बारंबार
एक बार फिर इस धरती को है तेरी दरकार
दयानिधि अब तो लो अवतार....!

सत्तर-पैंतिस-तीन तलाकों, वाला मस्ला दूर हुआ,
मंदिर अटकानेवालों का, भी घमंड सब चूर हुआ,
जो राफेल का बाजा बजा रहा था, पप्पू पगलेट्टा-
वो बद्स्वर हो गया नाद उसका भी मट्टी-धूर हुआ,
सीएए बन गया, अमल होगा एनआरसी पे भी कल-
लाख माथ पटके कोई पर... बनेगा एनपीआर।
दयानिधि अब तो लो अवतार....!

सोचा थर्टीफर्स्ट दिसम्बर जब इस वर्ष मनायेंगे,
अण्डे की भूजी संग मदिरा का दो पैग लगायेंगे,
थोड़ा नाचें- वाचेंगे घूमेंगे मॉल-सड़क उस दिन-
और लगा मजमा मित्रों का, मुर्गा-मटन उड़ायेंगे,
लेकिन लगा पलीता सारी प्लानों को जब पता पड़ा-
कि इकतिस-बारह-उन्निस को, दिन है मंगलवार।
दयानिधि अब तो लो अवतार...!

काश्मीर का बिलय हुआ, शक्तियाँ बुरी मजबूर हुईं,
सख़्त सर्जिकल स्ट्राइक से, पाक चौकियां धूर हुईं,
मुक्त हुईं मुस्लिम महिलाएं ट्रिपल तलाक-हलाला से-
और राम मंदिर बनने की... हर बाधाएं दूर हुईं,
खुशनसीब हूँ जो मैंने सन्-दोहजार-उन्निस देखा-
जिस में मोदी ने भारत का, किया बड़ा उद्धार।
दयानिधि अब तो लो अवतार....!

सूरज चला गया छुट्टी मैं कोहरों संग मर रहा हूँ,
बिना नहाये पाद रजाई.....में दुर्गंध भर रहा हूँ,
एक इंच का व्यासयुक्त जो बना वेन्ट है पिछवारे-
उसे सिर्फ तर्जनी-मध्यमा से मैं साफ कर रहा हूँ,
दिल्ली की इस दर्दनाक ठंडी में माह दिसंबर के-
लगता है यम देगा मेरा.....जीवनपर्चा फार।
दयानिधि अब तो लो अवतार...!

बारहसौ पैंसठ पद का संपन्न सफर इस वर्ष हुआ,
खुश हूँ कि लेखन में भी, मेरे थोड़ा उत्कर्ष हुआ,
बार-बार मैं उबर सका, प्रभु कृपा हमारे साथ रही-
भले, कठिनतम् काँटों व्यापी, राहों से संघर्ष हुआ,
यादगार लम्हें देकर, हो रहा रिटायर उन्निस ये-
सौंप रहा है आज साल ट्वेंटी को नया प्रभार।
दयानिधि अब तो लो अवतार....!

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 03 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

सुरेन्द्र कुमार महाजन 'तन्हा'

तुम सबको मुबारक हो मेरे यार नया साल।
जीवन में करे खुशियों की बौछार नया साल।।

आपस में सभी लोग रहें मिल के खुशी से।
हर एक खुशी से करे दो-चार नया साल।।

जो दिल में मुरादें हैं, वो पूरी हों सभी की।
होने नहीं दे वक्त को बेकार नया साल।।

सब दूरियाँ मिट जाएं, रहे कोई न तकरार।
जोड़े रहे सबके दिलों के तार नया साल।।

कश्ती किसी की डूबे, नहीं ऐसा कभी हो।
थामे रहे सब लोगों की पतवार नया साल।।

परिवार में माहौल हो सुख चौन का हरदम।
खुशहाल करे लोगों का घरबार नया साल।।

ष्तन्हाष यही अरदास करूँगा मैं खुदा से।
रहने दे किसी को न तलबगार नया साल।।

डॉक्टर वासिफ काजी

मुश्किलें इश्क की

तुम्हारी यादों से निकल पाना मुश्किल हो गया है।
तुम्हें यूं भूल पाना अब मुश्किल हो गया है।।

गुजरे साल में किये थे तुमने वादे ढेर सारे।
उन वादों को निभाना अब मुश्किल हो गया है।।

सोचा था बीता लूंगा तेरे आगोश में उम्र ये सारी।
तेरी पनाह में रह पाना अब मुश्किल हो गया है।।

बारिशों में भीग कर यूं ही शामें गुजरा करती थी।
उन बारिशों को ढूंढ़ पाना अब मुश्किल हो गया है।।

बहाने से ही सही तुम मेरे घर आ जाती थी अक्सर।
बहा कर अश्क तुझे बुलाना अब मुश्किल हो गया है।।

तुम्हारे बिना गुजरती ये बेवजह बेनूर जिन्दगी मेरी।
बहारों का फिर लौट आना अब मुश्किल हो गया है।।

इश्क की मीनार में दफ्न हैं कई रांझे 'काजी'।
उन मीनारों पर जश्न मनाना अब मुश्किल हो गया है।।

उमाकान्त यादव उमंग

कुछ छूट गया
वो इस कदर मुड़े की कुछ छूट गया
क्या था उस घर में जो धोखे से टूट गया।।
आंखों से छलक उठा तेज आँसू
चाहत न थी फिर भी दामन छूट गया।।
आँगन की दहलीज पे पसरा सन्नाटा
महबूब से महबूबा का दिल रूठ गया।।
चाहत है रोक लो मुझें मान लो मेरी जिद
सबनम का सीसा इतना जल्दी टूट गया।।
अब बहारों में आवाज मत देना कहते रहें
काली बदरी में था चाँद जो हमको लूट गया।।

सलामती प्रार्थना

राम प्रसाद यादव

तुम अपना
फर्ज निभाओ
और
मैं अपना
तुम्हारे हाथ
पत्थर है
मेरे हाथ
शब्दों के फूल
तुम्हारे पास बंदूक
अकूत
बारुद का जखीरा
मेरी अकेली कलम
लिखती रहेगी
सच, और
केवल सच की
सलामती प्रार्थना
तुम देवता गढ़ो
बाद फूल झरते
मेरे शब्द ले लेना
अपने उस देवता के
स्तवन के लिए
कल मेरी पेशी है
मैं क्या करूं
किस किस की
कसमें खाऊं
मेरा हाथ किसी
किताब पर नहीं है

वी.के. सिन्हा

'जिन्दगी'
बदलने के लिए
लड़ना पड़ता है..!
और आसान करने के लिए
समझना पड़ता है..!
वक्त आपका है,चाहो तो
सोना बना लो और चाहो तो
सोने में गुजार दो..
अगर कुछ अलग करना है तो
भीड़ से हटकर चलो..!
भीड़ साहस तो देती है पर
पहचान छीन लेती है...!
मंजिल ना मिले तब तक हिम्मत
मत हारो और ना ही ठहरो....
क्योंकि
पहाड़ से निकलने वाली नदियों ने
आज तक रास्ते में किसीसे नहीं
पूछा कि...
समन्दर कितना दूर है

नवगीत

प्रतीक प्रभाकर

जो बीता वो भूल जाओ
नवगीत अब गुनगुनाओ।।
आज क्या है पास में
किसके खासमखास में
उन बातों से नजर मोड़ो
खुद को न ही भरमाओ।।
प्रण करें खुद ही अब
मेहनत को बनाये रब
प्यास पाने की हो बस
भूख जीत का जगाओ।।
शुभकामनाएं अशेष मेरी
जीत में नहीं हो अब देरी
ईश्वर करें आप सबल हों
उन्नत-अद्भुत बन जाओ।।

जलते हुए अलाव...

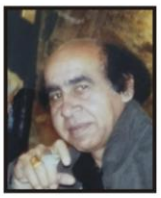

कृष्ण भारतीय

सड़कों पर सन्नाटा-
ठिठुरा गूंगा शोर।
कोहरे की चादर ओढ़े-
है गुमसुम भोर।
जलते हुए अलाव,
कांपते-
बैठे लोग,
चिपटे बैठे हुए,
तापते-
ऐंठे लोग,
भूलभाल कर सभी-
अदावत बस घर में,
गर्म रजाई में हैं घुसे-
दरोगा चोर।
तीर हवा है और,
शीत के-
चांटे हैं,
मौसम सारा घायल,
करते-
कांटे हैं,
भूख लगी है लेकिन-
बड़ी मुसीबत है,
कौन हाथ बाहर ला-
करके खाये कौरा।
गर्म चाय से खुद को,
आग-
लगाते लोग,
आ जा धूप सुनहरी,
राग-
लगाते लोग,
सुबह सबेरे रामनाम की-
धुन जपते
थर दर बजते दांतों के-
जारी हैं दौर ।

रत्ना पांडे

एक मुलाकात

जा रहा गत वर्ष, नए वर्ष से मुलाकात फिर हो गई,
बातों ही बातों में यारी दोस्ती भी दोनों में हो गई,

पूछ रहा था नववर्ष, अनुभव अपने बतलाते जाओ,
कैसे रहे इंसानों के बीच भेद, मुझे समझाते जाओ,

नया हूं ना इसीलिए जाने में, थोड़ा मैं घबरा रहा हूं,
कैसा होगा मेरा नन्हा जीवन, जानना चाह रहा हूं,

गत वर्ष बोला, यह काम है हिम्मत व सहनशक्ति का,
खट्टे मीठे और कड़वे अनुभवों को बर्दाश्त करने का,

कुछ मीठे सुनहरे पल, तुम्हारी तारीखों में छप जाएंगे,
किंतु खट्टे कड़वे प्रसंग, बदनाम भी तुम्हें कर जायेंगे,

मैंने तो ना जाने कितने, नन्हे बच्चों की चीखें सुनी हैं,
गिड़गिड़ाती हुई अबलाओं की लुटती अस्मत देखी है,

शीश कटते देख जवानों के, दिल दहल जाता था मेरा,
देख जवानों की हिम्मत, सीना चौड़ा हो जाता था मेरा,

बेटियों का चीर हरण अनजाने और बेगाने वहां करते हैं,
किंतु बेटियों का भ्रूण मरण तो उनके अपने ही करते हैं,

राजनीति का स्तर प्रतिदिन इस तरह गिरता जा रहा है,
हर राजनेता केवल कुर्सी के पीछे ही भागा जा रहा है,

इंसान इंसानियत भूल केवल स्वयं का स्वार्थ साध रहा है,
सद्भावना सौहार्द इंसान के स्वभाव से दूर होता जा रहा है,

बताने लगूंगा सब यदि मैं, वर्ष यहां पर ही बीत जाएगा,
फिर भी इंसानों का काला चिट्ठा खत्म नहीं हो पाएगा,

तुम डरो नहीं कुछ अच्छी बातें भी तुमको बतलाता हूं,
कुछ अच्छी घटनाओं का विवरण तुमको दे जाता हूं,

बेटियां बेटों की बराबरी कर हर क्षेत्र में इतिहास रच रही हैं,
और हमारी कुछ तारीखों को आदर से विभूषित कर रही हैं,

देश प्रगति की ओर धीरे-धीरे निरंतर कदम बढ़ा रहा है,
भारतवर्ष का परचम पूरी दुनिया में अब लहरा रहा है,

तुम जाओ तुम्हें तहे दिल से, अपनी शुभकामनाएं देता हूं,
जो कुछ भी मैंने सहन किया, तुम ना करो दुआएं देता हूं,

जा रहा हूं दर्द लिए, इंसानों के पापों को मैं ना खत्म कर पाया,
किंतु नहीं कसूर मेरा, भगवान भी कहां अभी तक सफल हो पाया।

अमिताभ बुधौलिया

किसी रोज आसमान गिरेंगे

तख्त गिरे तो...
ताज गिरेंगे
किसी रोज सब राज गिरेंगे
शब्द गिरे तो...
गाज गिरेंगे
मिट्टी में अल्फाज गिरेंगे
धन्य गिरे तो..
धान गिरेंगे
आम और सब धनवान गिरेंगे
सुर गिरे तो...
साज गिरेंगे
महफिल से आवाज गिरेंगे
गिद्ध गिरे तो...
कौआ गिरेंगे
धड़-धड़ सारे हौवा गिरेंगे
ख्वाब गिरे तो...
शबाब गिरेंगे
शाह और सभी नवाब गिरेंगे
कर्म गिरे तो..
धर्म गिरेंगे
दोजख में बेशर्म गिरेंगे
सूर्य गिरा तो..
आसमान गिरेंगे...
किसी रोज इंसान गिरेंगे

सोमेश त्रिवेदी

जहनी आंख के अंधे लोग

दौड़ पड़े हैं पत्थर लेकर
जहनी आंख के अंधे लोग,
जिनके सहारे दगती बंदूकें
बने हैं वैसे कंधे लोग।

हाथों में लिये मशाल खड़े हैं
कुछ हाथों में खंजर हैं,
दीन को अपने उपजा खतरा
झूठे डर के मंजर हैं।
तन गोरा मन काला जिनका,
बनते खुदा के बंदे लोग।

सन्नाटे का शोर सुनो तुम
चाहो तो कुछ और सुनो तुम,
तुमने भी पूजा होगा बुत कोई
था ऐसा कोई दौर सुनो तुम।

ईमान की कसमें खाते जी भर
करते हैं गोरख धंधे लोग,
दौड़ पड़े हैं पत्थर लेकर
जहनी आंख के अंधे लोग।

'जन्मदिन तुम्हारा'

रेशमा त्रिपाठी

''जन्मदिन हैं तुम्हारा, यह मेरा पैगाम हैं तुमको
जीना जिंदगी अपनी, सब कुछ भूल कर के तुम।
अपने अरमानों को पूरा करना, हौंसलों से तुम
सब कुछ भूल करके, एक नई शुरुआत करना तुम।
अनुभव के ज्ञान से, निष्कर्ष पर पहुँचना तुम
जिन्दगी का हर एहसास अपनी दृष्टि/दृष्टिकोण से देखना तुम।
ओंस की बूंदों के जैसें, तुम ही गिरना, तुम संभालना,
अपनी ही चेतना से तुम सब कुछ भूल कर के एक नई शुरुआत करना तुम।
अब तक जो बितायी जिन्दगी, उसे याद रखना तुम
किन्तु खुद को मत मिटाना, यह सदैव याद रखना तुम।
किसी के यादों में,बातों में, नजरों में, अब उठने की कोशिश मत करना तुम
छोड़ दो रूठना, मनाना, जताना, अग्नि परीक्षा देना तुम।
जिन्दगी एक सफर हैं,अब किसी के लिए रुकना नहीं तुम
सब कुछ भूल कर, एक नई शुरुआत करना तुम।
जन्मदिन तुम्हारा हैं यह मेरा पैंगाम हैं तुमको
जीना जिन्दगी अपनी, सब कुछ भूल कर के तुम।।

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 04 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

सफलता की अनुभूति

राजीव रंजन शुक्ल

उम्र के हर पड़ाव मे
सफलता के भाव मे
बदलते है पैमाने
शायद हम सब यह माने
शिशु से वृद्ध होने तक
जीवन की शुरूआत से अंत तक
सफलता की अलग अलग है अनुभूति
इसकी बदलती है प्रकृति
है प्रश्न भारी
बन गए हम यदि इंजीनियर, डॉक्टर या कोई अधिकारी
तो क्या हमे मिल गयी सफलता सारी
हो जाए प्रसिद्ध नेता या अभिनेता
तो सचमुच लगता है यह बड़ी सफलता
फिर भी सोचो क्या यही है सफलता
प्रत्येक उम्र मे यह नई है
सफलता के मर्म कई है॥

दंतुरित मुस्कान लिए
माँ की गोद से शिशु जब जमी पर रेंगता
यह उसकी सबसे बड़ी सफलता
घुटने और हाथ पर चलता हुआ शिशु
जब जीवन मे चलता है पहला कदम
खुशी से झूम उठते है हम
तो लगता उसके साथ-साथ सफल हो गए हम
बोलता है जब यही शिशु पहली बार अपनी ही भाषा
उस समय यही है उसकी सफलता की सबसे बड़ी परिभाषा
शैशव से जब बाल-काल है आता
सफलता का मंर्म है बदल जाता
करने लगता है स्वयं जब अपने दैनिक कर्म
सफलता का है यह एक और मर्म॥

बाल-काल जब हुआ खत्म
युवा ऊर्जा का हुआ जन्म
अपने अपने क्षेत्र मे उसने जब किया नाम
सफलता का यही पैगाम
मिले एक अच्छा जीवन साथी
बच्चे हो सुशील, सभ्य और अच्छे विद्यार्थी
सब अच्छा हो जाने की होती है आशा
तो लगता है सफलता की यही है परिभाषा॥

आशा निराशा के हिचकोले खाते
सांसरिक जिम्मेदारीयो को निभाते निभाते
वृद्ध अवस्था मे जब हम आते
तब हो जाता है रोगों से ग्रसित शरीर
भागने लगती है तब अपने ही लोगों की भीड़
शरीर का गठिया, ब्लड प्रेसर और मधुमेह
जीवन से नहीं रहने देता नेह
आँख, कान भी छोड़ देते साथ
चलते नहीं पैर और हाथ
शरीर मे नहीं रही शक्ति,
जा चुकी होती स्मरणशक्ति
शिशु के जैसे हो जाती प्रकृति
सफलता का मर्म फिर हो गया समान
स्वयं से कुछ कर पाना फिर न रहा आसान
जैसे शिशु को चाहिए माँ बाप का हाथ
वैसे ही बुजुर्गों को चाहिए अब बच्चों का ही साथ
यदि वह स्वयं अपनी दैनिक क्रिया कर लेता
तब पुनः है एक बड़ी सफलता
माना की बच्चे है हमारी आश
लेकिन बुजुर्ग और वृद्ध तो हमारे है खास
हमारे बुजुर्गों का हम पर बना रहे विश्वास
ईश्वर से यही है विनती
बुजुर्गों के अनुभव और आशीर्वाद देती रहे सदा हमे शक्ति
सफलता की यही है शायद सच्ची अनुभूति॥

शिवानन्द सिंह
'सहयोगी'

यह न होगा

ऐ! हवाओ!! यह बताओ!!!
आजकल हम, नये युग में,
किस दिशा में बह रहे हैं?
मानते हैं,
सत्य को स्वीकारना तो,
कष्टदायी, जटिल भी है,
है अचंभा,
झूठ सुनकर, कुछ न कहना,
नहीं नैतिक, कुटिल भी है,
इसलिये इस बात को हम,
जोर देकर, तन्मयी हो,
निडर होकर कह रहे हैं..
बंद करके,
यह लिफाफा, आज मन की,
कोठरी में रख रहे हैं,
याद रखना,
आतमा जो, कह रही है,
भाव वे सब, लख रहे हैं,
समय सब कुछ, स्वयं ही पट,
खोल देगा, कुछ दिनों में,
कल, कहाँ अब रह रहे हैं?
लेखनी चुप,
रह सकेगी, यह न होगा
एक नस में, हुक रहेगी,
यह लहर जो,
द्वेष की अब, चल रही है,
वेदना की, तुक रहेगी,
संशयों में शब्द होंगे,
अल्प होगा ओम् का स्वर,
अर्थ यह ही तह रहे हैं।

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

राजू उपाध्याय

एक भगीरथ...!

वो
गीत गंगा का,
एक भगीरथ
चला गया..!
वो था
आंसुओं का,
एक तीरथ ,
चला गया..!
वाणी के
आंचल में
छंदों को मीत
बना कर,
वो
प्रेम रीत की
सुन्दर मूरत,
चला गया..!
जन पीड़ा
को उसने
गीत बना कर गाया,
वो
जन-मन-गण की
कीरत,
चला गया..!
क्षितिज के
उस पार भी
वो गीत
गुनगुनायेगा ,
वो
अदब-ए-हिन्द की
एक सूरत
चला गया..!
गीत
छंद की
सूनी महफिल
अक्सर याद करेंगी,
वो
हिंदी के
दरबारों का
मुहूरत,
चला गया..!

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

अपेक्षा व्यास

ग़ज़ल

गजल गुनगुनायें नये साल में सब!
नई धुन सजायें नये साल में सब!!

चुका अब उन्नीस ये वर्ष सुनो तो,
मिलन गीत गायें नये साल में सब!!

सभी बंदगी से दिलों को मिलाकर,
हँसे मुस्कुरायें नये साल में सब!!

अमन चैन कायम रहे अब धरा पे,
अलख इक जगायें नये साल में सब!!

दुआ है हमारी रहे खुश सभी ही,
नई प्रीत पायें नये साल में सब!!

डॉ. आशु जैन

सड़कों पे चलते
दूरियों को नापते
लम्बाई को जाँचते
हम चल रहे है
नए सफर पे
निकल रहे हैं
आसमान की ऊँचाई
समुद्र की गहराई
को मापने हम
मचल रहे हैं
हम नए सफर पे
निकल रहे हैं।
देखने को चाँद
छूने पूरा आसमान
धरती पर हम जोर से
उछल रहे हैं
हम नए सफर पे
निकल रहे हैं।
बेड़ियो को तोड़ेंगे
बेटियों को जोड़ेंगे
बंधनों को पैरों तले
कुचल रहे हैं
हम नए सफर पे
निकल रहे हैं।

कुँवर उदय

सोच में और मौज में बस,
एक कदम का फासला है,
सोच में कोई इधर है,
मौज में कोई उधर।
सच बता तू है किधर?
सोच के सर, पैर रखकर,
जा सके जा मौज के घर,
एक कदम का फासला बस,
तू इधर के, तू उधर।
सच बता तू है किधर?
सोच की भी खूंटियां हैं,
जो तेरी ठोकी हुई हैं,
जांचना अटका ना हो खुद,
सोच की खूंटी में बंधकर।
सच बता तू है किधर?
मौज जैसी मौज हो तो,
एक पल ना देर कर,
हां मगर कुछ सोच कर,
मौज आती हो जिधर।
सच बता तू है किधर?
अपनी ही सोचो में आपस,
कुछ नहीं इकसार है,
मौज खोजे किस कदर?
जो हो खुद से बेखबर।
सच बता तू है किधर?
मौज में और सोच में बस,
सोच की ही बात है,
तो बनालो सोच अपनी,
मौज अपनी सोच कर।
सच बता तू है किधर?
जिंदगी डूबी रही ताउम्र ही
बेहोश सी,
सोच का सागर है गहरा,
डूबने की जिद ना कर।
सच बता तू है किधर?
जिद करे तो मौज की कर,
वो भी अपने आप से,
सोचने की बात है बस,
सोचले कुछ सोच कर।
सच बता तू है किधर?
सोच वो जो, सोच पाया ही
नहीं है, तू अभी तक,
सोच जिसमें हो असर,
सोच वो जो कारगर।
सच बता तू है किधर?
सोच में और मौज में बस,
सोचभर का फासला है,
सोच में गर मौज हो तो,
मौज में फिर हो बसर,
सच बता तू है किधर?
सोच सकते हैं जिसे,
सोचा नहीं है आजतक,
किस तरह का मुंतजिर है?
वक्त रहते होश कर,
सच बता तू है किधर?
सोच वो, जो ना सजा हो,
सोच वो, जो हां मजा हो,
होश में चलते चलो फिर,
मौज अपनी थाम कर,
सच बता तू है किधर?

सीमा शिवहरे सुमन

न चलो भेड़ों की चाल सदा
वो राह चुनो जो खाली है !
इच्छा शक्ति को दृढ़ करलो
बंजर में उगेगी बाली है !!

डरोगे अंधेरों से जो सदा
तो मंजिल कैसे पाओगे...
पीछे-पीछे हि चलते रहे
तो आगे कैसे आओगे..
जल जाय मेहनत-दीप जहां
जंगल में भी दीवाली है!

न चलो भेड़ों की चाल सदा
वो राह चुनो जो खाली है!!

मिलेगी कटीली झाड़ी भी
कांटे भी चुभेंगे पांव में..
मंजिल से पहले बैठना न
थककर राही कभी छांव में..
मेहनत से ही मिलती मणियां
बजे दो हाथों से ताली है!

न चलो भेड़ों की चाल सदा
वो राह चुनो जो खाली है!!

तकते हैं रेतीले टीले
हमें कौन ढूंढने आएगा...
जिसको भाय हैं सरल राहें
वो जल स्त्रोतों पर जाएगा...
गाड़ोगे पानी में झंडे
गलत फहमियां क्यों पाली है!

न चलो भेड़ों की चाल सदा
वो राह चुनो जो खाली है!!

पथ

सदैव एकाकी,
सहृय सहृय करता,
सन्नाटों भरा,
रहता सीधा पथ।
लहुलुहान पग,
विपन्न जीवन,
अपना-पराया,
छोड़ता साया,
गहन तम में,
पहचाने कौन?

कर एकाग्रचित
बस धूनी रमा,
आगे बढ़ चल,
लड़ी गीत की,
गुनगुनाता चल।
सोच मत होगा,
क्या कुछ कल।
दूर है हरीतिमा,
इसी पथ पर कहीं,
तू अपने धुन में,
बस बढ़ता चल।
प्रारब्ध देगा जो,
मिल जायेगा ही,
कुछ पा ले स्वयं,
हौसलों से तुम।
सीधी राह तू,
चलता चल।
बस पथिक तू,
आगे बढ़ता चल,
अपने धुन में,
आगे चलता चल।

पूनम
(कतरियार)

अर्चना लाल

आशाओं का दीप जला कर,
मन्नत मांगी रोज।
पर बाधाओं का साथ रहा,
हाँ थी सुख की खोज।।
अब अरमानों को बांध रही,
लेकर मन में आस।
जीवन के सभी मोड़ पर वह,
भरे सुखद अहसास।।
निशदिन पूजूँ अरु जाप करूँ,
मन में इक उम्मीद।
बदली में जो तू चाँद छुपा,
दिख जाना इस ईद।।
हर धड़कन पर है नाम सखे,
दूर रहो या पास।
बंधन है जब यही प्यार का,
सुन लो तुम हो खास।।

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 05 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अशोक जमनानी

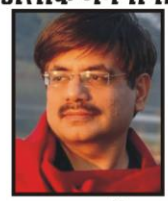

आदमखोर

इस जंगल में
आदमखोर हो गए हैं
गीदड़
गुजरना है जंगल से
तो साथ रखो
मशालें
मिलाते रहो
आवाज से आवाज
बने रहो सच में जिंदा
आदमखोर हैं मगर
उन्हें चाहिए लाशें
गीदड़ डरते हैं
मशालों से
आवाजों से
जिंदा लोगों से
आदमखोर हुए तो क्या
गीदड़ ही तो हैं आखिर
गीदड़ हरामखोर !

राजेश 'प्रखर'

ग़ज़ल

रह गए हम ठगे बात ही बात में।
नैन उनसे मिले बात ही बात में।
तुम मिले तीरगी खुदबखुद मिट गयी,
दीप भी जल उठे बात ही बात में।
मंजिलें एक दूजे में दिखने लगीं,
कुछ कदम जब चले बात ही बात में।
इश्क का है असर वो सँवरने लगे,
आईना देखते बात ही बात में।
एक मुद्दत से जिनको तलाशा किये,
उनके निकले पते बात ही बात में।
मयकशी में बहक इस तरह वो गए,
राज सारे खुले बात ही बात में।
बात ऐसी चली, बात बढ़ने लगी,
हो गए फासले बात ही बात में।
हो गयी है गजल फिर मुकम्मल प्रखर,
शेर बन कुछ गए बात ही बात में।

दीपशिखा 'सागर'

ग़ज़ल

तेरी चाहत के सदके हो रहे हैं।
गमों के रोज जलसे हो रहे हैं।
पिया है जह्र क्या अहसास ने जो,
गजल के हर्फ नीले हो रहे हैं।
तेरी यादों का सिक्का चल गया है,
मेरे सब शेर अच्छे हो रहे हैं।
कोई चुटकी जरा काटो तो यारों,
वो कहते हैं श्तुम्हारे हो रहे हैंश।
सियासत और इसमें नेकनीयत,
फकत रिश्तों के सौदे हो रहे हैं।
नहीं कोई हसद, शिकवा किसी से,
तो क्या हम भी फरिश्ते हो रहे हैं।
किसी के ख़्वाब का ये जायका है,
मेरे सब अश्क मीठे हो रहे हैं।
मेरी यादों के उजले आइने में,
तेरे सब अक्स धुँधले हो रहे हैं।
तेरी खुश्बू का मौसम रूह में है,
बड़े दिलकश नजारे हो रहे हैं।
मेरी आँखों जरा आँसूँ समेटो,
कि देखो ख़्वाब गीले हो रहे हैं।
खिजां की सरपरस्ती में 'शिखा' अब,
गुलों के हाथ पीले हो रहे हैं।

ज्योति खरे

अपराधियों की दादागिरी
साजिशों का दरबार
वक्त थमता तो बताता
जुर्म की क्या रफ्तार..
बेगुनाही का नमूना
ढूंढ कर हम क्या करेंगें
सत्य की गर्दन कटी है
झूठ के हाँथों तलवार..
न्याय चौखट पर तुम्हारे
देर से सहमी सी खड़ी है
सिसकियाँ सच बोलती हैं
बिक गये सब हवलदार..
बैठ गये यह सोचकर
पेट भर भोजन करेंगे
छेद वाली पत्तलों का
दुष्ट जैसा व्यवहार..
मरने लगी इंसानियत
कीटनाशक गोलियां से
संवेदना की धार धीमी
सूख रहा धुआंधार..
चुप्पियों की उम्र क्या है
एक दिन विद्रोह होगा
आग धीमी जल रही
बस भड़कने का इंतजार..

अजय श्रीवास्तव

ग़ज़ल

दिल के जज़्बात को खुद के ही हवाले रखिये
जख़्म हों लाख मगर होठों पे... ताले रखिये
वक़्त आएगा कभी आपकी जानिब चल कर
शोला ए दिल को तसल्ली से... सँभाले रखिये
उम्र गुजरेगी तो तन्हाई... चली आएगी
घर की अलमारी में कुछ एक... रिसाले रखिये
जह्रे दिल में जो समा जाएँ रगे खूं... की तरह
जख्म ऐसे भी हिफाजात से... पाले रखिये
लोग तो लोग हैं भड़काने पे लड़... जाते हैं
मजहबी मुद्दे सियासत में... उछाले रखिये
ऐश लाजिम है खुदा बख़्श दे... इफरात मगर
हक में मुफलिस के भी दो चार निवाले रखिये
वक़्त पड़ने पे जो काम आये... वही अपना है
चंद अहबाब सही दिल के न... काले रखिये

गुलशन प्रेम

एतबार

काश तुम तक पहुँच पाता
और तुम्हारी रूह को छू पाता
मुझे पता है यह छली गयी है कई बार,,,
जख्मी है यह कई जगहों से,,
अब तुम्हे किसी पर ऐतबार नहीं है,,,
पर मुझे न जाने क्यों तुम्हारी आँखों में,,
अब भी आशा सी दिखती है,,,,
प्यार दिखता है,,
या कहूँ इंतजार दिखता है,,,
इस दुनिया मे अभी भी अच्छा होने का,,,,
काश तुम मेरे मन को मेरे
बिना कहे पढ़ पाओ,,,,
समझ पाओ क्या है
मेरे मन में,,,तुम्हारे लिए,,,,
कितना मुश्किल है,,
अपने बारे में दूसरों को समझाना,,,
अपनी सोच को,,व्यक्त करना,,
ये बताना कि कैसा हूँ मैं,,,,
मेरी क्या भावनाएँ हैं तुम्हारे लिए,,,,
मैं क्या सोचता हूँ तुम्हारे लिए,,
क्यों मैं तुमसे जुड़ा हुआ हूँ,,
क्यों तुम मुझे खुद सी लगती हो,,,
तुम कुछ दूर तक मेरे साथ चलकर तो देखो,,,,,
शायद ,,,,
तुम्हें यकीं हो जाए
मुझ पर और
मेरी वफा पर,,,
बोलो ना चलोगी मेरे साथ,,,
मेरी हमसफर बन कर,,,!

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

डॉ रुचि चतुर्वेदी

ओ युवा प्रहरी तुम्हें जगना ही होगा।

हो तुम्हीं पहचान भारत देश की,
भूलकर भी भूल कोई कर न देना।
भारती माँ की चुनरिया में कहीं तुम,
रंग दूषित भाव वाले भर न देना।।
किस धरातल के रसातल में चले हो,
आसमां धारण किए उठना ही होगा।।
ओ युवा प्रहरी तुम्हें जगना ही होगा।
लेखनी को छोड़कर पत्थर उठाये,
क्या कभी सोचा हवाएं क्या कहेंगी?
पूजते हो जिनको उन पर रक्त है क्यूँ,
क्या कभी सोचा शिलाएँ क्या कहेंगी?
विश्व में हम श्रेष्ठ बनने को चले हैं,
इस जरूरी कार्य पर चलना ही होगा।
ओ युवा प्रहरी तुम्हें जगना ही होगा।
सो रहे हो आज निद्रा में अहं की,
तोड़कर नफरत के बंधन जाग जाओ।
आग सीने में जली उसको बुझाओ,
सर्वसुख के भाव का दीपक जलाओ।
भारती माँ का नवल शृंगार कर दो,
दिव्य चंदन माथ पर सजना ही होगा।
ओ युवा प्रहरी तुम्हें जगना ही होगा।

प्रीति कर्ण

दाह!

ऐसा उसने भी सोचा नहीं था
उसकी प्रकृति है शीतलता
किंतु
अति विश्वास अपनी क्षमता
अलोपित कर देती!
हृदय के ज्वार सी दाह में
दो मधुर बूंद सदृश शब्द
वाष्प बन
उड़ जाते हैं
अंतस राख
कर देती है पल में
बूंद केअस्तित्व...
सिकी हुई रोटियों की थकन
उतारती
कोने में सुस्ता रही
जले हुए तवे पर
छन्न से रह गयी बूंदें
फफोले उग आये पानी की देह पर!

बलविंदर भनोत

मेरे कमरे की वो खाली कुर्सी

मेरे कमरे की वो दो कुर्सियां
नदी के दो किनारे
दिवारों से चिपकी
आमने-सामने बैठी रहती
अजनबियों की तरह
एक दिन कोई आया
मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठा
फिर कुर्सियों ने दीवार का सहारा छोड़ दिया
नजदीक से नजदीकतर और नजदीकतम
हो गई
पैर फिर हाथ और एक दिन तो
मिल गये होंठ
पैरों से पैरों की छुअन
कभी कभार घर का नौकर
कोई आगुंतक
या शाम का सूरज छीन लेता
बांह पकड़कर अगली सुबह वे फिर पास आ जाती
सूरज खिड़की से झांकता ज्यादा सुंदर लगता
कभी पार्क में बैठ जाती
जैसे पत्थरों के पंख आ गये
एक दिन!
मेरे सामने वाली कुर्सी मूंह मोड़ कर बैठ गयी
उसे फरमान था
एक महंगी कुर्सी पर बैठने का
एक बार तो दोनों कुर्सियों की जान निकल गयी
सात समंदर पार पिंजरे में रखे तोते
की जैसे किसी ने गर्दन मरोड़ दी
जिसमें थे उनके सब कल के सपने
मेरे सामने वाली कुर्सी खामोश
मैं एक कुर्सी पर बैठा रहता
पर बोझ सामने वाली महसूस करती
टुकर टुकर तकती
जैसे थक गयी हो
फिर वह दीवार का सहारा लेने लगी
मेरे कमरे की वो कुर्सी अब खामोश रहती है
दीवार में किसी ईंट की तरह
चिन दी गयी
दुसरी कुर्सी जिस पर मैं बैठता
बुढ़ापे के कारण अब कमजोर हो गई
राह तकते, आंसू बहाते
आंखों के दरवाजे बंद से हो गये।

कोमल वाणी

सत्य

जब जब तोड़ती हूँ
मेरी जुबां पे रखे मौन को।
बिखरने लगता है तब तब
खुशियों से भरा घरौंदा।
रिश्ते कुछ सुलझे अनसुलझे
जिन्हें रखा सदा अस्तित्व से ऊपर
दिया मान खुद से बढ़कर
पिरोया उनकी ख्वाहिशों के मनकों को
मेरे मौन की माला में।
ओर दबाती गयी अपनी अधूरी खवाहिशो को।
छोड़ जाते हैं वही बीच सफर मुझे
हाँ! वही अपने मेरे,
छोड़ जाते हैं बीच सफर
जब चाह लगा देते हैं ठोकर मेरे सम्मान को।
आखिर कब तक रहती मौन मैं
कब तक न खोलती ये जुबां अपनी
जिसे सिल चुकी थी मैं रिश्तों के धागे से।
आज भर गया जब अंतर्मन
पीड़ा हो गयी असहाय मेरी
लाख कोशिशों के बाद भी
निकल गयी चीख कुछ इस तरह मेरी
कि समेटने से भी न सिमटी
मेरी मौन से टूटी रिश्तों की माला।

सुमित अग्रवाल

सुप्रभात

सुबह भोर का तारा डूबा,
स्वर्णिम सी रश्मि छाई।
रात ठिठुरती बिदा हो चली,
नव जन्मा सुबह आई।
पूर्वांचल के रक्त कमल ने,
आभा अपनी फैलाई।
नभचर नभ में इत उत विचरें,
मधुर बजातें शहनाई।
शीतल मंद पवन है बहती,
तरु लेते है अंगड़ाई।
सुंदर सुंदर पुष्प खिल उठे,
प्रकृति निज मन हर्षाई।
है मानव! अब निद्रा त्यागों,
अपने प्रभु का ध्यान करो।
कर्म के पथ का आवाहन है,
चल के युग निर्माण करो।

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 06 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

जिंदगी और कुछ भी नहीं, तेरी-मेरी कहानी है

मुकेश दुबे

मुम्बई के छत्रपति शिवाजी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे के लाउंज में बैठा उदयन ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट का समय होने का इंतजार कर रहा था। अभी तो पूरे २ घंटे बाकी हैं। कल शाम लंदन में उसे भारतीय संगीत की शैलियों में नोड की विविधता पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया है।

आते-जाते लोगों के रेले उसे अकेलेपन के अहसास से परे चेहरों के अलग अलग अंदाज दिखाकर व्यस्त रख रहे थे।

एक चेहरा देखकर उसकी सारी सुस्ती काफूर हो गई। इतने सालों बाद शर्मिष्ठा को देखना किसी अचम्भे से कम नहीं था। उसकी आँखें मगर धोखा नहीं खा सकती हैं। चश्मा लग गया है मगर आँखें तो वही हैं। वजन में भी इजाफा हुआ है लेकिन व्यक्तित्व आज भी प्रभावशाली है।

भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय में सुगम संगीत से एम. ए. कर रही थी वो जब उदयन अपनी पी. एच. डी. की थीसिस लिख रहा था।

मुक्ताकाश मंच पर आयोजित एक कार्यक्रम में फिल्मी गीतों में शास्त्रीय संगीत के प्रयोग पर आधारित था वो आयोजन। फिल्म शोर की एक बंदिश "एक प्यार का नगमा है, मौजों की रवानी है। जिंदगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है," को वायलिन पर कुछ पीस में पेश किया था उदयन ने। बोल को स्वर शर्मिष्ठा दे रही थी।

लय-ताल मिलने लगी थी और जुगलबंदी प्रगाढ़ दोस्ती में तब्दील होती रही।

शर्मिष्ठा ने एक बार बताया था, उसकी सगाई काफी पहले हो चुकी है। उसका होने वाला पति आईआईटी से बी.टेक कर रहा है।

उदयन अक्सर छेड़ता था, बेचारे इंजीनियर साहब की खैर नहीं। संगीतकार बीबी के साथ तानपूरा उठाकर चलेंगे कभी हारमोनियम का धम्मन रिपेयर करेंगे।

उन्हीं दिनों नेपाल का संगीत दल भारत आया था। विश्वविद्यालय के अंतर्ज्ञान अर्जन कार्यक्रम के तहत एक भारतीय दल नेपाल जाना था। उसमें उदयन व शर्मिष्ठा को भी चयनित किया गया था।

सुनकर शर्मिष्ठा खुश होने की जगह बुझ सी गई थी। वजह जानकर हैरानी हुई थी उदयन को। अभी उसका और मनीष का विवाह नहीं हुआ था किन्तु उसकी जिंदगी के अधिकांश फैसले वही करता था।

शर्मिष्ठा के नेपाल जाने की इजाजत पर भी उसकी स्वीकृति आवश्यक थी। वो टेलीफोनिक वार्ता आज भी याद है उसे।

"अकेली लड़की इतनी दूर जाये यह तो ठीक नहीं।"

"जी आठ लोगों का दल रहेगा, अकेली नहीं रहेगी शर्मिष्ठा।" उदयन की दलील को सिरे से खारिज कर दिया था मनीष ने यह कहकर कि इस उम्र में ऐसे दल किस बल के आकर्षण में काम करते हैं, जानता हूँ मैं। वैसे भी संगीत में उसकी रुचि देखकर वहाँ से पीजी की इजाजत है उसे। शादी के बाद स्टेज शो नहीं करने हैं।

आगे कुछ भी कहने की जरूरत नहीं रही थी न ही हिम्मत शेष थी उदयन के पास। रिसीवर शर्मिष्ठा की तरफ बढ़ा दिया था उसने।

आज शर्मिष्ठा को यहाँ अकेला देखकर हैरानी हुई। शायद मनीष भी साथ होगा।

उसका विचार आते ही मन फीका हो गया उदयन का। उससे बात करके इतना तो जान गया था वो किस सोच का बंदा है। अकेले में शर्मिष्ठा से मिलना उसे पसन्द नहीं आयेगा। वो अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

कुछ देर बाद शर्मिष्ठा की नजर पड़ गई उदयन पर। कॉफी शॉप के करीब बैठा था वो। शायद एक प्याला कॉफी की तलब जागी थी और वो इस तरफ आ रही थी.....

"उदयन! आप यहाँ? इतने दिनों बाद आपसे मुलाकात होगी मैंने सोचा भी न था।"

"कुछ बातें हमारी सोच के दायरे से बाहर हो जाती हैं।" हैं न?

"शायद यही सच है। कहीं जा रहे हैं या लौटे हैं आप?"

"लंदन जा रहा हूँ २:१५ की फ्लाइट से। और तुम?"

"मैं भी लंदन ही जा रही हूँ। मेरी फ्लाइट २:४५ पर है।"

"ओह्ह। मनीष जी के साथ ही जा रही होगी।"

शर्मिष्ठा समझ गई थी उसके प्रश्न में छुपे ताने को। मुस्कुराहट बिखर गई उसके चेहरे पर। नहीं उदयन जी। अकेले ही जा रही हूँ। उसने घड़ी पर नजर डाली। डेढ़ घंटे से अधिक समय था २:१५ वाली फ्लाइट में। उदयन से पूछा उसने कॉफी के लिए।

दोनों कॉफी शॉप की तरफ बढ़ गये। शर्मिष्ठा का इस तरह अकेला दस घंटे का सफर करके लंदन जाना उदयन को न जाने क्या क्या सोचने पर मजबूर कर रहा था। शायद मनीष लंदन में हो और उसी के पास जा रही है वो। तसल्ली दी उसने खुद को। दो कप कॉफी लेकर वो वापस कुर्सी पर बैठ गये।

कॉफी का घूँट भरकर शर्मिष्ठा ने उदयन की तरफ देखा। वो जानती थी इस वक्त उसके दिमाग में जो चल रहा है।

'आप यही सोच रहे हैं न जिस लड़की को ग्रुप में शामिल होकर नेपाल जाने की इजाजत नहीं मिली थी वो आज अकेली इतनी दूर कैसे जा रही है?'

'सही है तुम्हारा अंदाजा। उस दिन मनीष जी के कहे शब्द भूल न सका मैं कभी।'

'भूली तो मैं भी नहीं हूँ कुछ भी। न शब्द न वो शक... जानते हैं जिस शख्स ने कभी बैंक या बाजार अकेले नहीं जाने दिया, जिसे हर वक्त यही डर लगा रहा कि कोई उसकी गैर-मौजूदगी में मुझसे बात न कर ले या... आज कितना मजबूर हो गया होगा कि खुद छोड़कर गया अहमदाबाद एयरपोर्ट पर।'

'क्या मजबूरी है मनीष जी की ऐसी?' उदयन की आवाज में अभी भी आश्चर्य झलक रहा था।

'दौलत की चाहत...' अमीर से ज्यादा अमीर होने की ख्वाहिश। अच्छी नौकरी थी। पैसे की कोई कमी नहीं थी। हर वो चीज जिसकी आरजू कर सकता है इंसान और बाजार से खरीद कर ला सकता है, हमारे पास है।

मैंने समझौता तो उसी दिन कर लिया था अपनी ख्वाहिशों व अरमानों से जिस दिन सात फेरे लिए थे मनीष के साथ। खुश भी रहने लगी थी अपनी जिंदगी से क्योंकि बच्चों की खुशी व परिवार की शांति को ही जीवन मान लिया था। भूल गई थी सुर और सरगम को।

मनीष की छोटी सोच की दहलीज के बाहर कदम नहीं रखा कभी।

ठंडी हो चुकी कॉफी को एक बार में कंठ से उतारकर उसने उदयन के हाथ से खाली कप लिया और डस्टबिन के हवाले कर दिया।

उदयन देख रहा था उसके चेहरे पर इस समय आक्रोश नहीं आत्मविश्वास था। डिस्पोजेबल कप के साथ जैसे अपने अन्दर की कड़वाहट व

पुरानी बातों को भी फेंक आई थी वो।

उदयन ने उसकी आँखों में देखते हुए पूछा 'फिर क्या हुआ?'

'मनीष ने नौकरी से इस्तीफा देकर लंदन में अपनी फर्म बनाई। अपने वीजा के हिसाब से एक महीना लगा कर भारत आये कि अब बाकी की खानापूर्ति करके फिर से १५ दिन बाद वापिस विदेश जाएंगे।पर हुआ यह कि ३ महीने के वीजा की अवधि में ३० दिन रहने का ही प्रावधान था और वो इससे अनभिज्ञ थे।अतः अब इन ३ महीनों की अवधि के बाद दुबारा वीजा अप्पलाई करेंगे तब जनवरी के अंत में जा पाएंगे ।

फिलहाल कोई और ऑप्शन था नहीं और वहाँ नए काम के हिसाब से जाना भी आवश्यक था तो मेरी तमाम बन्दिशें और कानून जो बनाये थे एक पति ने, कच्ची दीवार से ढह गये। कितनी मिन्नतें कीं, दलीलें दी एक पत्नी के पति के साथ कांधे से कांधा मिलाकर चलने की....

मैंने कहा भी कि वर्षों से पिंजरे में कैद परिन्दे को उड़ने के लिए बस आसमान काफी नहीं। पंखों में परवाज भी चाहिए, हौसला चाहिए....

हारे जुआरी की तरह बोले मैं जानता हूँ मैंने तुम्हारे साथ जो किया वो गलत था। मगर उसके पीछे भी मेरी मुहब्बत थी। डर था तुम्हें खो न दूँ।

'फिर आज वो मुहब्बत नहीं रही या मुझसे पीछा छुड़ाना चाह रहे हो?'

सच तो यह है मैं सोच रही थी कह दूँ 'नहीं मनीष। अपनी अवसरवादिता को इश्क मत कहो। उस वक्त भी तुम स्वार्थी थे, आज भी हो और ताउम्र रहोगे। आज जब जीवन भर की कमाई दांव पर लगी है तब तुम युधिष्ठिर बन गये हो। अपनी पत्नी को दांव पर लगा दिया है तुमने... मगर कह न सकी। किसी के छोटे पन के सामने अपनी परवरिश व संस्कारों को तिलांजलि नहीं दी गई मुझसे।'

आप ही बताइये उदयन जी। मेरा फैसला सही है या गलत?

उदयन ने जेब से रुमाल निकालकर शर्मिष्ठा की भीगी आँखों की नमी को जज्ब करते हुए कहा 'तुमने कोई गलती नहीं की है शर्मिष्ठा। जिसने परिवार व पति के लिए अपनी हर खुशी होम कर दी, उसका कोई फैसला कभी गलत नहीं हो सकता है। आज तुम्हारा कद और इज्जत पहले से बढ़ गई है मेरे दिल में।

ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट के शीघ्र रवाना होने का अनाउंसमेंट होने लगा था।

उदयन ने मोबाइल ऑन कर एक क्लिप दिखाई शर्मिष्ठा को-

'कुछ पाकर खोना है
कुछ खोकर पाना है
जीवन का मतलब तो
आना और जाना है
दो पल के जीवन से
इक उम्र चुरानी है'
जिंदगी और कुछ भी नहीं,
तेरी मेरी कहानी है...

शर्मिष्ठा की आँखों में मोती झिलमिला रहे थे और होठों पर मुस्कान थिरक रही थी।

उदयन हाथ हिलाते हुए दूर जा रहा था और वो अपने नजदीक लौट रही थी।

चंद्रप्रभा सूद

फूल और शूल

फूल और शूल दोनों एक साथ, एक ही पौधे पर जन्म लेते हैं। हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि कभी-कभी अपने ही सहोदर (साथ जन्मे) काँटों के द्वारा गुलाब का फूल छलनी-छलनी कर दिया जाता है। उस समय की परिकल्पना कीजिए कि उस कोमल फूल को कितनी पीड़ा यह सोचकर होती होगी कि अपनों के द्वारा ऐसा दारुण दुख दिया गया है।

इसी प्रकार मनुष्य को जब अपने ही सगे भाई-बहनों अथवा मित्र-सम्बन्धियों के द्वारा जब मर्मान्तक पीड़ा पहुँचाई जाती है तब उसकी स्थिति कितनी विचित्र हो जाती है। वह मन से पूरी तरह टूटने लगता है। जिन कन्धों का सहारा उसे हमेशा दुखों-परेशानियों में मिलना चाहिए था वही कन्धे उसे झटककर इस दुनिया में निपट अकेला छोड़ रहे हैं और लहुलूहान करने के लिए तैयार हो रहे हैं।

हमारी भारतीय सस्कृति में पुनर्जन्म व कर्मसिद्धान्त को बहुत मान्यता दी जाती है। इसके अनुसार मनुष्य को अपने पूर्वजन्म कृत कर्मों के अनुसार जिन जीवों से सुख अथवा दुख मिलना होता है उनके साथ उसका संयोग अपने-आप हो जाता है। यही वे लोग होते हैं जो भाई-बहन, मित्र-बन्धु अथवा माता-पिता के रूप में जीव को इस जन्म में मिलते हैं।

जब मनुष्य को इनमें से किसी के द्वारा भी मानसिक पीड़ा पहुँचती है तो उस समय वह अपने सम्बन्ध की गरिमा को देखते हुए उनके साथ यदि दुर्व्यवहार नहीं भी कर सकता तो वह अपने मन-ही-मन में कुढ़ता रहता है। तब वह अपने भाग्य को कोसता हुआ ईश्वर पर दोषारोपण करता है जिसने ऐसे दुख देने वाले सम्बन्धी उसे इस जीवन में दिए हैं।

उसे कभी याद नहीं आता कि यह संसार रिश्तों की एक मण्डी है। रिश्तों की गरिमा बनाना-बिगाड़ना उसके अपने हाथ में है। जैसे रिश्ते हम अपने कर्मों से खरीदना चाहते हैं उन्हें पा लेते हैं। मण्डी में जाकर हम पैसे देकर या मूल्य चुकाकर अपनी मनचाही कोई भी वस्तु खरीदकर ले आते हैं और उसका उपभोग प्रसन्नतापूर्वक करते हैं।

उसी प्रकार हम अपने जीवन में जिन लोगों के लिए शुभकार्य करते हैं, उनकी सहायता करते हैं, उनके दुख दूर करने का यत्न करते हैं वे आने वाले जन्म में हमारे हितैषी बनते हैं और सहायता करते हैं।

परन्तु जिन लोगों के साथ हम अच्छा व्यवहार नहीं करते, उन्हें किसी भी रूप में हानि पहुँचाते हैं, वे आने वाले जन्म में हमारा अहित करते हैं और हमारी जड़ें खोदते हैं। इस प्रकार सारा हिसाब-किताब किसी-न-किसी जन्म में एवविध चुकता हो जाता है। वे अपना लेखा-जोखा बराबर करके हमसे विदा ले लेते है अथवा हम उनसे विदा लेकर अगले पड़ाव की ओर पुनरू कुछ और लोगों के साथ अपने लेनदेन के हिसाब को शून्य करने के लिए चल पड़ते हैं।

इस प्रकार लेनदेन के हिसाब-किताब के चक्रव्यूह में जीव भटकता रहता है। उन सबका निपटारा करके ही उसे इनसे मुक्ति मिलती है। वह परम न्यायकारी बिना पक्षपात के सबको एक ही लाठी से हाँकता है।

पूर्व जन्मों में हमने क्या अच्छा किया और क्या बुरा किया हम नहीं जानते परन्तु इस जन्म में हम जो भी स्याह-सफेद कर रहे हैं, उसकी हमें पूरी जानकारी है। आने वाले जन्मों में यदि कष्टों अथवा परेशानियों से बचना चाहते हैं तो हमें दूसरों की राह में शूल नहीं फूल बिछाने चाहिएँ जिससे हमें उन शूलों से छलनी या लहुलूहान न होना पड़े। जीवन में ऐसी कल्पना करना व्यर्थ है कि सभी फूल हमारे हिस्से के और सभी काँटे दूसरों के भाग्य में। हमारे विद्वान हमें चेतावनी देते हैं-

जो तोको काँटा बोए ताको बोइए फूल।
तोको फूल के फूल हैं वा को हैं त्रिशूल॥

तभी जीव फूलों की तरह अपनी सुगन्ध और मुस्कुराहट बिखेरता हुआ अपने कंटक रूपी सहोदरों के चंगुल से बच सकता है।

चन्द्र प्रभा सूद

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 07 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

फूल खिलते हैं, तो दिल मिलते हैं

शिखर चंद जैन

वसंत ऋतु आए और फूलों की बात ना हो यह तो हो ही नहीं सकता। वैसे भी हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा हैं फूल। अगर कहें कि दुनिया की जीवंतता में फूलों की बड़ी भूमिका है तो गलत नहीं होगा। फूलों का उपयोग सिर्फ सजाने या खुशबू फैलाने के लिए ही नहीं, किसी का सम्मान करने, प्यार का इजहार करने, श्रद्धा प्रकट करने, आराध्य की पूजा करने, शोक प्रकट करने और तन मन की सेहत को सुधारने के लिए भी किया जाता है।

इमोशंस पर पॉजिटिव असर- जापान के वैज्ञानिक कास्तुरा कौमूरा में अपने रिसर्च में पाया है कि वसंत ऋतु में चारों और खिले हुए फूल देखकर हमारे शरीर में ऐसे केमिकल रिलीज होते हैं जो इमोशंस पर पॉजिटिव इफेक्ट डालते हैं। इन दिनों हमारा मन प्रसन्नता और नई ऊर्जा से सराबोर हो जाता है। संभवत यही कारण है कि वसंत ऋतु को प्यार करने की ऋतु माना गया है। यूके के एक मेडिकल स्कूल में रिसर्च में पाया गया कि अपने आसपास रंग बिरंगे फूल रखने से हमारे मन में सहानुभूति की भावना का संचार होता है। अमेरिका की कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में हुए अध्ययन की रिपोर्ट बताती है कि रोज कुछ समय फूलों के साथ बिताया जाए तो हम काफी हद तक खुद को टेंशन फ्री रख सकते हैं। अमेरिकी वैज्ञानिक पियर्सन ने कई सालों तक रिसर्च करने के बाद पाया कि फूल अपने चारों ओर के वातावरण में ऐसी ऊर्जा बिखेरते हैं जो इंसान के दिलोदिमाग में ताजगी और सुकून का अहसास करवाती है।

वातावरण पर अच्छा असर- रंग-बिरंगे फूल प्रकृति का सौंदर्य तो बढ़ाते ही हैं वातावरण को स्वच्छ व सुवासित भी करते हैं। केमिकल साईंटिस्ट अपने रिसर्च के बाद कह चुके हैं कि ताजा फूलों की खुशबू माहौल को सुवासित करने के साथ कार्बन डाइअहक्साइड के असर को भी कम करती है।जबकि नकली खुशबू यानी परफ्यूम आदि सेहत के लिए नुकसानदायक होते हैं। यही वजह है कि कई जगह वर्क प्लेस और अस्पतालों में रोगियों के कक्ष में फूल रखे जाते हैं।

सुगंध चिकित्सा में उपयोगी- प्राकृतिक खुशबू का मन पर सकारात्मक असर पड़ने की वजह से ही हेल्थ एक्सपर्ट्स ने सुगंध चिकित्सा का विकास किया है। इसमें कुदरती फूलों की सुगंध के माध्यम से विभिन्न तरह के शारीरिक व मानसिक रोगों का उपचार किया जाता है। डिप्रेशन, माइग्रेन, सिरदर्द सहित अन्य कई रोगों की चिकित्सा में अरोमाथेरेपी काफी कारगर पाई गई है।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि फूलों का संपर्क कई बार निष्ठुर लोगों में भी दया और सहानुभूति का भाव जागृत कर देता है। इसी प्रकार कई बार निराशा के क्षणों में फूलों को निहारने और उनके साथ कुछ समय बिताने से मन में नई आशा का संचार होने की प्रबल संभावना होती है। फूलों में बच्चों जैसी मासूमियत और खूबसूरती भी इसकी वजह है।

दुनिया भर में लोकप्रिय हैं फूल- पाश्चात्य संस्कृति में फूल भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त जरिया माने जाते हैं। फूलों को प्रतिकार्थ से देने की विद्या फ्लेरियोग्राफी कहलाती है। जैसे गुलबहार भोलेपन का प्रतीक है ।लाल गुलाब प्यार, खूबसूरती और पैशन का प्रतीक है। कई संस्कृतियों में इसे स्त्रित्व से जोड़कर भी देखते हैं। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि दुनिया में फूलों की लगभग ६५००० प्रजातियां पाई जाती है। वनस्पतियों के अलावा धरती पर किसी भी दूसरी सजीव की इतनी प्रजातियां नहीं पाई जाती। दुनिया की लगभग हर संस्कृति में फूलों का अत्यधिक महत्व है। दुनिया भर में सभी संस्कृतियों में देवी देवताओं की आराधना फूलों के माध्यम से करने की पुरानी परंपरा रही है। इसी तरह प्रेम की अभिव्यक्ति या किसी के प्रति शोक संवेदना जताने या श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए भी फूलों का प्रयोग किया जाता है। फूल सम्मान, सौंदर्य, संवेदना, कोमल भावनाओं व शुभकामनाओं के प्रतीक हैं। दुनिया भर के इंसानों में फूलों के प्रति सकारात्मक भाव हैं।

शिखर चंद जैन

मुकेश कुमार सिन्हा

भूख बनी रहे !

एक लड़का
खुले आसमान को ताकते हुए
एक दम से आँखे मीचते हुए
समेटता है अपनी बाहें
और महसूस पाता है
प्रेमिका का उष्ण-स्पर्श
और, फिर भीग जाता है,
स्वयं के
स्वेद ग्रंथियों से पिघलते पसीने से
तत्क्षण, पलकें मीचे फुसफुसाता है
मानसूनी बारिश की फुहार
भिगो ही देती है न

एक लड़का चाहता है
नहीं रहे उसके लड़कपन की कोई
शर्त
साथ ही
ऐसे सारे नियम व कायदों को
धता बता कर
उसकी मासूम सी प्रेमिका
कहे एक बार चिल्ला कर
-देखो बाबू
मैंने नाक की नथुनी को
पहना है नाभि पर
क्या अब भी बाँध पाओगे,
अपने नजरों से मुझे
पर, याद रखना
कमर पर नजरें गडाना, गलत बात

एक लड़का
प्रेम सिक्त अहसास के संगम पर
कुम्भ स्नान करते हुए
देख पा रहा है
दूर से आ रही हैं दो नावें
यानी दो जोड़े, होंठ सरीखे
जो करीब आ कर
हो गए गडमगड
यानी दोनों नावें टकराई
डूबने से पहले
प्रेम की गंगा उफनती रही
बहुत दूर और देर तक

लड़का भूलना चाहता है
बेरोजगारी
मेहनत
पैसे
भोजन भी

लड़का चाहता है
सपने का रोडवेज
बन जाए ग्रैंड ट्रंक रोड
यानि नेशनल हाइवे नंबर एक या दो
और सौर उर्जा से चलती
उसके मोटरबाइक पर
हो सवार
उसकी सुल्ताना

लड़के ने धीमे से कहा
सुल्ताना! प्रेम, पेट भी भरता है न!
या अगले पिज्जा जॉइंट पर रुकूँ?

पेट की भूख,
मोहब्बत के बाद भी प्राथमिक हो ही
जाती है न !
भूखा मजनू कहाँ भाता है लैला को

खैर भूख बनी रहे !

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

बाबूलाल शर्मा 'बौहरा'
सिकंदरा, दौसा,राजस्थान

संविधान

भारत भू स्वाधीन, हुई कुर्बानी देकर।
वतन बाँट दो भाग, घाव गहरा ये लेकर।
पहले फूँके स्वप्न, पूत हमने न्यौछारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

आजादी पर हर्ष, मनाए हमने भारी।
बँटवारे के साथ, स्वदेशी सत्ता धारी।
संविधान निर्माण, मान गणतंत्र दुलारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

लोकतंत्र मजबूत, रहे जनता के हित में।
मात भारती शान, बसे सब ही के चित में।
सब मिल करें प्रयास,वतन तकदीर सँवारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

झगड़ें धर्म न पंथ, सभी निरपेक्ष रहेंगे।
विकसित हो यह देश,देश हित कष्ट सहेंगे।
सैनिक और किसान, देश की दशा सुधारें।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

संविधान का मान,अमर हो विजय तिरंगा।
जब तक सूरज चाँद, हिमालय, पावन गंगा।
लाल किले प्राचीर, कभी न हिम्मत हारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

चुने राष्ट्रपति योग्य,नमन अरमान तिरंगा।
इन्द्र धनुष सम्मान, वतन हो यह सतरंगा।
मात भारती शान, सिंधु भी चरण पखारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

भारत माँ के पूत,नमन हम करते तुमको।
देके अपनी जान,किये आजाद वतन को।
देखें हम आकाश, चमकते दूर सितारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

बना देश गणतंत्र, रखें हम इसे सुरक्षित।
मिले हमें अधिकार, रहें कर्तव्य सुनिश्चित।
मातृशक्ति सम्मान, बढ़े नित यही विचारें।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

हो विज्ञान विकास, धरा सोना उपजाए।
विश्व गुरू सम्मान,देश विकसित कहलाए।
जय जवान बलवान, देश के अरि संहारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

कर शहीद का मान, मातु बलिवेदी प्यारे।
देश हेतु बलिदान, बने है जो ध्रुव तारे।
शर्मा बाबू लाल, विधानी गीत उचारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

करे सुजन अरदास, देश में भाई चारा।
सुजस फैल संसार, वतन हो अपना प्यारा।
करे प्रगति समुदाय, अभी जो दीन बिचारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

निकट पड़ोसी देश,चीन व पाक सदा से।
करे हमे हैरान, आपकी छुद्र अदा से।
बड़ बोले हैं शंख, शेखियाँ नित्य बघारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

शिक्षा हो वरदान, यही अरदास हमारी।
लेखक, रचनाकार, लगा दे ताकत सारी।
मात भारती गीत, आरती नित्य उतारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

आतंकी शैतान, नहीं जो सगे किसी के।
गोली या गलफाँस, बने वे योग्य इसी के।
करते रक्तिम बात, टाँग कर चाँद सितारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

सजग निभा कर्तव्य,बनाएँ अपना भारत।
द्वेष दम्भ पाखंड, करें हम इनको गारत।
उन्हे दिलाएँ याद, जिन्हें कर्तव्य बिसारे।
संविधान अरमान, मिले अधिकार हमारे।

कन्हैया साहू

भारत की जयकार कर

देशप्रेम रग-रग बहे, भारत की जयकार कर।
रहो जहाँ में भी कहीं, देशभक्ति व्यवहार कर।

मातृभूमि मिट्टी नहीं, जन्मभूमि गृहग्राम यह।
स्वर्ग लोक से भी बड़ा, परम पुनित निजधाम यह।
जन्म लिया सौभाग्य से, अंतिम तन संस्कार कर।
रहो जहाँ में भी कहीं, देशभक्ति व्यवहार कर।

वीरभूमि पैदा हुआ, निर्भयता पहचान है।
धरती निजहित त्याग की, परंपरा बलिदान है।
देशराग रग-रग बहे, बस स्वदेश सत्कार कर।
रहो जहाँ में भी कहीं, देशभक्ति व्यवहार कर।

साँसें लेते हैं यहाँ, कर्म भेद फिर क्यों यहाँ,
खाते पीते हैं यहाँ, थाल छेद पर क्यों यहाँ।
देशप्रेम उर में नहीं, फिर उसको धिक्कार कर।
बेच दिया ईमान जो उनको तो दुत्कार कर।

रहो जहाँ में भी कहीं, देशभक्ति व्यवहार कर।
देशप्रेम रग-रग बहे, भारत की जयकार कर।

चन्द्र विजय प्रसाद चंदन

रण–भाव

उबल रहा लहू अब यौवन, अन्तस् अग्नि दहक रहा है
फड़क रही भुजाएं सैनिक, मन रण-भाव धधक रहा है

वीरगति का लक्ष्य हमारा दुश्मनों का दिल दहलाते हम
रणक्षेत्र में विजय वरदान ले तिरंगा शान से फहराते हम

माँ भारती के वीर सपूत बाधाओं को नित्य तोड़ते हम
कुदृष्टि डाले पूज्य धरा पर दुश्मनों को मार भगाते हम

रोक सके ना कोई दुश्मन ताकत अपनी बतलाते हम
शांति का संदेश प्रदान कर धवल भाव दिखलाते हम

ना करते अतिक्रमण कभी किसी देश की सीमाओं का
काल बन टूट पड़ूँ खल अतिक्रमण करे जो सीमाओं का।

कुशल जैन

सैनिकों की मां की स्थिति

है जो मेरी आंख का तारा
वह ही मुझको नजर ना आ रहा
करके मेरे घर को सुना
कर रहा है अपने कर्तव्य को पूरा
उठता था जो देर से सुबह
पलकें झपकाईं उसे सुबह से शाम हो गई
ना रही उसे लालसा किसी खिलौने की
उसे तो अब आदत हो गई
मौत से खेलने की
रहता तो है वह हमेशा मेरे
आशीर्वादो के साए में
पर है मन घबराता सूनापन देख
अपने घर गली चौराहे में
हर क्षण प्रतिपल उसके लिए
दुआओं में गुजरता है
बस आंखें मूंद उसे याद कर लेती
जब भी उसे देखने का मन करता है
है तो दुआएं हरदम साथ
फिर भी डर लगता है
जब भी किसी ताबूत में
नया तिरंगा लिपटता है

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
'सृजन शब्द से शक्ति का'
संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी
अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

सुहास भटनागर

एक सफ्हा वजूद

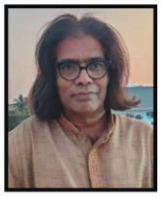

सतह से ऊँचा उठता इंसान
निकल पड़ता है, तलाश में
उस वजूद की, जो अपना सा लगे
वजूद भी आदमी सा होता है
हर जगह अपनी ही चलाता है
सुनता ही नहीं, किसी की भी
शायद वो रेल की पटरी सा है
हम-सफर होती हैं, मिलती कभी नहीं
हाँ, मंजिल तक पहुँच तो जाती ही हैं
अब मैं मूर्ती बन गयी हूँ
देखती तो सब कुछ हूँ
बोलती कुछ भी नहीं
शायद रो भी नहीं पाती
बहुत पहले आँखों में एक दरिया था
वो दरिया तो कभी का सूख चुका है
ये ही है, मेरे वजूद की किताब का
मेरे बारे में, मेरा लिखा एक सफ्हा

अम्बर की अलगनी पर

प्रीति सुराना

अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,
बहुत बेचैन सा मन है जरा तुम पास आओ न,
सिरहाने बैठकर मेरा माथा सहलाओ न,
बच्चों सा मचलकर मन ने प्यार मांगा है
अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,
हाथों में हाथ लेकर, मुझे कुछ तो समझाओ
डर रहा है मेरा मन, बातों में बहलाओ
कोई शक नहीं पर दिल ने इजहार मांगा है
अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,
देखकर जमाने के चलन घबराती हूँ
भीड़ में भी खुद को मैं अकेला पाती हूँ
अकेलेपन के रोग का उपचार मांगा है
अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,
जानती हूँ बिन लड़े न, मैं हार मानूँगी
हूँ जरा जिद्दी, गढ़ सारे जीत ही लूँगी
पर तुम्हारे सुख-दुख में भी हिस्सा मांगा है
अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,

रमेश चंद्र शर्मा, इंदौर

गरम तवे पर हाथ रख!

सच बोल और बात रख!
गरम तवे पर हाथ रख!
मन से निर्मल हो पगले
फिर चमकीले दांत रख!
मीठी वाणी परोस प्रथम
फिर नमकीन भात रख!
मन को सरल सहज बना
फिर मूरत उसकी साथ रख!
पहचान पहले भेडियों को
फिर शेरों से घात रख!
राष्ट्र सर्वोपरि सर्व प्रथम
अंतिम अपनी बिसात रख!
शहरों में घुसे अत्याचारी
सीने पर उनकी लात रख!

किशोर छिपेश्वर 'सागर'

माँ

माँ मेरी नजर उतारती गई
वो मुझे हमेशा सँवारती गई

मुझे पलको पर बिठा रखा
और हर लम्हा तारती गई

चूम लेती मेरा माथा सदा
और मुझे निखारती गई

दुश्मन कुछ न बिगाड़ सके
इस तरह ललकारती गई

प्यार कम होता नहीं माँ का
गोद मे उठाकर दुलारती गई

यू एस मिश्रा स्वप्निल

ओस!

तुमने ओस की बूंदों को महज
पाँव के सुकून की नजर से देखा होगा
मगर पीली होती घास के लिए
संजीवनी बूटी है ओस !
तुमने बचपन से सुना होगा,
ओस चाटे प्यास नही बुझती
पर एक उम्मीद जरूर जगती है,
की गला ना सही,
होंठ तो कुछ वक्त नम होगा
समंदर में उतरने वाले नाविक की
आश जैसी है ओस
बेटे की कलक्टरी के लिए सबकुछ दाँव पर
लगाने वाले बाप की प्यास है ओस
ओस बारिश से छोटी है, पर उतनी भी नही
की सख्त जमीं को गीला ना कर सके
मेरी सम्भावनाओं का द्वार खोलने के लिए
तुम्हारे ओस बराबर स्नेह का हकदार हूँ मैं
तुम्हे अपना स्नेह दाँव पर लगाना चाहिए
ओस से मोती भी बनते है !

तारकेश्वर शर्मा 'विकास'

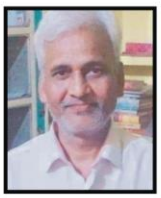

ग़ज़ल

इक नदी बह रही, तू नदी कौन हो,
ऐ बता मेरे दिल, तू मेरी कौन हो ?
हो न हो तू कहीं हो मेरी गजल,
चल बता तो सही तू परी कौन हो ?
सोचती ही रहोगी या फिर आओगी,
कुछ कहो मौन मन तू छड़ी कौन हो ?
आँख काजल लगाये लुभाती रही,
मेरे दिल की पहेली सखी कौन हो ?
राज खुलते ही खुल जाएगी तू सही,
खोलना क्या मटर तू फली कौन हो ?
गंगा-यमुना सही पर बही क्यों नदी,
मेरे तकदीर में तू बसी कौन हो ?
क्या करूँ मैं गिला बस चले सिलसिला,
साल-दर-साल बीता सदी कौन हो ?

रेशमा त्रिपाठी
प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश

भला कोई क्या लिखेगा

नन्ही परी को गुड़िया के शिवा कोई क्या कहेगा
उसे अपनी कहानी में परियों के शिवा कोई क्या लिखेगा ।
गुड़िया शब्द में उसे बांधना बहुत आसान हैं किन्तु!
उसके अल्हड़पन में छिपे मातृत्व भाव पर कोई क्या लिखेगा ।।
गुड़िया को गुड़िया कहना बहुत आसान हैं
उसी गुड़िया का कौमार्य चित्रण करना बहुत आसान हैं ।
उसे प्रकृति का श्रृंगार औ वसुन्धरा लिखना बहुत आसान हैं
किन्तु!सीता के त्याग और धैर्य का द्वंद्व कोई क्या लिखेगा ।।
मीरा के भक्ति का सार कोई क्या लिखेगा
शबरी के प्रेमानुभूति का भाव कोई क्या लिखेगा ।
माँ के वात्सल्य भाव को लिखना बहुत आसान हैं किन्तु!
उसके प्रसव पीड़ा का दर्द रूपी प्रेम कोई क्या लिखेगा ।।
सच तो यह हैं एक नन्ही परी ही सृष्टि का निर्माण हैं
भला इसे शब्द में कोई कितना लिखेगा
लड़की हैं! बस इसी स्वरूप में इसे लिखना बहुत आसान हैं
किन्तु लड़की के स्वयं लड़की होने की
बढ़ती प्रतिपल पीड़ा पर भला कोई क्या लिखेगा।।

वापसी

महेश राजा

कैब आ चुकी थी। माँ-बाबूजी वापस जा रहे थे। वे गांव से पंद्रह दिनों के लिये शहर आये थे। बाबूजी की तबियत खराब रहती थी तो एक बड़े अस्पताल में सारे चेकअप करवाकर दो माह की दवाई ले ली थी। उन्हें बुरा लग रहा था, पर मां-बाबूजी को गाँव में रहना ही माकूल लगता था।

उन्होंने माँ और बाबूजी के पैर छुये। पत्नी और मायरा ने भी। माँ ने मायरा को गले से लगा कर खूब आशीर्वाद दिये।

बाबूजी स्थिर निगाहों से उन्हें व मायरा को देख रहे थे। कैब चल पडी। हाथ हवाओं में उठे और वापस हो गये

वे स्टेशन जाना चाहते थे, पर उनकी मीटिंग थी। सब भीतर की ओर चल पड़े। मायरा साथ जाने की जिद कर रही थी, उसे मुश्किल से समझाया था।

मन भरा हुआ था, तैयार होने वाश रूम चले गये। इधर पत्नी कह रही थी कि बाबूजी वाशरुम का ठीक से उपयोग नहीं करते थे। साफ नहीं रखते थे। आज ही पूजा को बुलवा कर सब चकाचक करवाऊँगी। पलंग की बेड़शीट भी बदलवानी होगी।

मायरा अपने दादु को याद कर रही थी, दादु कितने अच्छे थे। वे उसे बहुत लाड़ करते थे। हाँ, दादी कभी कभी डाँट देती थी। पर, टेस्टी टैस्टी चीजें बना कर खिलाती थी।

वे अपने रूम से सब सुन रहे थे। उनकी आँखों में आँसू भर आये। उन्हें वे सब याद आ रहा था कि माँ बाबूजी कितनी कठिनाइयों से उसे बड़ा किया था, खूब पढ़ा-लिखा कर अफसर बनाया था। आँसूओं को रूमाल से पोंछ कर अपनी बैग लेकर वे आफिस जाने के लिये बाईक निकलने लगे।

महेश राजा, महासमुंद, छत्तीसगढ़

कृष्ण मोहन प्रसाद

मुजफ्फरपुर (बिहार)

एक दीपक तो जलाओ!!

इस अँधेरी सी डगर पर, एक दीपक तो जलाओ!

स्वार्थ की इस कालिमा में, आज खोया यह शहर है
वंचना की मोह मोहित, भंगिमा में यह शहर है
आदमी जब आदमीयत खो, भुला कर,
वासना औ कामना में, खो गया है
एक बहशीपन हवा में, तैरता है,
धुंध के आगोश में, कैसा जहर है?
धुंध छाँटे जो किरण बन...
आत्मा की चेतना को, अब जगाओ !
इस अँधेरी सी डगर पर, एक दीपक तो जलाओ!

फूल-सी जो बच्चियाँ, कोमल सृजन की हैं धरोहर
बलात्कारी मुठ्ठियाँ, उनको मसलतीं, नट करतीं...
अब अजन्मी बेटियों की, भ्रूण हत्या हो रही है
शर्मसार होता सृजन है,
घुट रहा दम इस हवा में, हाय यह कैसा कहर है?
प्राण-वायु के लिए अब, प्रीती के पौधे लगाओ !!
इस अँधेरी -सी डगर पर, एक दीपक तो जलाओ !!

संवेदना सूखी, कंटीली यह डगर है
हैवानियत-हवस-पीड़ित, बीरान होता-सा शहर है
जो जगाये, मानवी संवेदना...
आज नेहिल रागिनी में, एक गीतिल सुर सुनाओ !
इस अंधेरी-सी डगर पर, एक दीपक तो जलाओ!!

अधिकार प्राप्त दिन!

यस अनंतकृष्णन

किस किसको पूर्ण अधिकार।
प्राप्त अधिकार।
सब को नहीं।
केवल अमीरों को।
एक अमीर मेरी भूमि में
आधा हडप लिया।
नगरपालिका अधिकारी ने प्रमाण दिया।
आप की भूमि को कब्जालिया।
अदालत जाइये।
अदालत ने कहा
इमारत बनाने के पहले
क्यों नहीं रोका ।
वायदे पर वायदे।
अमीर मूँछ पर तनाव रख बैठा।
जिसकी लाठी उसकी भैंस।
छोड दिया। समान अधिकार।
गरीब पियक्कड़ चालक को तुरंत दंड।
अमीर नायक पियक्कड़ चालक हो तो बारह साल।
गवाह नदारद। साफ साफ मुक्ति।
जय संविधान। जय अमीरों का
मूल अधिकार।
सौ करोड सांसद विधायक।
विजय का आधार धन।
संविधान में सब बराबर।
पैसे प्रधान।
सरकार चलाने मधुशाला आय प्रधान।
शिक्षा का समान अधिकार।
सीबी एस सी ऐ सीबीआई मेट्रिक राज्य सरकार।
वर्दी भिन्न। संविधान के मूल अधिकार लिखित।
कार्यवाह प्रक्रिया अलग अलग।
सत्तर साल के अधिकार न बना समान।
सूचित जातियाँ आदिवासी जातियाँ।
हर साल बढती सूचियाँ।
अंक उम्र शुल्क की सहूलियतें।
संविधान के सामने सब बराबर।
शिक्षा में भेद भाव।
जय जनतंत्र। जय मूल अधिकार।

सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा'

तुझसे ही सीखा हमने
हुनर नजरअंदाजी
शब्दो को मीठी चाशनी
में डूबा दिल की गहराई में
उतरना...!!
स्मित हँसी के साथ हरेक
की नब्ज तलाशने का बेहतरीन
हुनर की कायल हूँ मैं..!
यूँही नही बने तुम
आदत मेरी..!
बस एक कमी है
की तुम नब्ज जल्दी जल्दी
टटोलने के चक्कर मे
हो जाते हो थोड़े तुनक मिजाज
यह कारिगरी तुम्हारी न जाने कितनी
जाने लेंगी..!!
उपहास बर्दाश्त नही तुम्हें
तभी तो मेरा मखौल उड़ाना
भाता है तुम्हें..!!
देख रही हूँ तुम्हारी
हर दर पर मौजूदगी
भटकाव की तरफ
बढ़ चली हैं
मंजिल तुम्हारी...!!
डरते हो तुम
मेरी हर जगह की मौजूदगी पर
पर सुन..मैं हवा सी हूँ
गुजरूँगी तेरे हर देहरी पर...!!
खोखले से तुम सिर्फ भटक रहे हो
एक नए दर की तरफ पर सुनो..!!
हर कोई मुझसा पनाहगार नही होता
जो तुम्हारे तमाम राज को संभाल सके
स्वयम की नाभि में..!!
गौर से देखो इस नजर को
पारदर्शी तुम्हे लिए बैठी हैं जेहन में..!

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 09 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

डॉ. दीपेंद्र पाण्डेय
'उजाला'

चलो दर्द बाटें...

जो सोया है भूखा जो रोया है भूखा,
नसीब में जिसके न रूखा न सूखा,
कटी रात जिनकी पानी ही पीकर,
चलो उनके घर पर इक रात काटें।
चलो दर्द बाटें...
सुबह से शाम तक जिसने हल चलाया,
मेहनत पसीने से जो दिन भर कमाया,
बस भरा पेट जिसका कुछ ना बचाया,
चलो खेत में उसके एक रात काटें।
चलो दर्द बाटें...
सर पे है जिसने बोझा उठाया,
बना दी इमारत जिसमें खुद रह ना पाया,
बसाई है बस्ती है बेघर मगर वो,
चलो उसके घर का फीता तो काटें।
चलो दर्द बाटें...
है घर में जो कैद बीसवी सदी में,
है हौसले जिनके हमसे भी आगे,
जो चाहती है आसमानों में उड़ना,
चलो उसके पैरों की जंजीरों को काटे।
चलो दर्द बाटें...
है युवा जोश देखो रग रग में उनके,
है देश पहले दिल में जिनके,
तैयार हैं वो सीमाओं में लड़ने को,
हटा दें चलो उनकी राहों से काटें।
चलो दर्द बाटें...
फैली है जो आग जाति धर्म की,
मस्तिष्क में धारणा है जो भ्रम की,
दे कर मोहब्बत का पैगाम उनको,
चलो नफरतों की खाई को पाटें।
चलो दर्द बाटें...

सिलसिले

शुभदा बाजपेयी

ये गमों के सिलसिले हैं
दिल जला है हम जले हैं
पत्थरों चुप बैठ जाओ
बर्फ के जैसे गले हैं
जिन्दगी को भी बता दो
आज हैं कल को टले हैं
हैं बहुत हालात मुश्किल
गमजदों के सिलसिले हैं
राह पथरीली बहुत थी
ठोकरों पे ही चले हैं
राज क्या 'शुभदा' बताए
लोग हमसे ही जले हैं

चौ.मदन मोहन समर

आ गया हूँ छोड़ कर गंगा नदी में।

फूल सुधियों के कलश में धर सभी,
आ गया हूँ छोड़ कर गंगा नदी में।
धूप द्वारे से उठा कर गुनगुनी,
छोड़ आया ओढ़ कर गंगा नदी में।
खिलते हरसिंगार महकी रातरानी,
वो धवल मधुकामिनी जैसी निशायें।
दिन सभी चम्पई गुलाबी संदली से,
भोर-संझा की पलाशी लालिमायें।
तोड़ कर पीताम्बरी दोपहरियां,
आ गया हूँ छोड़ कर गंगा नदी में।
हर शगुन, पूजा, महूरत, शुभ घड़ी,
शंख से निकली ध्वनि के पल उठा।
तुलसीदल,घृत,दीप,अक्षत,तिल हवन के,
मन्त्र पूरित आचमन का जल उठा।
बेलपत्रों पर रखी सब प्रार्थनायें,
आ गया हूँ छोड़ कर गंगा नदी में।
अध बिलोये झाग से मक्खन मठा के,
दो गिलासों को लड़कपन में गटकना।
और फिर कुछ और पाने के जतन में,
डाल कर बाहें गले में जा लटकना।
शोर करता वो लड़कपन मौन होकर,
आ गया हूँ छोड़ कर गंगा नदी में।
दस दिशाओं की छुअन वरदान देती,
वसुधा से अम्बर तलक शुभ कामनाएं
स्निग्ध,गन्धित,ऊष्म, स्नेहिल झुर्रियों में
सप्त लोकों की सभी अवधारणाएं।
मैं गगन को अंजुरी में धर समूचा,
आ गया हूँ छोड़ कर गंगा नदी में।

सीमा अग्रवाल

वन्देमातरम...

हृदय में देश को
रखना नहीं अब
हृदय ही देश को करना हमें है
रहें जंगल हरे
नीली रहें नदियाँ
पवन के इत्र से
महकी रहें गलियाँ
महज शुभ- स्वस्ति को
भजना नहीं अब
स्वयं शुभ-स्वस्ति को रचना हमें है
हवन अधिकार के
घर घर किए जाएँ
रहें कर्तव्य भीगी
किंतु समिधाएँ
कि बस अभ्यर्थना
बनना नहीं अब
स्वयं ही मंत्र बन जगना हमें है
हमारी श्वांस
लहराए तिरंगा बन
नसों का रक्त गाए
सिर्फ जन गण मन
किसी भी रंग में
रंगना नहीं अब
स्वयं हो केसरी चलना हमें है

वन्दना दुबे

कुछ दोहे

मंगलकारी दिवस का,
अद्भुत यह आशीष।
संचित पूँजी कर रही,
सदा नवा कर शीश।।

दीपक की मैं वर्तिका,
मधुर पवन सन प्रीति।
स्नेह समीर भी मंद जब,
जलती रही सभीत।।

खुशियों के मन-सिंधु मे,
गागर रही डुबाय।
आधी-पूरी भर रही,
मटकत छलकत जाय।।

अंजुरि में भर लाई हूँ,
जूही की कलिकाएँ।
गुँफित कर अर्पित करूँ,
मूरत शोभा पाए।।

हाथों में विश्वास हो,
सन्मति भी हो साथ।
पूरण कारज होएँगे,
झुकें जगत के माथ।।

रवि किरणों के स्पर्श से,
उत्पल खिलते प्रात।
खगरव लगता है मधुर
सुरभित-सी सौगात।।

चित्रांकन किसने किया,
अंबर पर हर रोज।
रवि-शशि लाली-कालिमा
तारक दल की फौज।।

यार अब धमकियाँ मत दो

सुमित ओरछा

देश कई बार बाँटने के बाद भी बांटने की धमकी..
वही बर्बादी और फिर वही गला काटने की धमकी..

हम भी अब बार-बार यह गरल पीना नहीं चाहते..
जब चाहे आ जाओ,अब हम भी जीना नहीं चाहते

अगर तुम्हें हूर और नूर का लालच है तो जान लो अब
हमको भी महादेव का आशीर्वाद , आकंठ मिलता है

अगर तुम्हें जिहाद के लिए मरने पर जन्नत मिलती है..
तो हमको भी देश धर्म पर मरने से बैकुंठ मिलता है..

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

रामकिशन शर्मा

संसार

हे ईश्वर! तेरा ये संसार कितना सुंदर है
कहीं पर्वत माला कहीं फैला, समुन्दर है।
तरह तरह के लोग बसते इस धरती पर
बनाये चर्च, मस्जिद, गुरूद्वारा, मंदिर है।
एक दुनिया तो रही बस धरती पे हमारी
दुनिया एक बसी समुन्दर के भी, अंदर है।
कुछ पशु पक्षी रहते साथ साथ इंसानों के
तो बसाव कुछ का घन्ने जंगलों के, अंदर है।
इंसां ने न पहाड़ छोड़े न मैदान न ही समुद्र
इंसान इस दुनिया का एकमात्र, कलंदर है।
यूं तो रहता पूजता ये कुदरत की हर शै को
लेकिन नुक्सान पहुँचाने में, अव्वल नंबर है।
कुदरत ने भी नवाजा इसी को ही दिमाग से
इंसां बलबूते इसी के ही गया बन, धुरंधर है।
कुदरत से लेने में गया जुट हर मोर्चे पे पंगा
जोश-ओ-जनूँ यूँ गया भर इंसान के, अंदर है।
एक तरफ तो रख चुका चाँद पे भी पाँव अपने
दूसरी और धर्म के नाम पे फैलाया, बवंडर है।
मौत ही है इस संसार का एकमात्र अटल सत्य
सब ही मरते, चाहे कोई कितना भी सिकंदर है।।

शेखर अस्तित्व

गीत

वो जो मजदूरों के माथे पर चमकता है,
वो जो छैनी और हथौडी में खनकता है,
बस वही भगवान है मेरा - १

चिलचिलाती धूप अपने काँधों पर ढोता है जो,
सर्द रातें ओढकर फुटपाथ पर सोता है जो !
जिसकी सूखी अँतडियों में भूख पलती है सदा,
धौंकनी सी पसलियों में आग जलती है सदा !
वो जो संघर्षों की भट्टी में धधकता है,
वो जो नवनिर्माण की बुनियाद रखता है !
बस वही भगवान है मेरा - १

सूखे बंजर खेत में अपना लहू बोता है जो,
फिर भी है मजबूर, आँसू खून के रोता है जो,
खुरदुरे हाथों के छालों में जो रहता है सदा,
और पसीने में नमक बनकर जो बहता है सदा,
झोपडी की टूटी छत से जो टपकता है,
भात बनकर जो पतीले में खदकता है !
बस वही भगवान है मेरा - १

निहारिका चौधरी

मेरे सपनों का भारत

जहां ना कोई भूख से तड़प रहा हो,
जहां ना कोई बेघर हो,
जहां सबके जीवन में खुशहाली हो,
जहां सब बराबर के हकदार हों,
कुछ ऐसा मेरे सपनों का भारत हो।।

जहां हर इंसान में इंसानियत हो,
जितनी अहमियत है इंसान की,
उतनी अहमियत भी हो बेजुबान की
जहां इंसान के साथ साथ बेजुबानों के
बारे में भी सोचा जाए,
जहां उन बेजुबानों के लिए भी अच्छी सोच हो,
कुछ ऐसा मेरे सपनों का भारत हो।।

जहां जितनी सफाई आस पास रहे,
उतना मन भी साफ हो,
ना किसिके लिए द्वेष और जलन की भावना हो,
जहां सबके लिए प्रेम भाव की भावना हो,
जहां ना कोई कीसिका अपमान करे,
जहां सब बराबर के हकदार हो,
कुछ ऐसा मेरे सपनों का भारत हो।।

जहां किसी पत्थर की मूर्ति से ज्यादा,
बड़े बुजुर्गों को अहमियत दी जाए,
पत्थर की मूर्ति के वजह,बड़े बुजुर्गों की सेवा
और उनका आदर सम्मान किया जाए।
अंध विश्वास से बाहर निकल कर,
जीते जागते लोगों के प्रति प्रेम भावना रखी जाए।
जहां दूसरों के लिए गलत विचार ना हो,
खुद में सुधार हो,
कुछ ऐसा मेरे सपनों का संसार हो।।

रजनी रामदेव

ग़ज़ल

चार बीवियाँ चौबिस बच्चे, अब्दुल का परिवार।
लगी टूटने कमर कमानी, कमा-कमा कर यार।।

काम एक दिन मिला अनोखा,धरना शाहिन बाग।
बनो विरोधी सी. ए. ए.के, और अलापो राग।।

मुफ्त मिलेगी बिरयानी भी, हरा पाँच सौ नोट।
बैठे रहना ओढ़ रजाई, क्या है इसमें खोट।।

एक दिना की गिनो कमाई, चौदह हुए हजार।
कहाँ मिलेगी उसको ऐसी, सोचो जरा पगार।।

एक माह से बन्द दुकानें, बन्द पड़े सब काम।
छोटे छोटे बच्चों को तुम, करते क्यूँ बदनाम।।

आठ वर्ष का बालक बोले, तुम्हें करेंगे दाह।
इसे न कोरी धमकी मानो,सुन लो मोदी-शाह।।

नए नए तुम मुद्दे ढूँढो, काटो खूब कलेश।
धर्म जाति पर सबको बांटों,गया भाड में देश।।

उपेंद्र सिंह सुमन

धिक्कार जेएनयू

दामन का रहा है ये दागदार जेएनयू.
आतंकियों का आका गद्दार जेएनयू.
अब पाक के पाले में है शुमार जेएनयू.
ये कमबख्त, कमीना, मक्कार जेएनयू.
देशद्रोहियों से है अब गुलजार जेएनयू.
आतंक का करता है कारबार जेएनयू.
भारत को कर रहा है शर्मसार जेएनयू.
आतंकियों का ठहरा ये यार जेएनयू.
अफजल का जताता है आभार जेएनयू.
है दिल्ली की छाती पर सवार जेएनयू.
साम्यवादियों का है ये श्रृंगार जेएनयू.
है जन-गन के मन की दुत्कार जेएनयू.
दहशतगर्दों का है ये पनाहगार जेएनयू.
अब पाक के हाथों का है हथियार जेएनयू.
आतंकियों से करता है प्यार जेएनयू.
फिर भी है अकड़ता गुनाहगार जेएनयू.
गद्दारों का हो गया घर-द्वार जेएनयू.
धिक्कार है!धिक्कार है! धिक्कार! जेएनयू.

विनोद कुमार जैन

स्नेह पथ

स्नेह पथ पर जो बढ़े, वे पग स्वयं पंकज हुए,
जो मार्ग नैनो ने चुना वह अब चुभा और तब चुभा।
गीत वे जो मीत की यादों में बस बहने लगे,
प्रीत के आँगन में चलकर, वो यही कहने लगे,
मत लिखो कविता कवि,वो स्वयं बह जाती सदाय
जिसने शब्दों को पिरोया, अब चुभा और तब चुभा।

विनोद कुमार जैन चेतन

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 10 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

विश्व हिन्दी दिवस कबसे और क्यों मनाया जाता है?

विश्व हिंदी दिवस हर साल १० जनवरी को मनाया जाता है, जो १९७५ में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की वर्षगांठ के अवसर पर मनाया गया था। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा किया गया था। १९७५ से भारत, मॉरीशस, यूनाइटेड किंगडम, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विभिन्न देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन होता चला आ रहा है। विश्व हिंदी दिवस पहली बार १० जनवरी २००६ को मनाया गया था। तब से यह हर साल १० जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।

विश्व हिंदी दिवस बनाम राष्ट्रीय हिंदी दिवस

विश्व हिंदी दिवस और राष्ट्रीय हिंदी दिवस पूरी तरह से अलग है। राष्ट्रीय हिंदी दिवस हर साल १४ सितंबर को मनाया जाता है। १४ सिंतबर १९४९ में संघ की विधानसभा ने हिंदी को अपनाया। जिसे देवनागरी लिपि में संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में लिखा गया था। जबकि विश्व हिंदी दिवस का फोकस वैश्विक स्तर पर भाषा को बढ़ावा देना है। राष्ट्रीय स्तर पर देश भर में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय हिंदी दिवस, देवनागरी लिपि में आधिकारिक भाषा के रूप में लिखे गए हिंदी के अनुकूल हैं।

हिन्दी भाषा के प्रचार, प्रसार और उसके उपयोग के प्रोत्साहन के लिए समर्पित एक दिवस।

१४ सितम्बर १९४९ को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर वर्ष १९५३ से पूरे भारत में १४ सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है। एक तथ्य यह भी है कि १४ सितम्बर १९४९ को हिन्दी के पुरोधा व्यौहार राजेन्द्र सिंहा का ५०-वां जन्मदिन था, जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए बहुत लंबा संघर्ष किया । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास आदि साहित्यकारों को साथ लेकर व्यौहार राजेन्द्र सिंह ने अथक प्रयास किए।

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन १० जनवरी १९७५ को आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने नागपुर में किया था। पहले सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस के प्रधानमंत्री सीवसागुर रामगुलाम थे। इनके अलावा ३० देशों के १२२ प्रतिनिधियों ने भी इस सम्मेलन में हिस्सा लिया था। भारत के अलावा, यूनाइटेड किंगडम, यूनाइटेड स्टेट्स, मॉरीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो जैसे देशों ने विश्व हिंदी सम्मेलन की मेजबानी की है। इसके अलावा, कई देशों में भारतीय मूल और गैर-आवासीय भारतीयों के लोग भाषा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

अब तक इन स्थानों पर विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया

- प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन - भारत, नागपुर- १०-१२ जनवरी १९७५
- दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन - मॉरीशस, पोर्ट लुई- २८-३० अगस्त १९७६
- तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन - भारत, नई दिल्ली- २८-३० अक्टूबर १९८३
- चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन - पोर्ट लुइस, मॉरीशस - ०२-०४ दिसंबर १९९३
- पांचवां विश्व हिंदी सम्मेलन- त्रिनिदाद और टोबैगो, पोर्ट अहफ स्पेन- ०४-०८ अप्रैल १९९६
- छठा विश्व हिंदी सम्मेलन - यू.के., लंदन- १४-१८ सितंबर १९९९
- सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन - सूरीनाम, पारामारिबो- ०६-०९ जून २००३
- आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन - अमेरिका, न्यूयॉर्क- १३-१५ जुलाई २००७
- नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन - दक्षिण अफ्रीका, जोहान्सबर्ग - २२-२४ सितंबर २०१२
- दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन - भारत भोपाल - १०-१२ सितंबर २०१५
- ग्यारहवां विश्व हिंदी सम्मेलन - मॉरीशस, पोर्ट लुइस, १८-२० अगस्त २०१८

हिंदी भाषा के बारे में तथ्य

१- हिंदी शब्द की उत्पत्ति फारसी शब्द हिंद से हुई है, जिसका अर्थ सिंधु नदी की भूमि है।

२- हिंदी दुनिया भर के लगभग ४३० मिलियन लोगों की पहली भाषा है।

३- भारत के अलावा, भाषा नेपाल, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम, फिजी और मॉरीशस में भी बोली जाती है। हिंदी और नेपाली एक ही स्क्रिप्ट साझा करते हैं - देवनागरी।

४- हिंदी के लैंगिक पहलू बहुत सख्त हैं। हिंदी में सभी संज्ञाओं के लिंग होते हैं और विशेषण और क्रिया लिंग के अनुसार बदलते हैं।

५- अंग्रेजी के कई शब्द हिंदी से लिए गए हैं, जैसे चटनी, लूट, बंगला, गुरु, जंगल, कर्म, योग, ठगी, अवतार इत्यादि।

६- हिंदी संस्कृत का वंशज है। इसके शब्द और व्याकरण प्राचीन भाषा का अनुसरण करते हैं।

७- हिंदी तुर्की, अरबी, फारसी, अंग्रेजी और द्रविड़ियन (प्राचीन दक्षिण भारत) भाषाओं से प्रभावित और समृद्ध हुई है।

विश्व भर के हिंदी प्रेमियों को विश्व हिंदी दिवस पर विशेष

'हिंदी महिमा गान'

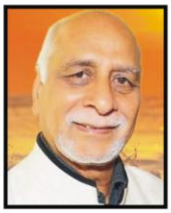

श्रेष्ठ, सुगढ़, सुखदायिनी, हिंदी सुहृद, सुबोध,
सरल, सबल, सुष्मित, सहज, हिंदी भाषा बोध।
नित-प्रति के व्यवहार में, जो हिंदी अपनाय,
'सरन' सुसत्साहित्य का सो जन आनंद पाय।

जय माँ हिंदी, रुचिर भारती, सुकृत कृतीत्व सुपथ संवारती।
रचनाकारों के मन भाती, सत्साहित्य की ज्योति जगाती।
जगमग ज्योतित करे हृदय को, हुलसित-सुरभित करे कवि मन को।
लेखनी को देती मृदु भाषा, कृतकों के श्रम की परिभाषा।

संस्कृत भाषा से इहिं उपजी, प्राकृत, पाली से पुनि संवरी।
कोउ वैदिक कोउ कहे खड़ीबोली, कोउ अपभ्रंश की बोले बोली।
हिंदवी रूप धर्यो कालांतर, भारतेंदु बरतहिंन निरंतर।
दोहा, रासो रूप सुहाये, विद्यापति देसी कही गाये।

चारण-भाट बढ़ायी शुचिता, खुसरो पाठकजन बहु रुचता।
तुलसी, सूर, कबीर सुहावें, रामानंद हरि भक्ति सिखावें।
मीरां, दादू, रहीम, बिहारी, भक्ति सिखायी कविजन चारी।
जायसी, घनानंद मन भावें, प्रेम-भक्ति का पाठ पढ़ावें।

तुलसी मानस पाठ पढ़ायो, सूर हृदय में कृष्ण समायो।
कही कबीर भक्ति की बानी, बातें करें रहीम सयानी।
सत्सई रची बिहारी कविवर, मीरा भक्त ऋझावे गिरधर।
रीतिकाव्य श्रृंगार सिखायो, केशव दास अधिक मन भायो।

बृजभाषा और अवधि भाषा, दोऊन हिंदी मार्ग तराशा।
काल आधुनिक सुविधाकारी, नवयुग लायो नव-कविता री।
गद्य-पद्य दोऊ विधा निखारी, कवि-लेखक दोऊ लिये अपनारी।
गीत, कहानी, लेख सुहाए, उपन्यास नव विधि के आए।

श्रीधर, मैथिलीशरण, गुलेरी, हिंदी को नवरूप दिये री।
नगेन्द्र, हजारी अरु जयशंकर, छायावाद को दियो गुरुमंतर।
पंत, प्रसाद, नवीन, निराला, ज्योतित कियो पंथ अंधियाला।
दिनकर, माखनलाल, द्विवेदी, इन सजाई हिंदी की वेदी।

झांसी की रानी की महिमा, बर्ण सुनाई सुभद्रा जतना।
हिंदी रचना की प्रभुताई, समय बढ़े पर बढ़ती जाई,
फिर आयो युग पुनरू नवीना, हिंदी लेखन भयो प्रवीना।
हटे मेघ सब छायावादी, प्रगतिवाद नव लहर चलादी।

हुए प्रयोग नवीन निरंतर, कविता बदल गई तदनंतर।
नई कहानी अरु नई कविता, देखी-सुनी न इसकी समता।
अमृतलाल, अश्क, नागार्जुन, राघव, शिवमंगल व प्रेमचंद।
लेखन विधा परिष्कृत कीन्हीं, हिंदी गुण इनसे सब चीन्हीं।

जग में हिंदी की द्युति दमकी, अखिल विश्व में हिंदी चमकी।
दिन प्रति बढ़त ख्याति हिंदी की, बनी मातृभाषा जन-जन की।
सुगढ़ साहित्य सृजन सुखकारी, हिंदी जग की बनी दुलारी।
देवनागरी लिपि सुहाए, जस लिखिये तस पढ़िये याए।

हर हिंदी भाषी की आशा, हिंदी बने विश्व की भाषा।
बने राष्ट्रभाषा भारत की, पाये यह पहचान स्वयं की।
हर कोई जय हिंदी की गावे, विश्व पटल पर ये छा जावे।
यशस्विनी हिंदी की जय हो, विश्वभारती की जय-जय हो।

हिंदी की शोभा बढ़े, जग में हो सम्मान,
निज गौरव निज मान की, स्वयं बने पहचान।
जगभाषा हिंदी बने, करे विश्व पर राज,
हिंदी भाषा में 'सरन' हों जग के सब काज।

प्रो. सरन घई
संस्थापक
विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा

८- हिंदी का सबसे पहला रूप 'अपभ्रंश' कहलाता था, जो संस्कृत की एक संतान थी। ४०० ई में कवि कालिदास ने अपभ्रंश में पतंउवतओंपलंउ लिखा।

९- हिंदी में प्रकाशित होने वाली पहली पुस्तक प्रेम सागर थी। पुस्तक को लालू लाल ने प्रकाशित किया और कृष्ण की कहानियों को दर्शाया।

१०- हिंदी उन सात भारतीय भाषाओं में से एक है जिसका उपयोग वेब यूआरएल बनाने के लिए किया जा सकता है।

विश्व हिन्दी दिवस का मुख्य उद्देश्य

विश्व हिन्दी दिवस का मुख्य उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। विश्व में हिन्दी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन १० जनवरी १९७५ को नागपुर में आयोजित हुआ था इसीलिए इस दिन को **'विश्व हिन्दी दिवस'** के रूप में मनाया जाता है। विश्व हिन्दी दिवस का उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना, हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना, हिन्दी के लिए वातावरण निर्मित करना, हिन्दी के प्रति अनुराग पैदा करना, हिन्दी की दशा के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में प्रस्तुत करना है।

विशेष

भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने १० जनवरी २००६ को प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप मनाये जाने की घोषणा की थी। उसके बाद से भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में १० जनवरी २००६ को पहली बार विश्व हिन्दी दिवस मनाया था।

संकलनकर्ता
डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक- अन्तरा शब्दशक्ति

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 11 वेब अंक

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

मिथिलेश कुमार मिश्र 'दर्द'

आया वसंत

धरती ने ली है अँगड़ाई,
मुग्ध हुआ है नील गगन।
जिसे देखकर धरती के
अंगों में होती है पुलकन।
मगर उधर रोती धनिया की
अभी समस्या है ज्वलंत-
आया वसंत, आया वसंत।

पीली चुनरी है धरती की,
जिसे उड़ाता मलय पवन।
मलय पवन की छेड़छाड़ से
बौराया धरती का मन।
लेकिन दुखिया धनिया के
दुःखों का नहीं कहीं है अंत-
आया वसंत,आया वसंत।

कोयल की मीठी बोली
जाती जगा मन में उमंग।
चूम रही है देखो तितली
मनमोहक फूलों के अंग।
बिना दवा के पड़ा उधर है
बेचारी धनिया का कंत-
आया वसंत, आया वसंत।

होली भी आनेवाली है,
सोच दुखी है दुखिया हाय!
कहाँ से आएँगे रुपये,
दीखता नहीं कोई उपाय।
गहराई उसके दुख के सागर की
सचमुच है अनंत-
आया वसंत, आया वसंत।

है प्रकृति भी निर्दय कितनी,
उसे नहीं इसकी परवाह।
वह तो मग्न है अपने में ही,
सुनती नहीं है इसकी आह।
दीख रही है वह भी वैसी
जैसे होते हैं श्रीमंत-
आया वसंत, आया वसंत।

नीना सिन्हा

इक छद्म आवेश था
या विद्रोहजनित स्वर थे।
तुमसें मिलना नियोजित था, या
स्वाभाविक भी।
वेग से बहती हवाओं को ऊँचे बुर्जो,
अट्टआलिकाओं से टकराना ही था!
तय यह होना शेष रहा कि,
दीवारों में दरारें पड़ेंगी या
हवा का व्याकुल अट्टाहास मुखर होगा!
प्रेम इन सबके मध्य मौन साधे रहा
जो उसके लिऐ बनें थे
वही शेष रहेंगे... बाकि सभी संभावनाऐं
ध्वस्त होंगी!
मन के दाँव शतरंज के पासे से अलग नहीं थे!
वह अपनीं अनकही, उलझीं चाल के शहंशाह थे!
जीवन के गणित में भी
शन्य ही बेशकीमती था!
मोक्ष की पराकाष्ठा या वैराग्य का रीतापन!
कहों! यशोधरा कुछ जीवन में रिक्त होना ही
ना बहुत कुछ घटित होनें का कारण हुआ!
मान्यताऐं मिट गयी, बदल गयीं
क्योंकि स्वरूप में थी...
सच स्थिर रहा...!
एकाकी रहा...
मगर शाश्वत रहा....
क्योंकि अदृश्य रहा, अक्षुण्ण रहा!

सरस्वती मिश्र

मेरा ख़्वाब

तमाम क्रूर घटनाओं के मध्य
निर्मित होगा एक कोमल लम्हा
जो खींच लाएगा बार-बार
क्रूरता के कवच में छिपे मनुष्यत्व को

धुँआ उगलती बंदूकों की नालों पर
साइलेंसर बन चिपक जाएगा अहिंसक भाव
ट्रिगर दबाती उंगलियाँ झिझकेंगी
और काँटों से बचा कर तोड़ लेंगी सुर्ख गुलाब

मिलावटी नारेबाजी के बीच पैठेगा न्याय-हंस
शत्रुता और मित्रता की खरी पहचान होगी
स्वार्थ के उल्लू बदल लेंगे अपना बसेरा
नीम की छाती पर नही उगेंगे पीपल-बरगद

मैं जानती हूँ कि यह पढ़कर मुस्करा रहे हैं आप
यह सच है कि, भारत की नियति है लुटना
पर गैरों से लुटे घर फिर आबाद हो जाते हैं
घर के चोरों से लुटा घर फिर नही बसता

खुली आँखों से देखे गए सपने सच नही होते
यह भी कि,
असंभव है तमाम मानसिकताओं का बदल जाना
फिर भी मैं पाल रही हूँ सपना
आशाओं का ठूँठ एक दिन फिर से हरियाएगा।

माधुरी मिश्रा

दिल

तुम्हारी आगोश में पड़ा है इधर भी देखो हमारा दिल है।
तड़प रहा है सिसक रहा है मेरे लिए वो तुम्हारा दिल है।।
दिलों में रंजिश को ना जगह दो ये प्यार रहने दो दिल के अंदर।
सजा मिली इश्क में हमें जो भुगत रहा ये बेचारा दिल है।।
तुम्हारे दिल को भी रख लिया है छुपाके मैंने तो दिल के अंदर।
चमक रहा है फलक पे दिल के वही तुम्हारा सितारा दिल है।।
अभी तो मेरा ये दिल जवां है ये सिर्फ तुमको ही चाहता है।
चढ़ा नही कोई रंग इसपर चढ़ा दो तुम रंग कुँवारा दिल है।।
नही कोई और दूसरा है तुम्हारे दिल के सिवा हमारा।
तुम्हारा दिल ही तो एक बस है हमारे दिल का सहारा दिल है।।

रश्मि शर्मा

बस तुम

तुम...तुम...बस तुम
ढलती साँझ में तुम
धवल चाँदनी में तुम
चुप सरकती रात में तुम
भोर की पहली किरण में तुम
तुम...तुम...बस तुम
लबों की हर जुंबिश में तुम
आँखों के हर ख़्वाब में तुम
आती-जाती हर साँस में तुम
मुझ तक पहुँचती हर आवाज में तुम
तुम...तुम...बस तुम

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

आभा सक्सेना दुनवी

लघुकथा-परिवेश

'मां दादी को क्या हुआ? उनके कमरे से कराहने की आवाज आ रही है... सुबह तक तो भली चंगी थीं'

...अभी अभी बालिका से युवा हुई रचना ने स्कूल से आने के बाद मां से पूछा...

'अरे रचना कम से कम तू तो उनके उनके कमरे में ना ही जइयो सवेरे से पूरो को पूरो घर सर पर उठा लियो है कहवे हैं जब से रचना ने ठाकुर जी को लोटा छुओ है तबहिं से उनको पूरो सरीर पिराय रहो है... तबहिं से बुखार भी है रहो है...

'ऐसा क्या हुआ मां मासिक धर्म ही तो हुआ है मुझे कोई छूत की बीमारी तो नहीं हुई है...

...अचानक अगले ही दिन मौसी की बीमारी के कारण मां को गांव जाना पड़ा तो दादी परेशान हो गईं अब उनका काम कौन करेगा? ठाकुर जी को नहलायेगा कौन...?
मां को जाना था तो वह चली गईं...

'रचना बिटिया तनिक पानी की बाल्टी मेरे पूजा घर में तो रख दे ठाकुर जी को नहलानो है हमें...'

'दादी मैं तो अभी पूरी तरह ठीक भी नहीं हुई हूँ फिर आपके पूजा घर में कैसे...?
रचना ने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया था...

'कोई बात ना ऐं जे विपदा भी तो ठाकुर जी ने ही तो दई है... बस तू कर दे मेरो काम... ठाकुर जी के नहाये बिना मैं अन्न को दानो भी मूंह में नाय डाल सकूं हूं'

थोड़ी देर बाद दादी और पोती मिल जुल कर घर के सारे काम निबटा रहीं थीं...

रुपल जोहरी

उदास नज़्म..

तुम जरा मुझे नहीं भाती...
मुझे तो पसंद हैं..
देवदार से सजी वादियां
कहीं फूलों से सजी घर की क्यारियां
बेगनबलिया की बेल
कल कल करती नदियां
झर झर बहते झरने
ठंडी हवा के झोके
पहरा देते बर्फीले पहाड़
इतने जतन से इनमे खुद को सहेजती हूँ
करके बंद उदासी के हर सुराख
हो जाती हूँ निश्चिन्त...
फिर भी आ ही जाती हो तुम
कोई दीवार फांद कर
उदास नज़्म..
तुम सच्ची बहुत जिद्दी हो...

डॉ संध्या रुहेला

वो लड़की...

कॉलेज बंक करके, देर रात पार्टी कर, पांच में से चार दोस्त अपने अपने घर वापस जा चुके थे, पर अम्बिका का घर दूर था, ठंड की अंधेरी रात, सुनसान सड़क पर वो अकेली जा रही रही थी अपने घर की तरफ।

तभी कुछ इंसानी भेड़ियों ने उसका रास्ता रोक लिया, पर वो हिम्मत करके भागने की नाकाम कोशिश करती रही।

तभी उन नर पिशाचों की हड्डियां चटकने और दर्द भरी चीखों से सन्नाटा टूट जाता है, कुछ सेकेंड में ही उनके बेजान शरीर सड़क पर गिर जाते हैं।

अम्बिका ने संभल कर देखा तो कोई जाता हुआ दिखाई दिया, आवाज देने की कोशिश की पर आवाज नहीं निकली।

अम्बिका खुश थी कि आज किसी फरिश्ते की वजह से उसका जीवन नरक होने से बच गया और वह अपने घर में दीवार फांद कर सही सलामत दाखिल हो गई।

उधर, पास के हस्पताल के शव गृह में शोर मचा था कि एक दुराचार पीड़ित की लाश गायब है ।

राखी कुलश्रेष्ठ

सपनों में आप आते हैं मिलने क्यूं बार बार।
मिलने तो आप आइए हकीकत में एक बार।
हलचल मची हुई है ठहरी हुई नदी में।
कर जाइए करीब से जरा इश्क इजहार।।
पलकों के ख्वाव में आते हो रोज आप।
दामन मेंभर दीजिए खुशियां भी बेशुमार।।
आने पर आपके तो मैं कलियां बिखेर दूं।
कर जाइए दरीचा मेरा फिर से गुलजार।।
मंजिल मिले या न मिले पतवार थामिए।
करिए तो आप भी यकीं हम पर भी एतबार।।

रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)

दोहे

नैनों में प्रीतम बसे, अधर सजा मधुमास।
विरहन हिरदय पीर है, चातक जैसी प्यास।
महुआ महके आज फिर, गमके बेला बाग।
यादें मितवा की करें, हिरदय से अनुराग।
अधर अधर से कह रहे, बिन बोली सी बात।
सिमटे सारे भाव हैं, मौन हुआ है गात।
नयनों ने जो बात की, खोले दिल के राज।
मधुकर ने दोहे लिखे, धड़कन गाये आज।
रूप राशि है रागिनी, खुलकर गाये गीत।
नैनो से ही बोलती, समझे जो मनमीत।

राजमती पोकरना सुराणा

लेखिका नहीं हूं मैं...

नहीं हूं मैं लेखिका कोई अव्वल दर्जे की,
पर अक्षरों से मेरी अच्छी-खासी दोस्ती है,
कर लेती हूँ मै भूल में छोटी छोटी शरारतें,
ढाल देती हूँ लफ्जों को कहानी कविताओं में।

तजुर्बा नहीं है कुछ भी लिखने का मुझे,
अनाड़ी हूं अनजानी हूं लेखनी से,
बस टूटे फूटे अक्षरों के साथ अक्सर खेलती हूं,
नाता है मेरा इसलिये इनमें रस घोलती हूं।

कुछ सबक जमाने के लेखों में पिरोती हूं,
दिल के दर्द को गजल में प्रस्तुत करती हूं,
उठती हैं मन में अत्याचारों के खिलाफ टीस,
शब्दों में बयां करने का प्रयास करती हूं।

मैं लेखिका हूं एक छोटी सी, थोड़ी नादान,
कभी बंजर भूमि में फूलों की कल्पना करती हूं,
इश्क में पागल हो मृगनयनी में डूब,
लफ्जों में इश्क की चाशनी घोलती हूं।

रोते रोते-रोते को मैं अपने लफ्जों से हंसाती हूं,
जिंदगी के रंग शब्दों में डाल रंगीन बनाती हूं,
कलमकार हूं मैं लेखनी में जान डाल,
अपनी ही धुन में हो मगन मोहब्बत के गीत गाती हूं।।

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 12 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अरुण सातले

इंतजार

ढलते सूरज की धूप
बड़ी देर तक ठहरती है
वृद्धाश्रम की दीवारों पर

उकडू होकर बैठी
अहाते की
प्लास्टर उखड़ी दीवार
खिल जाती है जैसे
ठहर जाती है हँसी
कुछ देर के लिए
बूढ़ों के, झुर्रियों वाले
चेहरे पर

आहिस्ता आहिस्ता
चलकर आते, अपने में
एकाकी चार पांच बूढ़े
चमकाते हैं, अपने अपने चेहरे
ढलती धूप में, और
खड़े रहते हैं बड़ी देर तक
एक दूजे की बाहों में बाहें डाले

अपलक देखते रहते हैं
मुस्कुराकर जाती हुई
धूप का सुर्ख चेहरा,
अलविदा में उठते हैं उनके हाथ
यह कहते हुए कि
धूप! तुम फिर आना ऐसे ही
कुछ देर हमारे साथ रहकर
जाने के लिए..

हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'

सफर

आज हिल मिल चल रहे सब,
कल अकेला ही सफर है।
मिल रहे पद चिन्ह फिर भी,
धुन्ध धुँधली रहगुजर है।
ओढ़कर चूनर किरण भी,
लालिमा से कुछ लसित हो।
दस दिशाएँ हैं प्रफुल्लित,
भोर चल दी उल्लसित हो।
प्राण में दिनमान जब तक,
एक आलोकित डगर है।..
मिल रहे पदचिन्ह फिर...
सीकरों से सन गया दिन,
धूप का झुलसा बदन है,
फूलती सी श्वास लेकर,
साँझ ढोती अब थकन है।
मन उलझता कंटकों में,
लोभ का बढ़ता कहर है।..
मिल रहे पदचिन्ह फिर..
मन्दिरों में दिव्य ध्वनियाँ,
गूँजती धुन आरती।
ईश से मिल चल मुसाफिर,
सोच कुछ पुण्यार्थी।
दीप बुझने को है आतुर,
ज्योति का अन्तिम प्रहर है।
मिल रहे पदचिन्ह फिर भी,
धुन्ध धुँधली रहगुजर है।

आभा चंद्रा

रोज जीने की बात
करती हूं
पर ये तो पता
ही नहीं कि जिन्दगी
कितनी बाकी है...
रोज एक कदम बढाती
जरूर हूं
पर ये तो पता
ही नहीं कि सफर
कितना बाकी है
रोज इक ख़्वाब नया
बुनती हूं
पर ये तो पता
ही नहीं नींद
आयेगी या नहीं
रोज तुमसे मिलने की
लौ लगाती हूं
पर ये तो पता
ही नहीं तुम मेरे
हो या नहीं
रोज मै तुझ पर कुछ
मर जाती हूं
रोज मैं तेरी हो के
जी जाती हूं

सीमा हरि शर्मा

बेटियों के बिन

बेटों की माँ
बूझती है
शेयर और क्रिकेट की शब्दावली
देखती है घर में सजे
ट्रेक्टर, जेट, लड़ाके
गुड़ियों के ब्याह
को तरसती है
कोमल एहसासों का
खोजती है पता
ढूंढती है वे आँखें
जिनमें अपनी अनकही
पीड़ा देख सके
चिराग से घर रौशन
तो है..... पर
महरूम है उस रौनक से
जिसे लोग
बेटी कहते हैं ।
सीमाहरि शर्मा

बावरी प्रीत..!

राजू उपाध्य

हमने
ह्रदय द्वार
खोल कर जानी
अन्तर्मन की
बात तुम्हारी...!

वासन्ती
आंगन में लहकी,
फिर से
मन की
पावन क्यारी..!

तुम
नैनों के पट
खोले रखना-
स्वप्निल पंछी
लौट रहे,

अब
क्वारी सांसें
महक उठी हैं
हुई बावरी
प्रीत हमारी..!

राधा तिवारी 'राधेगोपाल'

अबला

नारी अब अबला नहीं, उस पर सबको नाज।
वो तो नित ही कर रही, जग के सारे काज।।
जग के सारे काज, उसे है बहुत लुभाते।
करती नए विचार, सदा ही आते जाते।
कह राधेगोपाल, अरे वो सब पे भारी।
जग में करती राज, अरे बन सबला नारी।।

ठेंगेबाज

जहां-जहां तुम
मतलब के नंगे हाथ-पैरों से
झूठ के लम्बे-चौड़े
राजपथ पर
भाग-दौड़ मचा रहे हो
वहां-वहां के वोट
उठ-उठ कर
किसी और गड्ढे में
गिरने वाले हैं
---उसने
चौंक कर पूछा-
तुम्हें, कैसे मालूम ?
---हम ने कहा-हम
कवि हैं
तुम्हारी तरह नहीं
हम तो पानी की
महक
मिट्टी से
पहचान लेते हैं...
---लेकिन क्यों ?
---क्योंकि लोग
ऐसा किरायदार

प्रयास जोशी

नहीं रखना चाहिते
जो देश का
नवरत्न सामान
बेंचना
शुरू कर दे ...

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

गरिमा सक्सेना

कठपुतली

माना मैं हूँ कठपुतली तेरे हाथों की
भले नचा कितना मैं लेकिन नहीं थकूंगी

हार जीत सब तेरे हाथों में है बेशक
मगर कर्म का जोर सधा मुझमें भी तो है
एक सिरा डोरी का है तेरे कब्जे में
मगर दूसरा छोर बँधा मुझमें भी तो है
भले लकीरें हाथों की हैं तूने खीचीं
लेकिन उनकी दिशा मोड़नी मुझको आती
आँसू व्यर्थ बहा कर तेरे आगे अब मैं
नहीं झुकूंगी,नहीं रुकूंगी

हठी बड़ा है तू मुझको ये समझ आ गया
लेकिन मैंने भी हठ करना सीख लिया है
आँसू पीना, गिरना, उठकर पुनरू सँभलना,
काँटों पर भी मैंने चलना सीख लिया है
जलते अंगारे धरती पर नभ से भी है
आग बरसती, आग जले मेरे भीतर भी
मैं भी तो कंचन हूँ आखिर, देकर अग्नि परीक्षा
तपकर कुंदन सा बनकर दमकूंगी

हलवा जैसा पका पकाया सरल सहज सब
जिनको मिलता, गुमनामी में खोते अकसर
जो चोटें सहकर ना टूटें संघर्षों को डटकर जीते,
बनते शिलालेख के पत्थर
लगता है मुझको ही तूने अपना सबसे प्रिय माना है,
विपदा में मुझको ढाला है
चल मैं तेरी लाज रखूंगी अपने ही हाथों तराश कर
अपनी मूरत स्वयं गढ़ूंगी

बुशरा तबस्सुम

मन की अपनी आवश्यकताएं हैं

आस पर फूट
रही कोंपलो को...
चाहिए पोषक आहार,
उदासियों से उतपन्न सीलन को
सीधी धूप की जरूरत है..
काँपते विश्वास को
थोड़ी सी गर्माहट चाहिए,
और कुछ नही तो...
इसके विस्तृत आकाश पर...
इधर से उधर तक...
गुजरना तो चाहिए...
कोई प्रकाश पुंज या
सूरज वहाँ नही पहुँच पाता...
इसलिए मैं अकसर
तुम्हे सोचती हूँ ।।

पद्मा प्रसाद

निरुत्तर प्रश्न

मुझे बहुत कुछ लिखना है,
पर न जाने...
सारे शब्द कहां खो से गए?
शायद!
किसी गुमनाम अंधेरे में,
निजात दिलाना है मुझे,
इन घटाटोप अंधेरों से,
पर कैसे?
कितनी दयनीय स्थिति हो गई,
ईश्वर प्रदत्त अखंड विश्व की,
मानवता तो रही नहीं,
अब विश्व को ही,
विध्वंस करने पर अड़े हुए हैं,
आज!!
लोग इतने आगे बढ़ गये है,
परमाणु युद्ध को समझ चुके हैं,
फिर भी!
शांति क्यों खोती जा रही है,
चारों ओर...
धधकते अंगारे,
आक्रोश ही आक्रोश,
कहीं भी...
आपसी सामंजस्य नहीं,
तो!
संपूर्ण ब्रह्मांड,
नहीं हिल जाएगा अपनी धुरी पे,
ईश्वरीय शक्ति भी ,
जैसे क्षीण हो गई है,
इन अमानवीय तांडव को देखकर,
तभी तो!!!
कोई सुराग नजर नहीं आता,
सब तांडव होते देख रहे,
पर कौन?
कौन दिलाएगा निजात??
शब्दों की तरह वो भी खो गये,
गुमनाम अंधेरों में,
मेरी लेखनी की तरह,
'पूर्ण विश्राम'

रेणु मिश्रा

ग़ज़ल

बंद नयन, सागर रक्खा है
म्यान में इक ख़ंजर रक्खा है
चूम ले माँ मेरी पेशानी
गोद में तेरी सर रक्खा है
तुम और ऐसी बहकी बातें
किसने पागल कर रखा है
चुगली कर देता है चेहरा
क्या दिल के अंदर रक्खा है
रिश्तों का जो महल है उसमें
दोस्त तुम्हे ऊपर रक्खा है
जाने क्या चिड़िया पे गुजरी
खून में डूबा पर रक्खा है

हम तो अनपढ हैं भईये..

दिव्या राकेश शर्मा

हम तो बचते हुए जा ही रहे थे कि हमारे प्रिय मित्र हमसे टकरा गया। हमारे चौखटे पर पसीना देखकर वह ताड गया कि जरूर कुछ बात है।
हम तो टालमटोल कर रहे थे कि सच न उगले लेकिन उसनें हमें धमकाने के अंदाज में पूछ ही लिया,
'कहो मियां, यह थोबड़ा कैसे लटका है।नूर गायब है कुछ हुआ है क्या! देख सीधे तरह बता दियो वरना पता है ना खोपड़ी घूम गई तो तेरी खैर नहीं।'
अब हम करते क्या? बताना ही पड़ा कि आखिर हुआ क्या।अल्लाह कसम सौ परदे डाल दिए थे हमनें इस बात पर।
हम मियां से मुखातिब होकर बोले,
'तो भैया बात कुछ यूँ हुई।'
'क्या हुई बको!' वह बोले।
'हम जा रहे थे फेसबुक के फील्ड में सैर करने को। तो का देखते हैं भाई! एक लेखिका.. बहुत बडी लेखिका रही थी नवी नवी फौज के साथ फेसबुक पर पर खड़ी थी।'
'फिर?'
'फिर का बताएं भैया हम तो बच गए टकराने से।'
'कुछ हुआ भी?' वह फिर बीच में टपके।
'बता तो रिया हूँ मियां.. रूको थोड़ा।'
कहकर हमने पान मुँह में डाल लिया।
'तो थे कहाँ पर हम?...ओ हाँ हाँ..ऊ नेताइन मल्लब लेखिका के नजदीक..थोडा ध्यान से देखा तो बहुत ज्यादा भीड़ लगी थी और वह नेताइन.. मल्लब लेखिका किसी महिला के विचारों की मॉब लिंचिग की तैयारी में जुटी थी।'
'ला हौल विलाकुव्वत...क्या बोल रहे हो मियां!'
'सच कह रहे हैं भईये।'
हम तो भई डर गए! अनपढ़ जो ठहरे।
वहाँ का देखते हैं भैया कि उसके आगू पीछू रहनी वाली माता बहनें भी उनके साथ ही थी।
'फिर...क्या हुआ!.. लिंचिग कर दी थी क्या?' मियां ने पूछा।
पता नहीं भईये..। किसी को जोर का तमाचा मारने की बात कर रही थी।
'हम तो बहुत डर गए।वो का है कि भईये हमे कुछो समझ नहीं आया कसम से।'
'हमे तो इसका नेगेटिव पॉजिटिव लिखना भी नहीं मालूम। हम तो डर गए भईये।'
'फिर....क्या हुआ विचार बच गए कि नहीं?'
'हमें कुछो नहीं मालूम। हम तो बस चुप्पे से निकल लिए।'
'अरे....देखते तो!'
'ना भईये....ऐसी करतूतें नहीं देखते हम.. वो का है कि भैया हम अनपढ़ जो हैं।'

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

निधि अग्रवाल

केवल समय बदलता है

न लोग बदलते हैं
न आस्थाएँ
केवल समय बदलता है

तुम मुझे पतझड़ में मिले
और मन बंध गया
बसंत का मुझसे बैर
मेरे प्रारब्ध में विधि ने लिखा है

तुम्हारे पुष्पों पर मेरा
कोई अधिकार नहीं
जिस हवा में इनकी महक हो
मैं साँस रोक लेती हूँ

समय का चक्र अनवरत घूमेगा
पतझड़ कौन रोक पाएगा
पर अगले बरस
पतझड़ से भी मेरा अलगाव रहेगा

हर पतझड़ अब अवसरवादी
बसंत की याद दिलाएगा
पेड़ों के ठूंठ शापित हैं
जो छुएगा वही ठूंठ हो जाएगा

किशन स्वरूप

जिन्दगी

जिन्दगी जब से फँसी है मुश्किलों के दरमियाँ
हम अकेले हो गये हैं दोस्तों के दरमियाँ

बँट गयी सारी जमा-पूँजी सफर की दोस्तो
रहजनों के दरमियाँ, कुछ रहबरों के दरमियाँ

इब्तिदा से इन्तिहा तक जिन्दगी का ये सफर
मौज ज्यों चलती रहे दो साहिलों के दरमियाँ

मुस्कराहट ओढ़ ली, तो लोग क्या पहचानते
आह मेरी दबगयी कुछ कहकहों के दरमियाँ

गुफ्तगू होती रही जब मुझसे मेरी बारहा
रास्ते मिल ही गये कुछ उलझनों के दरमियाँ

हर सुब्ह सूरज अकेला चलके मंजिल पायगा
हम भटकते ही रहे कुछ काफिलों के दरमियाँ

उठ गयी दीवार आँगन में अचानक एक दिन
बढ़ गयी तकरार जब दो भाइयों के दरमियाँ

नेहा नाहटा

ग़ज़ल

मन की मीनारें गिर गई, ख्वाबों का खंडहर खड़ा रहा ,
डराती रही अतीत की आँधियाँ, वक्त निडर खड़ा रहा ,

विश्वगुरु का लिए सपना ,भागता रहा वो दिन रात,
तिरंगे में अराजकता लपेटे जयचन्दों सा बवंडर खड़ा रहा,

सास,देवर,जेठानी,ननद...कोसते रहे आँगन में बहु को,
नजरें चुराता बेबस सा पति , कमरे के अंदर खड़ा रहा,

बीच सड़क पर बैठी हैं , शाहीन ,जहीन सी अबलाएं
भीड़ को भड़काता मंच पर ,एक लीडर खड़ा रहा

सरे बाजार लुटती,पीटती ,फब्तियां सुनती रही बेटियां,
नजरें झुकाए बन तमाशबीन, सारा शहर खड़ा रहा,

द्वापर युग में आये थे तुम , द्रोपदी की लाज बचाने,
प्रियंका रेड्डी चित्कारती रही, मूक बन ईश्वर खड़ा रहा..

खुशियाँ मेहमान थी, थक हार कर लौट गई अपने घर,
ष्नेहष्जीवनभर साथ निभाने,आँखों का समंदर खड़ा रहा।

रुबी प्रसाद

लिखना आसान नहीं होता

एक स्त्री के लिए आसान
कुछ भी नहीं होता
न ही भावनाओं को व्यक्त कर पाना
न ही अपने अस्तित्व के लिए लड़ पाना
न ही उस जिन्दगी को जी पाना
जो ईश्वर का सबसे अनमोल तोहफा है!
न ही लिख पाना
जज्बातों को अपने
जो वो कह तक नहीं पाती किसी से भी
न ही उस प्रेम को लिख पाना
जिसे उसने जिया है सिर्फ ख्वाबों में
नहीं होता आसान लिख पाना
उस ढ़ोंग के बारे में जो वो रोज करती है
एक सम्पूर्ण औरत होने का
क्योंकि उसकी लेखनी
जब खोलने लगती है राज
स्त्रीत्व की सहनशक्ति की
दीमक लगे रिश्तों की
खोखली चारदिवारी की
प्रेम की अव्यक्त अभिव्यक्ति की
तो या तो
क्ई सवाल खड़े कर दिये जाते है
या फिर कोशिशें शुरू हो जाती है
उसकी कलम छीनने की
या फिर उठा दी जाती है
उसके चरित्र पर उंगली
क्योंकि
स्त्री जब अपनी पीड़ा लिखती है
तो क्ई चेहरों से नकाब उतर जाते है
और ऊंचे मकानों का कद
छोटा हो जाता है !!

हर्षिता पंचारिया

संविधान !!

तुम उस गंगा माँ के समान हो
जिसकी पवित्रता की आड़ में
पुण्य की डुबकी लगाकर
उतना ही मैला किया गया
जितना दावा निर्मल करने का था।

तुम्हारे कोटि कोटि भागीरथ
केसरिया और हरे के चक्कर में
उड़ा चुके है श्वेत कपोत
अंतहीन गगन में ।

तुम्हारा ही आचमन कर तुझमें
डाला जा रहा बौद्धिक मैला
और तुम्हें संरक्षित करने का
दावा किया जाता रहा ।

हे भागीरथों,
संविधान
निर्मल और अविरल है
अगर कोई धारा
जोड़नी या मोड़नी हो तो
वह अविरलता बढ़ाने के लिए हो
ना कि थामने के लिए ।

संविधान के पगों को थामना..
देश की नब्ज थामना है ।
इसलिए अब उठो..जागो..
संभलो... संभालो..
खुद को..
संविधान को..
गणतंत्र को.....

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

नरेंद्रपाल जैन

आज फिर से चढ़ रहे हैं शत्रुदल ये हिमखण्ड,
ताण्डवों से चूर करें आज उनका हम घमण्ड।

रक्त का उबाल यहां भौंह चढा भाल है,
उग्र नाग से नयन हैं बाहु में उछाल है।
सीने में भी जल रही है आग सूर्य समप्रचंड,
ताण्डवों से चूर करें आज उनका हम घमण्ड।

दानवों की शव चिताओं से ये भूमि यूँ सजे,
दावानल या बड़वानल की ज्वालायें भी कम लगे।
बुद्ध पथ को छोड़ आज युद्धमय हो सर्वखण्ड,
ताण्डवों से चूर करें आज उनका हम घमण्ड।

तीव्र वेग से चले सुदर्शना की आरियां,
अब तो शिशुपाल की सहस्त्र हुई गलतियां।
सिर धड़ से हो अलग दिखे हमें वो दुष्ट षंड।
ताण्डवों से चूर करें आज उनका हम घमण्ड।

अपेक्षा व्यास

ग़ज़ल

सुन खुदा ये बता रजा क्या है!
इश्क है इक नशा दुआ क्या है!!
साथ जाना है जब नहीं कुछ भी,
है बका क्या बता फना क्या है!!
शख्स कोई नहीं यहाँ तुम सा,
हमनशीं दिल ये चाहता क्या है!!
मुश्किलें हों हजार गम कैसा,
जब खुदा है तो नाखुदा क्या है!!
बस खफा हो, चलें अजी तुम तो,
इश्क ने की भला खता क्या है!!
जो मिलें साथ हर जगह तेरा,
ये जमी क्या ये आसमा क्या है!!
हो मुहब्बत अगर अपेक्षा से,
तो बता दूँ कि कायदा क्या है!!

बक़ा- नित्यता
फना- लीन होना, नष्ट होना
रजा- इच्छा

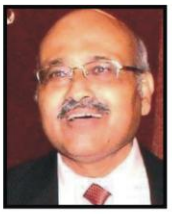

विवेक कवीश्वर

जीवन हुआ मेरा कस्तूरी

श्वास तेरे और धड़कन मेरी
जीवन हुआ मेरा कस्तूरी,
सुर और लय से जूझ रहा था
संघर्ष मेरा अब हुआ बाँसुरी।

भांति-भांति के भाव सहेजे
नवरस-नवरंगों से धो के,
सुधियों की डोरी पर उनको
टांगा भ्रम की गाँठ लगा के।

स्मृतिपल मेरे स्वप्न सरीखे
बंदी हैं मृगया-जालों के,
बिना शस्त्र आखेट करूँ मैं
कामदेव का वंशज बन के।

प्रिया मेरी तुम विचित्रवीणा
सकल जगत की उत्सुकता हो,
झंकृत केवल मेरे स्पर्श से
मैं भावय मेरी तुम आकुलता हो।

सुरेंद्र कुमार द्वारका

ग़ज़ल

तेरी सोहबत, तेरा साथ
जैसे सूखे में बरसात

पांव पडे हैं जब से तेरे
थोडे-थोडे में इफरात

मौज है तू, मस्ती भी तू ही
चाहे जितने तंग हालात

होंठ अडें, आंखों से कहना
गुप-चुप रहना गंदी बात

मेरा इल्म है दो कौडी का
तेरी सब बातों में बात

मेरी दौलत, मेरी पूंजी
खट्टे-मीठे एहसासात

मर-वा देगी, ले डूबेगी
पूरी-सूरी मालूमात

नाम है तेरा पीछे मेरे
वरना मेरी क्या औकात

राजबहोर पाठक 'मनोज'

गणतंत्र

अनुपमेय अंबर को छूते
रहना सदा अमर गणतंत्र !
जलना ज्योति प्रखर गणतंत्र !

शास्वत स्वर जमीर जिंदा हो,
किल्विष की नकार निंदा हो,
अन्वेषण के नभ में बिचरे-
सबल स्वप्रेरी सु परिंदा हो,
दिन दिन युवा अजर गणतंत्र ।

कभी न, मर्यादा क्षर दा हो,
ऋषियों की ऋजुता वर दा हो,
दृढ़ता के दृढ़ राजमहल में-
गुंजाइश 'खिड़की-परदा' हो,
बसना गांव नगर गणतंत्र ।

'मत' रखने की स्वतंत्रता हो,
पर, सीमा तासीर पता हो,
उच्छृंखल विष भरी लताएं-
चढ़ें न तरु पर, वीक्षणता हो,
रखना याद समर गणतंत्र ।

समरस धुन सुन देश मढ़ेगा,
सहकारी सद्भाव गढ़ेगा,
एक ताल-बहुरंगी सरसिज-
खिला देख, परवान चढ़ेगा,
सजना सुखद प्रहर गणतंत्र।

सब संभाव्य स्व निर्भर होवें,
शील सिंधु सित गह्वर होवें,
उद्यमिता का शुभ पल देना
जिससे संतति उर्वर होवें,

बनना हरे शजर गणतंत्र।
जलना ज्योति प्रखर गणतंत्र।।
अनुपमेय अंबर को छूते
रहना सदा अमर गणतंत्र।।

मनोज जैन

सिर्फ तुम्हारे लिए

तू जीत गई
मैं हार गया।

कैसा सम्मोहन बातों में,
आकर्षण बांधे,
बंधन में।
तू बिखरी दसों दिशाओं में
रहती मन के
स्पंदन में।
चितवन के एक
छलावे में
मेरा अपना
संसार गया।

तू जीत गई
मैं हार गया।

तू कूका करती कोयल-सी
मेरे मन की
अमराई में।
तू, अन्तर्लय है छंदों की
तू, ही दिल की
गहराई में।
मैं मुक्त हंसी पर
रीझ गया
अंर्तमन अपना वार गया।

तू जीत गई
मैं हार गया।

तुझ से ही यह दिन
सोने-से तुझ से ही
चांदी-सी रातें।
तेरे होने से जीवन में
मिलती ही
रही हैं सौगातें।
रूठी तो, भाव
अबोला-सा
धीरे से-आ पुचकार गया।

तू जीत गई
मैं हार गया।

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 14 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

मकर संक्रान्ति पर विशेष

सूर्य के मकर राशि मे प्रवेश करने के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला प्रमुख हिन्दू त्यौहार हैं।

मकर संक्रान्ति हिन्दुओं का प्रमुख पर्व है। मकर संक्रान्ति पूरे भारत और नेपाल में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तभी इस पर्व को मनाया जाता है। वर्तमान शताब्दी में यह त्योहार जनवरी माह के चौदहवें या पन्द्रहवें दिन ही पड़ता है, इस दिन सूर्य धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है।

पौष मास में सूर्य के मकर राशि में आने पर तमिलनाडु में इसे पोंगल नामक उत्सव के रूप में मनाते हैं जबकि कर्नाटक, केरल तथा आंध्र प्रदेश में इसे केवल संक्रांति ही कहते हैं। मकर संक्रान्ति पर्व को कहीं-कहीं उत्तरायणी भी कहते हैं, यह भ्रान्ति है कि उत्तरायण भी इसी दिन होता है। किन्तु मकर संक्रान्ति उत्तरायण से भिन्न है। मकर संक्रान्ति के अवसर पर तिलगुड़ खाने-खिलाने की परम्परा है।

उत्तरायण का आरम्भ

मकर संक्रांति का त्योहार, सूर्य के उत्तरायन होने पर मनाया जाता है। इस पर्व की विशेष बात यह है कि यह अन्य त्योहारों की तरह अलग-अलग तारीखों पर नहीं, बल्कि हर साल १४ जनवरी को ही मनाया जाता है, जब सूर्य उत्तरायन होकर मकर रेखा से गुजरता है। यह पर्व हिन्दू धर्म के प्रमुख त्योहारों में शामिल है।

कभी-कभी यह एक दिन पहले या बाद में यानि १३ या १५ जनवरी को भी मनाया जाता है लेकिन ऐसा कम ही होता है। मकर संक्रांति का संबंध सीधा पृथ्वी के भूगोल और सूर्य की स्थिति से है। जब भी सूर्य मकर रेखा पर आता है, वह दिन १४ जनवरी ही होता है, अतः इस दिन मकर संक्रांति का त्योहार मनाया जाता है।

मकर संक्रान्ति के विविध रूप

भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में मकर संक्रांति के पर्व को अलग-अलग तरह से मनाया जाता है। आंध्रप्रदेश, केरल और कर्नाटक में इसे संक्रांति कहा जाता है और तमिलनाडु में इसे पोंगल पर्व के रूप में मनाया जाता है। पंजाब और हरियाणा में इस समय नई फसल का स्वागत किया जाता है और लोहड़ी पर्व मनाया जाता है, वहीं असम में बिहू के रूप में इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है। हर प्रांत में इसका नाम और मनाने का तरीका अलग-अलग होता है।

अलग-अलग मान्यताओं के अनुसार इस पर्व के पकवान भी अलग-अलग होते हैं, लेकिन दाल और चावल की खिचड़ी इस पर्व की प्रमुख पहचान बन चुकी है। विशेष रूप से गुड़ और घी के साथ खिचड़ी खाने का महत्व है। इसके अलावा तिल और गुड़ का भी मकर संक्राति पर बेहद महत्व है।

इस दिन सुबह जल्दी उठकर तिल का उबटन कर स्नान किया जाता है। इसके अलावा तिल और गुड़ के लड्डू एवं अन्य व्यंजन भी बनाए जाते हैं। इस समय सुहागन महिलाएं सुहाग की सामग्री का आदान प्रदान भी

करती हैं। ऐसा माना जाता है कि इससे उनके पति की आयु लंबी होती है।

ज्योतिष की दृष्टिन से देखें तो इस दिन सूर्य धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करता है और सूर्य के उत्तरायण की गति प्रारंभ होती है। सूर्य के उत्तरायण प्रवेश के साथ स्वागत-पर्व के रूप में मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है। वर्षभर में बारह राशियों मेष, वृषभ, मकर, कुंभ, धनु इत्यादि में सूर्य के बारह संक्रमण होते हैं और जब सूर्य धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करता है, तब मकर संक्रांति होती है।

सूर्य के उत्तरायण होने के बाद से देवों की ब्रह्म मुहूर्त उपासना का पुण्यकाल प्रारंभ हो जाता है। इस काल को ही परा-अपरा विद्या की प्राप्ति का काल कहा जाता है। इसे साधना का सिद्धिकाल भी कहा गया है। इस काल में देव प्रतिष्ठा, गृह निर्माण, यज्ञ कर्म आदि पुनीत कर्म किए जाते हैं।

मकर संक्रांति को स्नान और दान का पर्व भी कहा जाता है। इस दिन तीर्थों एवं पवित्र नदियों में स्नान का बेहद महत्व है साथ ही तिल, गुड़, खिचड़ी, फल एवं राशि अनुसार दान करने पर पुण्य की प्राप्ति होती है। ऐसा भी माना जाता है कि इस दिन किए गए दान से सूर्य देवता प्रसन्न होते हैं।

महाभारत में भीष्म पितामह ने सूर्य के उत्तरायण होने पर ही माघ शुक्ल अष्टमी के दिन स्वेच्छा से शरीर का परित्याग किया था। उनका श्राद्ध संस्कार भी सूर्य की उत्तरायण गति में हुआ था। फलतः आज तक पितरों की प्रसन्नता के लिए तिल अर्घ्य एवं जल तर्पण की प्रथा मकर संक्रांति के अवसर पर प्रचलित है।

विभिन्न नाम भारत में

मकर संक्रान्तिः छत्तीसगढ़, गोआ, ओड़ीसा, हरियाणा, बिहार, झारखण्ड, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, राजस्थान, सिक्किम, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, पश्चिम बंगाल, गुजरात और जम्मू

ताइ पोंगल, उझवर तिरुनल : तमिलनाडु
उत्तरायण : गुजरात, उत्तराखण्ड
माघी : हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब
भोगाली बिहु : असम
शिशुर सेंक्रात : कश्मीर घाटी
खिचड़ी : उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार
पौष संक्रान्ति : पश्चिम बंगाल
मकर संक्रमण : कर्नाटक
लोहड़ी : पंजाब

विभिन्न नाम भारत के बाहर

बांग्लादेश : पौष संक्रान्ति
नेपाल : माघे संक्रान्ति या 'माघी संक्रान्ति' 'खिचड़ी संक्रान्ति'
थाईलैण्ड : सोंगकरन
लाओस : पि मा लाओ
म्यांमार : थिंयान
कम्बोडिया : मोहा संगक्रान
श्री लंका : पोंगल, उझवर तिरुनल

भारत में मकर संक्रान्ति

मकर संक्रान्ति के अवसर पर आन्ध्र प्रदेश और तेलंगण राज्यों में विशेष 'भोजन' का आस्वादन किया जाता है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर मैसुरु में एक गाय को अलंकृत किया गया है।

सम्पूर्ण भारत में मकर संक्रान्ति विभिन्न रूपों में मनाया जाता है। विभिन्न प्रान्तों में इस त्योहार को मनाने के जितने अधिक रूप प्रचलित हैं उतने किसी अन्य पर्व में नहीं।

हरियाणा और पंजाब में इसे लोहड़ी के रूप में एक दिन पूर्व १३ जनवरी को ही मनाया जाता है। इस दिन अंधेरा होते ही आग जलाकर अग्निदेव की पूजा करते हुए तिल, गुड़, चावल और भुने हुए मक्के की आहुति दी जाती है। इस सामग्री को तिलचौली कहा जाता है। इस अवसर पर लोग मूंगफली, तिल की बनी हुई गजक और रेवड़ियां आपस में बाँटकर खुशियाँ मनाते हैं। बेटियाँ घर-घर जाकर लोकगीत गाकर लोहड़ी माँगती हैं। नई बहू और नवजात बच्चे(बेटे) के लिये लोहड़ी का विशेष महत्व होता है। इसके साथ पारम्परिक मक्के की रोटी और सरसों के साग का आनन्द भी उठाया जाता है

उत्तर प्रदेश में यह मुख्य रूप से "दान का पर्व" है। इलाहाबाद में गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम पर प्रत्येक वर्ष एक माह तक माघ मेला लगता है जिसे माघ मेले के नाम से जाना जाता है। ॅ३ जनवरी से ही इलाहाबाद में हर साल माघ मेले की शुरुआत होती है। १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक का समय खर मास के नाम से जाना जाता है। एक समय था जब उत्तर भारत में १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक पूरे एक महीने किसी भी अच्छे काम को अंजाम भी नहीं दिया जाता था। मसलन

शादी-ब्याह नहीं किये जाते थे परन्तु अब समय के साथ लोगबाग बदल गये हैं। परन्तु फिर भी ऐसा विश्वास है कि १४ जनवरी यानी मकर संक्रान्ति से पृथ्वी पर अच्छे दिनों की शुरुआत होती है। माघ मेले का पहला स्नान मकर संक्रान्ति से शुरू होकर शिवरात्रि के आखरी स्नान तक चलता है। संक्रान्ति के दिन स्नान के बाद दान देने की भी परम्परा है। बागेश्वर में बड़ा मेला होता है। वैसे गंगा-स्नान रामेश्वर, चित्रशिला व अन्य स्थानों में भी होते हैं। इस दिन गंगा स्नान करके तिल के मिष्ठान आदि को ब्राह्मणों व पूज्य व्यक्तियों को दान दिया जाता है। इस पर्व पर क्षेत्र में गंगा एवं रामगंगा घाटों पर बड़े-बड़े मेले लगते है। समूचे उत्तर प्रदेश में इस व्रत को खिचड़ी के नाम से जाना जाता है तथा इस दिन खिचड़ी खाने एवं खिचड़ी दान देने का अत्यधिक महत्व होता है।

बिहार में मकर संक्रान्ति को खिचड़ी नाम से जाना जाता है। इस दिन उड़द, चावल, तिल, चिवड़ा, गौ, स्वर्ण, ऊनी वस्त्र, कम्बल आदि दान करने का अपना महत्त्व है। महाराष्ट्र में इस दिन सभी विवाहित महिलाएँ अपनी पहली संक्रान्ति पर कपास, तेल व नमक आदि चीजें अन्य सुहागिन महिलाओं को दान करती हैं। तिल-गूल नामक हलवे के बाँटने की प्रथा भी है। लोग एक दूसरे को तिल गुड़ देते हैं और देते समय बोलते हैं -'तिळ गूळ घ्या आणि गोड़ गोड़ बोला' अर्थात तिल गुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो। इस दिन महिलाएँ आपस में तिल, गुड़, रोली और हल्दी बाँटती हैं।

बंगाल में इस पर्व पर स्नान के पश्चात तिल दान करने की प्रथा है। यहाँ गंगासागर में प्रति वर्ष विशाल मेला लगता है। मकर संक्रान्ति के दिन ही गंगा जी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थीं। मान्यता यह भी है कि इस दिन यशोदा ने श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिये व्रत किया था। इस दिन गंगासागर में स्नान-दान के लिये लाखों लोगों की भीड़ होती है। लोग कष्ट उठाकर गंगा सागर की यात्रा करते हैं। वर्ष में केवल एक दिन मकर संक्रान्ति को यहाँ लोगों की अपार भीड़ होती है। इसीलिए कहा जाता है-'सारे तीरथ बार बार, गंगा सागर एक बार।'

तमिलनाडु में इस त्योहार को पोंगल के रूप में चार दिन तक मनाते हैं। प्रथम दिन भोगी-पोंगल, द्वितीय दिन सूर्य-पोंगल, तृतीय दिन मट्टू-पोंगल अथवा केनू-पोंगल और चौथे व अन्तिम दिन कन्या-पोंगल। इस प्रकार पहले दिन कूड़ा करकट इकट्ठा कर जलाया जाता है, दूसरे दिन लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है और तीसरे दिन पशु धन की पूजा की जाती है। पोंगल मनाने के लिये स्नान करके खुले आँगन में मिट्टी के बर्तन में खीर बनायी जाती है, जिसे पोंगल कहते हैं। इसके बाद सूर्य देव को नैवैद्य चढ़ाया जाता है। उसके बाद खीर को प्रसाद के रूप में सभी ग्रहण करते हैं। इस दिन बेटी और जमाई राजा का विशेष रूप से स्वागत किया जाता है।

असम में मकर संक्रान्ति को माघ-बिहू अथवा भोगाली-बिहू के नाम से मनाते हैं।

राजस्थान में इस पर्व पर सुहागन महिलाएँ अपनी सास को वायना देकर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। साथ ही महिलाएँ किसी भी सौभाग्यसूचक वस्तु का चौदह की संख्या में पूजन एवं संकल्प कर चौदह ब्राह्मणों को दान देती हैं। इस प्रकार मकर संक्रान्ति के माध्यम से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक विविध रूपों में दिखती है।

नेपाल में मकर-संक्रान्ति

नेपाल के सभी प्रान्तों में अलग-अलग नाम व भांति-भांति के रीति-रिवाजों द्वारा भक्ति एवं उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति के दिन किसान अपनी अच्छी फसल के लिये भगवान को धन्यवाद देकर अपनी अनुकम्पा को सदैव लोगों पर बनाये रखने का आशीर्वाद माँगते हैं। इसलिए मकर संक्रान्ति के त्यौहार को फसलों एवं किसानों के त्यौहार के नाम से भी जाना जाता है।

नेपाल में मकर संक्रान्ति को माघे-संक्रान्ति, सूर्योत्तरायण और थारू समुदाय में 'माघी' कहा जाता है। इस दिन नेपाल सरकार सार्वजनिक छुट्टी देती है। थारू समुदाय का यह सबसे प्रमुख त्यौहार है। नेपाल के बाकी समुदाय भी तीर्थस्थल में स्नान करके दान-धर्मादि करते हैं और तिल, घी, शर्करा और कन्दमूल खाकर धूमधाम से मनाते हैं। वे नदियों के संगम पर लाखों की संख्या में नहाने के लिये जाते हैं। तीर्थस्थलों में रूरूधाम (देवघाट) व त्रिवेणी मेला सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है।

मकर संक्रान्ति का महत्व

पोंगल के लिए पारम्परिक परिधान में एक तमिल बालिका शास्त्रों के अनुसार, दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि अर्थात् नकारात्मकता का प्रतीक तथा उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात् सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। इसीलिए इस दिन जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है। ऐसी धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुनरू प्राप्त होता है। इस दिन शुद्ध घी एवं कम्बल का दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है। जैसा कि निम्न श्लोक से स्पष्ठ होता है-

माघे मासे महादेवरू यो दास्यति घृतकम्बलम।
स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते मोक्षं प्राप्यति।।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर गंगास्नान एवं गंगातट पर दान को अत्यन्त शुभ माना गया है। इस पर्व पर तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा दी गयी है। सामान्यतः सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करते हैं, किन्तु कर्क व मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त फलदायक है। यह प्रवेश अथवा संक्रमण क्रिया छः-छः माह के अन्तराल पर होती है। भारत देश उत्तरी गोलार्ध में स्थित है। मकर संक्रान्ति से पहले सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में होता है अर्थात् भारत से अपेक्षाकृत अधिक दूर होता है। इसी कारण यहाँ पर रातें बड़ी एवं दिन छोटे होते हैं तथा सर्दी का मौसम होता है। किन्तु मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध की ओर आना शुरू हो जाता है। अतएव इस दिन से रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं तथा गरमी का मौसम शुरू हो जाता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा तथा रात्रि छोटी होने से अन्धकार कम होगा। अतरू मकर संक्रान्ति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। प्रकाश अधिक होने से प्राणियों की चेतनता एवं कार्य शक्ति में वृद्धि होगी। ऐसा जानकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोगों द्वारा विविध रूपों में सूर्यदेव की उपासना, आराधना एवं पूजन कर, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की जाती है। सामान्यतः भारतीय पंचांग पद्धति की समस्त तिथियाँ चन्द्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती हैं, किन्तु मकर संक्रान्ति को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है। इसी कारण यह पर्व प्रतिवर्ष १४ जनवरी को ही पड़ता है।

मकर संक्रान्ति का ऐतिहासिक महत्व

ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाते हैं। चूँकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, अतः इस दिन को मकर संक्रान्ति के नाम से जाना जाता है। महाभारत काल में भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिये मकर संक्रान्ति का ही चयन किया था। मकर संक्रान्ति के दिन ही गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर में जाकर मिली थीं।

इन सभी मान्यताओं के अलावा मकर संक्रांति पर्व एक उत्साह और भी जुड़ा है। इस दिन पतंग उड़ाने का भी विशेष महत्व होता है। इस दिन कई स्थानों पर पतंगबाजी के बड़े-बड़े आयोजन भी किए जाते हैं। लोग बेहद आनंद और उल्लास के साथ पतंगबाजी करते हैं।

मकर संक्रान्ति और नये पैमाने

अन्य त्योहारों की तरह लोग अब इस त्यौहार पर भी छोटे-छोटे मोबाइल-सन्देश एक दूसरे को भेजते हैं। इसके अलावा सुन्दर व आकर्षक बधाई-कार्ड भेजकर इस परम्परागत पर्व को और अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

संकलनकर्ता
डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक- अन्तरा शब्दशक्ति
वारासिवनी (मप्र) ४८१३३१

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 15 वेब अंक

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

वेदप्रकाश लाम्बा

अजनबी

खुशियाँ तेरे जहान की सब मैं जी गया
होंठों से छू लिया कभी आँखों से पी गया
आती हैं रास मुझको हुक्मरानों की हिदायतें
तेरी रजा जान के मैं होंठों को सी गया
करते हैं सब गिला कि अब मैं बोलता नहीं
उनको खबर नहीं कि दोस्त मेरा वजीर हो गया
दो-चार दिन की हुकूमतें दो-चार दिन है जिन्दगी
गूँजेगी बस यही सदाअ कोई अजनबी गया
पिछले पहर वीरानियाँ मुझसे खफा हुईं
शुक्रिया से मिला नहीं न उसके घर कभी गया
अच्छी नहीं तकरार न सही हैं अदावतें
रिश्तों की झीनी चदरिया मैं सी-सी गया
मिलने को आईं दर तक मेरे दुनिया की नियामतें
सुकून भी आया था उठकर अभी गया
मेरे हुजूर मेरी मुहब्बत का रख ख़्याल
तू ही तो आया दिल में मेरे मैं नहीं गया

भाऊराव महंत

ग़ज़ल

आपका ये मुस्कुराना रहने भी दो।
मुस्कुराकर यूँ पटाना रहने भी दो।

बेवफा हो जानता हूँ आपको मैं-
अब नई बातें बनाना रहने भी दो।

दूर ही हो ठीक है औश दूर जाओ-
फालतू का पास आना रहने भी दो।

गन्दगी में सड़ रहे हो रात-दिन ही-
रोज फिर गङ्गा नहाना रहने भी दो।

एक या दो बार धोखा खा लिया है-
और फिर हर बार खाना रहने भी दो।

वापसी करना नहीं रख लो उसे भी-
वो मिरा तोहफा पुराना रहने भी दो।

जोर से दे चोट मेरे दिल-जिगर पे-
जख्म पर मरहम लगाना रहने भी दो।

मंजुला बिष्ट

उदासियाँ

उदासियों से लौटना इसीलिये जरूरी था
ताकि बची रहें कूवत
हँसी को अधिक देर तक लम्बा करने की!
हालाँकि अधिक देर तक हँसने पर
आँसू भी निकलने का अंदेशा था।
उदासियों को लौटाना इसीलिये जरूरी था
ताकि बचा रहे भरम
कि समय के साथ विलोपित हो जाना
उदासी का सहज स्वभाव है।
उदासियों की ओर पीठ करना इसीलिये जरूरी था
ताकि बचा रहे वह झूठ
कि... उदास होने की अपनी तो आदत ठहरी!
उदासियों से नाराज होना भी इसीलिये जरूरी था
ताकि उसे समझायी जा सकें यह बात कि
यूँ वक्त-बेवक्त जिद्दी प्रेमी की तरह चले आने से
कुछ अपने भी उदास हो जाया करते हैं!
कभी उदासियों में लौट जाना भी इसीलिये जरूरी था
ताकि भीड़ बनने के उन्माद में
अपने दाएँ हाथ से बाएं हथेली को टटोला जा सकें।
उदासियों को प्यार करते रहना सबसे ज्यादा
इसीलिये जरूरी था
ताकि उदासी उस कातर हृदय तक कभी न पहुँचे
जो उदास होने के भय से बहुत ज्यादा खुश होने का
अभ्यास करने लगता है!
उदासियों से मिलना व लौटना
उस अर्थ में लिया जा सकता था
जैसे
श्मशान से लौटकर जीवन क्षणिक वैरागी हो गया था!

नवगीत

अविनाश ब्यौहार

लगी हुई है
अमराई में
तोतों की चौपाल।

हाँथों में पेड़
लिए अँगोछे।
पसीना पेशानी
का पोंछे।।

लू की
करने लगती मानो
शीतलता पड़ताल।

किरणें चुभती हुईं
बरछी सी।
आँगन है और
है परछी सी।।

पावस ऋतु में
होगी अक्सर
सूरज की हड़ताल।

अनामिका चक्रवर्ती अनु

चैट करती हुई लड़की

चैट करती हुई लड़की को
रात बहुत प्यारी सी लगती है

जैसे खिड़की के अधखुले पट से
रातरानी की
भीनी महक आती सी लगती है।
नर्म रेशमी, चंचल सी हवा
बालों को छूकर गुजरती सी लगती है ।

चैट करती हुई लड़की को
रात अल्हड़ सी लगती है।

टीन की छत पर बारिश की बूँदे
दिल से शरारत करती सी लगती है
गीली मिट्टी की सौंधी खुशबू
एहसासों में उतरती सी लगती है।

चैट करती हुई लड़की को
रात अनोखी सी लगती है।

बेवजह खुद से मिलने की
एक हसीन वजह सी लगती है
की-पैड की रोशनी में मुस्कुराहट
चाँदनी चमकीली सी लगती है।

चैट करती हुई लड़की को
रात सुहानी लगती है।

आँखों में मचलते ख़्वाब
मनी प्लान्ट की बेल से लगते हैं
दूर से आती झींगुर की आवाजें
कान्हा की बासुँरी सी लगती है।

चैट करती हुई लड़की को
रात बड़ी जादुई सी लगती है।

शरबती रात के दरिया में
महकती खुशी से भीगी भीगी
चैट करती हुई लड़की को
सुबह की नींद मखमली सी लगती है।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

सुभाष रूपेला

नेता का बाप

नेता बनकर क्या कीजिएगा, कुली-सा सबका भार झेलिएगा।
मुझसे लड़के तुम हार जाते, फिर क्या चुनाव खाक लड़िएगा।।

गाँधी-से गर बनोगे नेता, उपवास रखकर बनोगे दुर्बल।
शांति की अपील करते-करते, गोली खाकर जल्द मरिएगा।।

सुभाष-से गर नेता बने तो, बन बहरूपिया जग में भटकना।
चढ़े हत्थे विरोधी नेता के, गुमनामी बाबा क्या बनिएगा।।

नेता अगर इंदिरा-से बने, हरित क्रांति लाओगे अच्छी।
बयंत सिंह के हत्थे चढ़े तो, विधवा कर मुझे क्या लीजिएगा।।

मोदी-से गर नेता बने तो, देश का नाम करोगे रोशन।
छोड़ तन्हा जवानी कर सूनी, मुझे दुख देकर क्या लीजिएगा।।

केजरीवाल-से नेता बने, क्रांति का शोर मचाते फिरोगे।
बातों में शेर काम में ढेर निकल, अन्ना को बदनाम कीजिएगा।।

नेता-वेता कुछ मत बनना, घर के बच्चे ही देख लेना।
साथ मेरे काम करवाकर, मुझ पर खूब राज कीजिएगा।।

बचपन से गुण सिखा नेता के, बेटे को बनाएंगे नेता।
रुपेला नेता के बाप बनकर ही, कुनबा सियासी बना लीजिएगा।।

डॉ ज्योति सिंह

रिश्ते

खतरे के निशान से ऊपर
बह रही है
रिश्तो की बेईमानी,

वक्त की बौछार ऐसी है कि
थमने का नाम ही नहीं ले रही,

कभी-कभी इच्छा होती है
बहुत कि
सारे बंधन से कट जाऊं मैं,

मगर यह तो समय का तकाजा है
बाध कर ही रखना पड़ेगा
कुछ रिश्तों को,

कुछ भूमिकाएं है मेरे भी खाते में
जिसको निभाए बगैर
मुझे भी
सुकून व शांति कहां,

जिंदगी का क्या भरोसा
कब चला भी जाए
और कुछ बताएं भी न,

मगर एक दरख्वास्त है
ईश्वर से,

चाहे जो भी कश्मकश हो
मेरी जिंदगी में
तो क्या हुआ,

मैं जिधर से भी गुजरू
वहां पर
मेरे हर एक रिश्ते में
मीठी सी
हलचल मचा देना...!!

सुमन जैन ''सत्यगीता''

मैं गांधारी हूँ

मैं गांधारी हूँ
लेकिन मैं स्वयं को
पतिव्रता सिद्ध करने के लिये
नहीं बांध सकती
पट्टी अपनी आंखों पर ।
अपितु, मैं
बनना चाहती हूँ
अंधे धृतराष्ट्र की आंखे
रोकना चाहती हूं उसे
मोह से ग्रसित कुमार्ग पर
आगे बढ़ने से पूर्व ही
मैं अपनी संतान को
नहीं बनने देना चाहती
दुर्योधन एवं दुःशासन
मैं सदैव थामे रखना चाहती हूँ
धर्म एवं सत्य की पताका को
अपने हाथों में
हाँ..मैं अपने जीवनकाल में
नहीं रखना चाहती
किसी भी महाभारत की नींव
मैं मात्र कुंती होकर ही नहीं
गांधारी होकर भी
अपने पुत्रों को
बनाना चाहती हूँ
अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर, नकुल
और सहदेव के जैसा ही
मैं जानती हूँ यह सत्य भी
कि
इसके लिये मुझे भी जाना पड़ेगा
कृष्ण की ही शरण में
''श्री कृष्ण शरणम गच्छामि''

कुंवर बेचैन

ग़ज़ल

सबकी बात न माना कर
खुद को भी पहचाना कर,
दुनिया से लड़ना है तो
अपनी ओर निशाना कर,
या तो मुझसे आकर मिल
या मुझको दीवाना कर,
बारिश में औरों पर भी
अपनी छतरी ताना कर,
बाहर दिल की बात न ला
दिल को भी तहखाना कर,
शहरों में हलचल ही रख
मत इनको वीराना कर..।

डॉ सलिल समाधिया

बोर दिन

ऊबी सड़कें, बासे मित्र
देखे-भाले सारे चित्र
रसहीन तमाशों से भरा एक और दिन
आलस्य-प्रमादों से भरा एक बोर दिन

जहनी बातें, वाक्-युद्ध
विक्षिप्त चित्त, मन-प्राण क्षुब्ध
..युद्ध-नादों से भरा एक और दिन
आलस्य-प्रमादों से भरा एक बोर दिन..

सुबह उठी और दिन भर छाई
घोर उबासी और जम्हाई
बासी सांसों से भरा एक और दिन..

दुर्बल प्रातः, मलिन दोपहर
रुग्ण दिवस और संध्या कातर
बोर रातों से भरा एक और दिन..
आलस्य-प्रमादों से भरा एक बोर दिन

सध न पाई कोई सजगता
क्षण में कर्ता, क्षण का द्रष्टा
मन की घातों से भरा एक और दिन..
आलस्य-प्रमादों से भरा एक बोर दिन

किसी बात में रस नही
मुर्दा, टस से मस नही
बलहीन इरादों से भरा एक और दिन ..

मरा-मरा सा बीज पड़ा
आशा में, हो जाए हरा
गोबर-खादों से भरा एक और दिन..
आलस्य-प्रमादों से भरा एक बोर दिन

गाय वही और घास वही
वही जुगाली चौराहे पर
हथियार वही, बारूद वही
सरकार को गाली चौराहे पर
एक ही जूता, एक ही चप्पल
तन पर बासे वस्त्र वही हैं
बाहर की तो छोडो, भीतर
भावों के भी अस्त्र वही हैं
सब दोहरावों से भरा एक और दिन
आलस्य-प्रमादों से भरा एक 'बोर दिन'

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 16 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

डॉ लक्ष्मी कुशवाह

बसंत

सुनते ही बसंत की आहट,
कलियाँ खिल खिलाने लगी
सरसों झूमें पीली-पीली,
फसलें लहराने लगी

विटप झूमने लगे
कोयल गुनगुनाने लगी
बूटा-बूटा चहक उठा
प्रकृति इठलाने लगी

प्रीत की लौ हिय उठी,
विरहन अकुलाने लगी,
झुनर रात की चंदनियाँ
बहुत तड़पाने लगी

अमियाँ बौराने लगीं
सुबह मुस्काने लगी
फूलों ने अंगड़ाई ली जब,
भ्रमर टोली आने लगी

पोर-पोर मादकता छाई
चाल हिरणी हो गयी
ऋतुराज तीर छोड़े
हवा दिवानी बन गयी

दिल की धड़कन बढ़ गयी
पी की आहट जब मिली
श्वाँसे बे-काबू हुई और
मदहोशियाँ छाने लगी

रंग-बिरंगी ओढ़ चूनर
धरा जो लहराने लगी
ओस बूँदे गिर धरा पे
मोती बिखराने लगी

आया बसंत स्वागत बसंत
दसो दिशाये गाने लगीं।
खुशी से फूली हर लता
फूल बिखराने लगीं।

लोकेश महाकाली

शारदे!

स्वर का मुझको ज्ञान नहीं है।
सरगम का अनुमान नहीं है।
यति गति लय आलाप तान को,
यद्यपि सप्तक भान नहीं है।
भावों में छवि तेरी उभरे स्वतः संवरते गीत।
शारदे!
पाया रस नवनीत।

मैं अज्ञानी मूढ़मना सा।
मिथ्या माया कीच सना सा।
क्षणभंगुर जीवन सच भूला,
अहं लिए आकंठ तना सा।
तेरे चरणों पड़कर जानी पार लगाती रीत।
शारदे!
पाया रस नवनीत।

तम के घेरे डाले डेरें।
सघन निशाएँ लुप्त सवेरें।
जीवन पथ पर पग-पग पाये,
बाधाओं के नित पग फेरें।
तेरे पूजन-वंदन के बल सम्भावित कर जीत।
शारदे!
पाया रस नवनीत।

शैलजा पाठक

मैं जब भी लिखूंगी प्रेम
रेत के आँगन में दिल नही उकेरुंगी
ना लिखूंगी नाम तुम्हारा मेरे साथ
ना बनाउंगी घरौदा
और किनारे खड़ी नही देखूंगी
उसका बिखर जाना
हमारा सिहरना

अबकी लिखूंगी प्रेम तो देखना
मेरी बनाई रोटियों में
उतर आयेंगे मेरी अँगुलियों के छापे
तुम्हारे बटन पर एकटक सी मेरी नजर
तुम्हारी आँख में तैरता मेरा चेहरा
तुम्हारे बैग में धरुँगी चुपके से एक प्रेम पत्र
जब खोलोगे तो मोती झरेंगे

इस बार लिखूंगी प्रेम तो पेड़
हरे होंगे नदी भरी होगी
हल्दी का रंग पीला और चूड़ियों का लाल होगा
हमारे बीच की दूरियों में उड़ेगा अबीर
दरवाजे पर दस्तक देगा बसंत

तुम्हारे धड़कन में गीत की धमक..सा उतरेगा प्रेम
तुम बसन्त समझना....
सरसों के फूल के रंग के रुमाल हो जाएं उनकी जेब के
जिन्हें मैनें प्यार किया....

स्वदेश मल्होत्रा रश्मि

शत शत नमन तिरंगे तुझको

शान तिरंगा है भारत की,
जन-जन का अभिमान है।
शस्य श्यामला धरती के,
गौरव का ये गुणगान है।।

वीर शहीदों की कुर्बानी ने
इसको साकार किया,
सब धर्मों ने मिलकर इसका
नामकरण संस्कार किया।
शत-शत नमन तिरंगे तुझको,
तू हम सबकी जान है।।

नारंगी है ज्ञान का सूचक
और श्वेत शांति का है,
हरा रंग सम्रद्धि का पोषक
और हरितक्रांति का है।
चक्र निरन्तर प्रगति मार्ग का
सक्रिय एक निशान है।।

हिमगिरि से लेकर सागर तक
इसकी शान निराली है,
सिंधु पखारे चरण और
हिमगिरि करता रखवाली है।
उड़-उड़ पंछी गीत सुनाते,
गुंजित आसमान है।।

सीमा व्यास

समझदारी

पिता ने उसकी सौतेली माँ को उसके बारे में कुछ नहीं बताया था। पर घर में दस वर्षीय लड़की की सदा उपस्थिति देख वह सब समझ गई। पिता कुछ कहते उसके पहले ही वह मासूम लड़की से दूजाभाती का व्यवहार करने लगी। दो खुद थाली में रखती, एक उसे देती। दो काम उससे करवाती, एक खुद करती। छोटी सी लड़की ऐसे भेदभावपूर्ण व्यवहार से अपरिचित थी ,सो बहुत उदास रहती।

उस दिन खाना खाते हुए माँ बोल पड़ी, 'तेरे बारे में मुझे कभी कुछ नहीं बताया था इन्होंने। बता, कैसे सहन कर लूँ ?'

भोली सी लड़की देर तक चुप रहने के बाद बोली, 'मेरे जैसे। मुझे भी कहाँ...।'

और सौतेली माँ ने कुछ क्षण में ही अपनी थाली की गुझिया लड़की की थाली में परोस दी।

सीमा व्यास

क्षमा सिसोदिया

प्रेम का स्वाद

तेजस छोटी-छोटी बातों पर उलझ जाता,निशा कितना ही चुप रहने की कोशिश करती, लेकिन तेजस को कुछ न कुछ बोलना ही रहता, अक्सर झगड़ों का कारण तेजस का क्षणिक आवेश और अहंकारी स्वाभाव होता।

आज निशा का मूड भी कुछ उखड़ा हुआ था, रसोई में काम करते-करते बड़बड़ाती जा रही थी, छुट्टी के दिन भी आराम नही, बस काम करते रहो, औरतों का तो जीवन ही कोल्हू का बैल है, जहाँ बाँध दो वहीं घूमती रहती हैं।

यह सुनते ही तेजस का अहंकारी स्वभाव कुछ अपशब्द बोल उठा, जिसे सुनकर आज निशा भी उखड़ गयी और दोनों में जमकर झगड़ा हो गया, डाइनिंग टेबल पर रखा हुआ भोजन रास्ता देखता रहा, लेकिन उसे खाने वाला आज कोई नही था। तेजस की आदत ऐसी थी कि जब भी निशा गुस्से में खाना नही खाती तो वो उसे मनाने के वजाए खुद भी बिना खाना खाए ही सो जाता।

सुबह हो गयी, तेजस उठा लेकिन निशा के रूम का दरवाजा नही खुला। मार्निंग वॉक भी करके आ गया, फिर भी निशा नही उठी। अब तो तेजस के मन में जाने उल्टे-सीधे कितने ख्याल आने लगे। रोज जल्दी उठने वाली निशा आज.?

नही-नही भगवान, आप ऐसा नही कर सकते हैं, फिर वो दरवाजे के पास जाता लेकिन अनजाने भय की वजह से उसे बिना खटखटाए ही आ जाता। कही ऐसा न हो कि...।

अंदर-बाहर टहलते - टहलते आकर किचन में चाय बनाने लगा, कि शायद खटपट की आवाज से वो उठ जाए, जोर-जोर से अदरक कूटा फिर भी निशा नही उठी, अब तो शक की सूई तेजी से बढ़ने लगी, और उसी रफ्तार से तेजस की श्वास भाई अटकती जा रही थी, जरूर कुछ गड़बड़ है।

वो पसीना-पसीना हो गया और ईश्वर की शरण में बैठ माफी माँगने लगा, कि खटटट दरवाजे की आवाज के साथ निशा किचन में जाते हुए दिखी, वो दौड़ कर उससे इस तरह लिपट गया, जैसे वर्षों से कोई खोया हुआ मिल गया हो।

निशा हतप्रभ सी पूछती रही, क्या हो गया!?, तेजस कुछ बोलने के वजाए फूट-फूट कर रोता रहा। निशा घबराकर गयी, क्या हुआ तेजस, अम्मा-बाबूजी ठीक तो हैं न?

हाँ निशा सब ठीक है, तो फिर आप इतना रो क्यों रहे हैं!,

निशा अब आज के बाद इस घर में कभी झगड़ा नही होगा, मुझे आज समझ में आ गया कि तुम्हारे बिना मैं जी नही पाऊँगा।

इतना सुनते ही निशा की तरसती आँखों ने आँसुओं की धार बहा दी, अब तेजस के आँसुओं से निशा और निशा के आँसुओं से तेजस का बंजर पड़ा हृदय प्रेम के रस से भींग रहा था।

डॉ.क्षमा सिसोदिया

प्रज्ञा जायसवाल

वंदना

माँ शारदे तू वरदे,
माँ शारदे वरदे,
वरदायनी करुणामयी,
हम बच्चों को वरदे,
माँ शारदे तू वरदे!
हंसवाहिनी तू ज्ञान की देवी,
कमनासन कमला प्रिय देवी,
श्वेतांबरी वर दे एएए,
माँ शारदे तू वरदे,
माँ शारदे वरदे।
वीणा वादिनी सरस्वती माँ,
श्रद्धा सुमन ले अंजलि में,
तुझ को अर्पण करते ए ए,
माँ शारदे तू वरदे,
माँ शारदे वरदे।
स्वरा देवी माँ सरस्वती,
हर शब्द में तू है बसी,
मेरे कंठ को तो स्वर दे,
माँ सरस्वती तू वरदे,
माँ सरस्वती वरदे।
तू ज्ञानकी ज्ञानेश्वरी,
तू कला की देवी माँ सरस्वती,
कर रोशनी दे ज्ञान की,
हम भक्तो को तार दे,
माँ सरस्वती तू वरदे,
माँ सरस्वती वरदे।

एमानुएल दीप

सच के साथ

क्यों हमेशा दूसरों को दोष देता है,
कभी अपने अंदर भी झांक लिया कर।
बेशक, दूसरे गलत हो सकते हैं,
कभी अपनी गलती भी मान लिया कर।
जीवन में मान सम्मान पाना है अगर,
तो दूसरों का भी मान सम्मान किया कर।
तेरे सामने सरे बाजार, लुट रही है मानवता,
मानवता को बचाने, अपना योगदान दिया कर।
अपने कर्मों से मत बदनाम कर देश को,
चल अब अपनी जान, देश के नाम कर।
न चांद से यारी रख, न सूरज से दुश्मनी,
गर इंसान है तो इंसानियत की बात कर।
न कल था, न रहेगा,फिर गुमान क्यों,
आज है, तो फिर आज की बात कर।
झूठ के साथ अंधेरे में क्यों चल रहा है,
सच के साथ चल, मन का 'दीप' जला कर।

नीति अग्निहोत्री

अंकुरण

मन मे छुपे बीज जब अंकुरण
का स्फुरण पाते तो रच देते
सृजन का बहुरंगी अनोखा संसार
साथ ही पाते कई शाखाएं पत्ते
और पुष्प इस विश्वास के सहारे
कि कृपामयी जडों से मिलने वाला
जीवनदाता जल जो कभी भी
सूखने नहीं देगा भावों की एक
अंतर्निहित गतिमान सरिता को।
माध्यम बनेगा शब्दों का आधार
जो रस के रूप में व्याप्त है पूरे पेड में
अपने भावभीने पूरे समर्पण के साथ ।
बीजों का अंकुरण सफल तब होगा
जब किसी के अश्रु पोंछ कर प्रेम से
उसे मुस्कराहटें सौंप दे तो
किसी को जीने की उमंग प्रदान करे
या किसी को अच्छे कार्य करने की
प्रेरणा दें ताकि औरों का हित हो सके।

कुमुद अनंजया

अब लिख दिया तो लिख दिया!

मन का कैनवास था कोरा कोरा,
प्रेम की तूलिका से तुमने उसपर,
होलै होलै अपना नाम उकेरा।
अब कैसे बनाऊ कोई और चित्र
भरे हुए चटक कैनवास पर,
काश कि तुम समझ पाते
मेरी ये विपदा विचित्र।
खैर!
जब लिख दिया
तो लिख दिया!
अब जब भी होगी
मेरी पेशी
मेरा हिसाब,
उस उपर वाले के अदालत मे!
तो मैं भी कह दूंगी,
मेरा मन था
मरजी मेरी !
मैने तुम्हारे इश्क को इबादत।
और तुम्हारे यादों के खंडहर को
मदीना लिख दिया!
अब लिख दिया तो लिख दिया!

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
'सृजन शब्द से शक्ति का'
संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी
अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

संस्मरण- रिवाजो से ऊपर

राजेश्वरी

आज मेरा भी मन कर रहा है की कुछ मन की बात सब से साँझा करू बात,१९८४ की है २४ oct १९८४ दीपावली का दिन था मेरे पति की वाइरल की वजह से ज्यादा तबियत ज्यादा खराब हो गई थी ड्रिप लगाई जो रिएक्शन हो गई उन्हें हॉस्पिटल ले जाया गया वहा भी वो ही इलाज किया जो उन्हें सूट नहीं हुआ और वो सिर्फ ३० वर्ष की उम्र में मुझे और मेरे तीन बच्चों को बेसहारा छोड़ गए।

मैं सिर्फ २७ वर्ष की थी और मेरे बच्चे क्रमश ६,४, और छोटा वाला सवा साल का था मेरी दुनिया अकस्मात ही उजड़ गई थी में संभल नहीं पाई और बेहोशी की हालत में ही रही कभी होश आता भी और फिर से अचेत हो जाती मेरे मम्मी पापा और रिस्तेदार आये और मेरे तीनो बच्चों को अपने साथ ले गए क्योंकि मैं उनको सँभालने की स्थिति में नहीं थी।

१२ दिनों में ही मेरे पति के स्टाफ के लोग बस भर कर मिलने आये उनमें वहा के शिक्षा अधिकारी भी आये थे। उन्होंने मेरे से मिलने की इच्छा जाहिर की पर गांव का माहौल होने से उन्हें मना कर दिया गया की १५ दिन तक में किसी बाहरी पुरुष से नहीं मिल सकती और मुझे वैसे भी अँधेरी कोठरी में रखा गया था वहा बस घर की औरते ही आती थी, ये बात उनको बहुत बुरी लगी और उन्होंने मेरे अंकल को लेटर लिखा की बच्ची को वहा से निकाल वो मर जाएगी और अभी में यहाँ हुं तो उसकी पूरी मद्दद करुगा नौकरी में। मेरे अंकल को बहुत गुस्सा आया पर बड़े अंकल ने उन्हें समझाया की १५ दिन रुक जा फिर देखगें, और जब १५ दिन हो गए उसके बाद मेरी मम्मी और बड़े अंकल दोनों आये और मेरे ससुरजी को समझाया की आज तो सब मद्दद करने को तैयार है बाद मे आप को कोई नहीं पूछेगा, मेरे दोनों जेठ और गांव वाले और दूसरे रिस्तेदारो सब ने मना कर दिया बोले ६ महीने १ साल पहले घर से बहार नहीं जाएगी अब मम्मी को डर था की क्या करे किसी को भी उम्मीद नहीं थी की वो लोग मानेगे पर सब को तब आस्चर्य हुआ और झटका भी लगा की ये क्या हो गया दिन भर सोचते रहने और रोने के बाद मेरे ससुर जी ने घोषणा कर दी की बीनणी जाएगी और अपनी जिंदगी की नई शुरुआत करेगी कोई रूकावट नहीं डालेंगे,

सब उनका चेहरा देखने लग गए क्यों की वो कटर थे उसूलो के रीती रिवाजों के मेरे जेठ नाराज हो गए और विरोध भी किया की आप रिवाज तोड़ रहे हो तो उन्होंने कहा की इन चार जनो का खर्च कौन उठाएगा जो मना कर रहे हो! ये किसी के आगे चाकरी नहीं करेगी और न ही गिड़गिड़ायेगी। ये नौकरी करेगी और स्वाभिमान से जियेगी और अपने बच्चों को पालेगी। फिर मुझे बुला कर रोते हुए मेरे सर पर हाथ रख कर कहने लगे आज से तू मेरी बहु नहीं बेटी है और बेटा में तुझे इस घर से नहीं निकाल रहा हुं इस घर में तेरा घुटनों तक का राज है मैं जीऊगा जब तक कभी खुद को अकेला मत समझना हम सब तेरे साथ है। तेरी और बच्चों की जिंदगी संवर जाये इसलिए भेज रहा हुं। मैं अपने आँसू नहीं रोक पाई और फुट फुट कर रो पड़ी। और सब के विरोध के वावजूद मुझे सुबह तीन बजे अंधरे मे घर से निकाला। आज मैं नौकरी के ३२ साल पुरे कर के सेवा निवृत हो चुकी हुं और ३ साल भी हो गए है और ये सब बाऊजी यानि मेरे ससुर जी की वजह से सब संभव हुआ। आज भी में उन लम्हो को भूल नहीं सकती हूँ मेरे जेठ लोग आज दिन तक भी उस बात से नाराज रहते है मैनें उन लोगो का कहना नहीं माना और चली आयी !

राजेश्वरी जोशी आर्द्रा

भूमिका जैन

जरा गौर कर!

दास्तान ए अजल है,...जरा गौर कर!
इब्तिदा ए फजल है,...जरा गौर कर!!

ये मुहब्बत.....वफा,बेवफ़ाई में तर!
एक मुकम्मल गजल है जरा गौर कर!!

इश्क का ख़्वाब,फिर बात ताबीर की!
रेत का एक महल है,...जरा गौर कर!!

उम्र ताउम्र है.....हां ये सच है मगर!
जिंदगी एक पल है,.....जरा गौर कर!!

क्यूं न..थोड़ा सा नजरें चुराकर मिलें!
आज पहले पहल है....जरा गौर कर!!

देखकर आईना ...अक्स कहने लगा!
ये नकल का असल है,जरा गौर कर!!

सुभाष पाठक 'जिया'

शाम समेट रही है आँचल मेरे पास रहो,
फैल रहा है रात का काजल मेरे पास रहो

चाँद सितारों ने ओढ़ा है बादल का कम्बल
कूक उठी है दिल में कोयल मेरे पास रहो,

तुम बिन जीना भी मुश्किल है मरना भी मुश्किल,
हर मुश्किल का है ये इक हल मेरे पास रहो,

वक्त हुआ क्या, क्यूँ सोचूँ इतवार शनीचर को
मुझको ही चाहो तुम हर पल मेरे पास रहो,

जख्मों को सेको साँसों से फिर मरहम रक्खो,
फिर डालो तुम अपना आँचल मेरे पास रहो,

सब अपने अपने जैसों के पास ही बैठे हैं,
तुम पागल हो मैं भी पागल मेरे पास रहो,

आरती डोंगरे

वसीयत

हालात ने मीना को इतना कठोर कर दिया ये कोई आश्चर्य की बात नही थी। करुणा अपने आँखों मे आँसुओ की धार लिए एक कोने में खड़ी माँ को टकटकी लगाए देखे जा रही थी।
कई दिनों से माँ उसके साथ ही रह रही थी ।
करुणा माँ ने इशारे से करुणा को पास बुलाया
हाँ कहो
मेरे तकिए के नीचे एक कागज रखा है मैं न रहू तो उसे खोलकर पढ़ लेना।
माँ मुझे कुछ नही चाहिए
कुछ देने को है भी नही मेरे पास
आज करुणा को वो बात जैसे ही याद आई तुरन्त तकिए के नीचे से कागज निकाला
मेरा अंतिम संस्कार मेरी करुणा के हाथों ही हो। पढ़कर अवाक करुणा!!!!!
खैर चारो भाइयो को परे रख करुणा ने ही अपनी मां की वसीयत मुताबिक उनका दाहसंस्कार किया।
माँ जो थी।।

आरती डोंगरे

अपूर्वा

डॉ कनक पाणि

गाँव के सबसे रईस परिवार की सबसे छोटी बहु अपूर्वा आज अपने साहसिक कारनामे के कारण सबके चर्चा का विषय बन चुकी थी।

परिवार में सबसे वरिष्ठ अपूर्वा की सास देवयानी देवी की तूती बोलती थी। उनकी मर्जी के खिलाफ कोई कुछ नहीं कर सकती थी। शादी के बाद ससुराल आते ही अपूर्वा को पारिवारिक नियमों से अवगत कराया गया- सुबह पाँच बजे जगकर प्रार्थना सभा में आ जाना है। प्रार्थना के उपरांत बड़ों के पाँव छूकर आशीर्वाद प्राप्त करना है और फिर दैनिक कामों में लग जाना है। रसोई तैयार होने के बाद पहले घर के सारे पुरूष भोजन ग्रहण करेंगे, उसके बाद ही कोई महिला भोजन ग्रहण कर सकती है।

इसके विपरीत अपूर्वा के मायके में सब एक साथ बैठकर भोजन करते थे। सुबह सात बजे नाश्ता और उसके बाद भोजन करने का प्रावधान था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों है लेकिन उसे जेठानियों ने सब कुछ समझा दिया कि उनके ससुर ठाकुर रक्षित सिंह ने ही ये नियम तय किये थे क्योंकि ऐसा पुरखों से चलता आ रहा था। ठाकुर रक्षित सिंह की मृत्यु के उपरांत परिवार की बागडोर देवयानी देवी ने सँभाली और अब तक उसे बरकरार रखा था। आज देवयानी देवी के आदेश पर बड़ी बहू निशा सबसे पहले भोजन का थाल परोसकर उनके लिए लेकर आई थी। देवयानी पहला निवाला मुँह में रखने ही वाली थी कि सामने से आकर अपूर्वा ने उनका हाथ रोक दिया- ठहरिए माँ! आप अभी भोजन नही कर सकतीं, क्योंकि घर के पुरुषों ने अभी भोजन नहीं किया है। माना, पिताजी अब इस दुनिया में नहीं हैं, उनकी जगह आपके आदेश का पालन किया जाता है परंतु आप भी तो हमारी तरह एक स्त्री हीं हैं न? देवयानी अवाक रह गई। आज तक देवयानी देवी के खिलाफ आवाज उठाने की किसी की हिम्मत नहीं हुई थी। ऐसा लगा जैसे किसी ने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया। देवयानी की देवरानियां और बाकी चारों बहुयें डर के मारे थरथर काँप रही थीं परन्तु अपूर्वा दृढ, निर्भीक खड़ी थी। अब देवयानी देवी उठकर खड़ी हो गई। उन्होंने एक बार नजर घुमाकर सबको देखा और घोषणा की- आज से परिवार के सभी सदस्य (स्त्री, पुरूष और बच्चे) एक साथ बैठकर भोजन करेंगे, बाकी सारे नियमों का पालन यथावत किया जाये। सभी ने ताली बजाकर इस नये नियम का स्वागत किया और इस तरह आज पारिवारिक वातावरण खुशियों से भर गया।

- डॉ. कनक पाणि

रेप्यूटेशन

सुधांशु

उस वक्त डॉक्टर मोबाइल पर अपने मित्र के किसी बात पर ठहाका लगा रहे थे जब रमेश अपने कंधे के सहारे अपने पिता को शहर के एक नामी नर्सिंग होम में उनके कक्ष में लाया था। मरीज को देखकर उन्हें हरे पर्दे के भीतर स्ट्रेचर पर लेटने का इशारा किया। रमेश ने अपने पिता को स्ट्रेचर पर लिटा दिया और डॉक्टर के मोबाइल सम्भाषण की समाप्ति की राह देखने लगा। वे किसी दोस्त से अपनी विदेश यात्रा के किस्से बयान करने में मशगूल थे। अगली मेडिकल कॉनफरेंस में हांगकांग साथ चलने का वादा कर वे मरीज की तरफ मुखातिब हुए।

देखने के बाद उन्हें भर्ती कर लिया गया। कई जांच लिखी गईं।

शीघ्र ही वे अनुसन्धान का विषय बन गए। मेडिकल कॉलेज से भी उस नर्सिंग होम में करीब रोज एक नया डॉक्टर आता और बिल्कुल शुरु से रमेश के पिताजी से बीमारी का सिम्पट्म पूछता। उसके या उसकी माँ के बोलने पर कहता, 'भला इनका दर्द आप कैसे बता सकते हैं? मरीज को बोलने दें।' कुछ ज्यादा स्मार्ट डॉक्टर आते तो सभी को बाहर कर देते। कहते, मरीज के पास इतनी भीड़ ठीक नहीं। तभी एक डॉक्टर ने बाहर निकलकर कॉरीडोर से अपने साथी को फोन पर कहा, 'यार, आई हैव कम अक्रॉस अ वेरी इंटरेस्टिंग केस। तुम भी आओ और देखो। अ रेयर केस। सीखने का इससे अच्छा मौका फिर नहीं मिलेगा।'

रमेश पर नजर पड़ते ही थोड़ा झेंपा और चलता बना।

डॉक्टरों का रेला आने लगा। रमेश के पिताजी धैर्य से बीमारी ठीक होने की उम्मीद में अपनी तकलीफें बताते रहे और सभी डॉक्टर उन पर अपना हाथ आजमाते रहे। कोई पेट दबाता तो कोई आँख फैलाकर देखता, कोई जीभ निकालने के लिए कहता तो कोई आला से दिल की धड़कन सुनता। कोई पानी चढ़ाने की बात करता तो कोई खून चढ़ाने की। हर तीसरे दिन हाथ में सिरिंज लिए कम्पाउंडर दरवाजे पर दस्तक देता और आवाज लगाता, 'ब्लड टेस्ट'।

वह कमरे में घुसता, बाँह में रबर कसता, नसें उभारता और सिरिंज चुभो देता। ब्लड लेने के बाद सौ रुपए लेकर चला जाता। रमेश को शक होता क्योंकि जितने ब्लड टेस्ट हुए उनमें से आधे से अधिक के रिपोर्ट उसे नहीं मिले।

दिन बीतने लगे पर रमेश के पिताजी की हालत में कोई सुधार न हुआ। एक दिन सी टी स्कैन के रिपोर्ट देखकर डॉक्टर ने कहा, 'अब इन्हें घर ले जाइए। अब यहाँ का काम खत्म हो चुका है।'

रमेश ने कहा, 'काम कहाँ खत्म हुआ है, अभी उनकी बीमारी यथावत बनी हुई है बल्कि ज्यादा ही बिगड़ गई है और आप उन्हें डिस्चार्ज कर रहे हैं?'

उन्होंने धीरे से परंतु दृढ़तापूर्वक कहा, 'हम रिस्क नहीं ले सकते' और उन्हें मुक्त करने की प्रक्रिया शुरु हो गई।

'रिस्क? कैसा रिस्क?' रमेश ने पूछा

'नर्सिंग होम के रेप्यूटेशन का। आज तक यहाँ एक भी कैजुअल्टी नहीं हुई है।'

सुधांशु शेखर पाठक

लक्ष्मण रामानुज लड़ीवाला

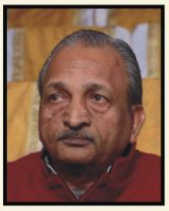

वक्त का दान एक मात्र औषधि

पिता श्री भैंरुबक्स जी के बीमार होने पर पुत्र गौवर्धन ने पारिवारिक वैद्य श्री बाल मुकुन्द जी से कहा-'वैद्य जी पिताजी गुमसुम रहते हैं और खाना-पीना भी बहुत कम हो गया है।'

जीभ, नाड़ी व पेट देखकर वैद्य जी बोले- 'इनको कोई विशेष बीमारी नही है। इन्हें जो चाहिये वह इनको नही मिल रहा'।

आश्चर्य करते हुए गौवर्धन बोला- ''वैद्य जी इनके पास तो किसी चीज की कोई कमी नही है, और न ही कभी इन्होंने हमसे कोई माँग ही की है''।

वैद्य जी- 'देखो गोवर्धन जी, इस अवस्था में इनको कोई धनदौलत आदि की चाहना नही है। क्या तुम कुछ दान करने का वादा कर सकते हो?'

गोवर्धन- 'कुछ दान क्या, मैं पिताजी के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर सकता हूँ।'

वैद्य- 'कोई धन दौलत न्यौछावर करने की जरूरत नही है, गौवर्धन जी! क्या तुम नित्य कुछ समय निकाल, इनके पास बैठकर उनका एकाकीपन दूर करने व स्नेह भाव प्रदर्शित करने हेतु बातचीत करने का वादा करने का वक्त दान कर सकते हो। यही इनकी बीमारी की एक मात्र औषधि है'।

- लक्ष्मण रामानुज लड़ीवाला

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक **18** वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

नितिन श्रीवास्तव

कहानी - जिद

नितिन ने जब से होश संभाला उसने बहुत से मौकों और आयोजनों में बच्चों और बड़ों को मंच पर जाकर पुरस्कार या प्रशस्ति-पत्र लेते देखा था। बचपन से उसके लिए यह बड़ा कौतूहल का विषय था, धीरे-धीरे उसे समझ में आने लगा कि यह उन लोगों को मिलता है जो किसी भी क्षेत्र में कुछ विशेष करते हैं जैसे पढ़ाई में अव्वल, खेल कूद या किसी प्रतियोगिता में विशेष स्थान आदि। अब उसे यह भी समझ में आ रहा था कि क्यों माँ और पिता जी उसे बार बार पढ़ने के लिए कहते हैं और जब उसके नंबर कम आते हैं तो डांटते भी हैं। शायद उसके माँ पिताजी भी चाहते थे कि उसे इस तरह सम्मान मिले। अब उसके अंदर कुछ ऐसा करने की चाहत जागने लगी जिससे उसे किसी तरह कोई पुरस्कार मिले। बहुत सोचने समझने और कोशिश करने के बाद यह तो समझ आ गया कि पढ़ाई के रास्ते तो संभव नहीं है।

कुछ ही दिनों में खेल कूद प्रतियोगिता शुरू होने वाली थी जिसके लिए नाम लिखे जा रहे थे। अपनी यानि पांचवीं कक्षा के लिए जितने भी खेलों में नाम लिखा सकते थे सबमें लिखा दिया क्योंकि संभावनाओं में कोई नहीं छोड़नी थी। सभी खेलों में भाग लिया तो अभ्यास में भी जाना होगा इस चक्कर में पढ़ाई का और भी सत्यानाश हो गया लेकिन अभ्यास में कोई कमी नहीं छोड़ी। कुछ ही समय में नतीजे सामने थे मगर सच कहा जाये तो बहुत उत्साहवर्धक नहीं थे और कहीं चौथे तो नहीं पांचवें स्थान से संतोष करना पड़ा। दोस्तों ने आगे बढ़कर सांत्वना दी जिसे सधन्यवाद स्वीकार किया। अब स्थिति यह थी कि एक तरफ तो यहाँ इतने प्रयासों के बाद भी असफलता हाथ लगी दूसरी ओर पढ़ाई की हालत भी पतली हो गई थी जिसके कारण घर पर दुर्दशा तय थी, ये जानते हुए भी हताशा का नामो-निशान नहीं था क्योंकि जहाँ लोग नितिन की हार देख रहे थे वहीं वो खुद यह समझने की कोशिश में लगा था कि हार हुई क्यों और अगला कौन सा रास्ता सफलता की ओर ले जाएगा।

खैर जल्दी ही मतलब अगले वर्ष ही उम्मीद की एक किरण फिर दिखी।

छठी कक्षा में जब नये विद्यालय में पहुंचे तो वहां का माहौल बहुत अलग था। नया विद्यालय पूरी तरह हिन्दी भाषी और सरकारी था कुछ हद तक यह अच्छा भी था क्योंकि इसी बहाने अंग्रेजी नामक राक्षसी से कुछ समय के लिए बचाव हो गया, अब यहाँ दोबारा अंग्रेजी को शुरू से मतलब वर्णमाला से पढ़नी थी। नया सत्र शुरू होते ही पता चला कि वाद विवाद और लेखन प्रतियोगिता होने वाली थी वो भी हिन्दी में, ये सही मौका जान पड़ता था। इस बार पिछली बार की तरह गलती नहीं की बल्कि एक ही प्रतियोगिता में जोर आजमाइश का निर्णय लिया और लेखन प्रतियोगिता में हिस्सा ले लिया। तरह तरह की किताबें पढ़ी कुछ दोस्तों से भी राय ली क्योंकि प्रतियोगिता में उसी समय पर विषय दिया जाना था और उस पर लिखना था। प्रतियोगिता का दिन भी आ गया और विषय मिला 'दैनिक जीवन में विज्ञान का महत्व'

खूब आराम आराम से ध्यान लगा कर एक अच्छा सा निबंध लिखा। समय सीमा से पहले ही अपना निबंध जमा करा दिया। तीन घंटे के बाद परिणाम घोषित होने थे इसलिए नितिन भी सब बच्चों के खेलने चला गया। परिणाम का समय आ गया सभी फिर से जमा हो गये ।

परिणाम सूचना पट्ट पर लगा दिया गया था। परिणाम देख कर यह तो पता चल गया था कि नितिन को तीसरा स्थान मिला था अब यह तय होना था कि इस बार मंच पर पहुंचने की तमन्ना पूरी होगी या नहीं। प्राध्यापक महोदय ने बताया कि कुल तीस लोगों ने भाग लिया है जिसमें दो अनुभाग यानी कक्षा छह से नौ और दस से बारह में तीन तीन प्रतियोगियों को क्रमशः पहले दूसरे व तीसरे स्थान पर रखा गया है और इन सभी छह प्रतियोगियों को मंच पर बुलाकर पुरस्कृत किया जाएगा। इस घोषणा ने तो जैसे जोश भर दिया क्योंकि सालों के इंतजार के बाद आज तमन्ना पूरी होने वाली थी।

फिर अचानक दोबारा घोषणा हुई कि कुछ कारणों से प्राध्यापक महोदय को कहीं जाना था इसलिए वो दोनों अनुभागों के पहला स्थान पाने वालों को ही मंच पर पुरस्कार दे पाएंगे बाकी लोगों को पुरस्कार अलग से दिया जाएगा। लक्ष्य के इतना करीब पहुंच कर यूँ रोक लगने से एक बार को जोरदार झटका लगा लेकिन मायूस होने की फितरत तो नितिन की कभी थी ही नहीं। अब नये सिरे से दोबारा लक्ष्य साधने की तैयारी शुरू कर दी। अगले छह साल अलग अलग तरीके से कोशिश की मगर सफलता जैसे छू कर निकल जाती थी। बारहवीं पास कर ली, पिताजी की इच्छानुसार इंजीनियरिंग की तैयारी शुरू की और साथ ही महाविद्यालय में विज्ञान विभाग से स्नातक में भी प्रवेश ले लिया ।

अब चीजें बदल चुकी थीं बचपन खत्म हो गया था, सोच का दायरा बढ़ गया था लेकिन एक चीज जो अब भी वैसी ही थी वो था जुनून, लक्ष्य और उसे हासिल करने की जिद। अब तक बहुत सारे तरीके अपनाने और फिर भी सफल न हो पाने के बाद कुछ बातें जो समझ में आईं वो थीं।

लक्ष्य तक पहुंचने के बहुत से रास्ते हो सकते हैं मगर आगे जाने के लिए केवल एक ही रास्ता चुनना होगा।

हो सकता है मेरे लिए मेरा किया काम सबसे अच्छा हो मगर वास्तव में उसे पहचान तभी मिलती है जब काम सबकी नजर में सबसे अच्छा हो।

प्रथम स्थान की प्राथमिकता है बाकी केवल विकल्प है।

अभी भी यह तय नहीं हो पा रहा था कि जो कमी रह गई है उसे कैसे पूरा किया जाये और अब अगला कदम क्या हो?

नितिन और उसका मित्र प्रवीण शाम के समय में नितिन के कमरे में बैठे बातें कर रहे थे।

नितिनः यार हर तरह से कोशिश करके देख लिया मगर जैसे मेरी किस्मत में मंच पर जाकर ईनाम लेना है ही नहीं।

प्रवीणः ऐसी बात नहीं है भाई, क्या है न हर एक चीज का अपना एक वक्त होता है और उससे पहले कुछ नहीं होता।

नितिन की माताजी कमरे में आते हुएः बिल्कुल सही बात है समय से पहले और किस्मत से ज्यादा किसी को नहीं मिलता।

नितिनः आप दोनों के कहने का मतलब है कि मैं किस्मत और सही समय के इंतजार में बैठा रहूँ। नहीं मैं ये किस्मत वगैरह नहीं मानता, मैं सफल नहीं हो पा रहा हूँ तो उसकी वजह सिर्फ यह है कि मैं शायद सही दिशा में प्रयास नहीं कर रहा हूँ या ये कह लो कि सही दिशा मिल नहीं पा रही है।

माता जीः वैसे बात तुम्हारी भी सही है कोशिश करते रहना चाहिए और नये रास्ते ढूंढने चाहिए क्या पता कौन सा रास्ता सही दिशा की ओर ले जाए।

प्रवीणः भाई तुम्हें और कुछ आए न आए मगर लोगों को समझाना अच्छे से आता है, लेकिन समस्या ये है कि समझाने के लिए मंच पर जाकर पुरस्कार नहीं मिलता।

एक बात और है ये जरूरी तो नहीं है कि मंच पर पुरस्कार लेने ही जाया जाए पुरस्कार देने भी तो जा सकते हैं। कुछ ऐसा करो कि तुम्हें पुरस्कार देने के लिए ही बुला ले कोई।

नितिन उसकी बात पर हंस दिया लेकिन उसके जाने के बाद जब गंभीरता से उसकी कही बातों पर गौर किया तो उसे यही रास्ता सही लगने लगा और वो इस दिशा में सोचने लगा। अगले दिन जब प्रवीण आया तो नितिन ने अपने दिल की बात रखी।

नितिनः कल तुमने एक बात कही थी, याद है?

प्रवीणः कौन सी बात, मैं तो बहुत कुछ कहते रहता हूँ, तुम कौन सी बात पकड़ लिए?

नितिनः वही मंच पर जाकर पुरस्कार देने वाली बात।

प्रवीण (कुछ सोच कर) : क्या बात कर रहे हो यार, मैं तो ऐसे ही मजाक कर रहा था। ऐसा कैसे संभव है, हम लोग ठहरे मामूली लोग हमें कौन बुलाएगा पुरस्कार देने के लिए?

नितिनः यही तो बात है, हमें भी पता है कि हमें कोई नहीं बुलाएगा मगर हम तो हमें बुला सकते हैं।

प्रवीणः मतलब?

नितिनः मतलब ये कि हम ही कोई ऐसा कार्यक्रम करते हैं जिसमें कुछ प्रतियोगिताएं हों और फिर जीतने वाले को पुरस्कार हम देंगे।

प्रवीणः जितना सोच रहे हो उतना आसान है नहीं। इस तरह के कार्यक्रम करवाना कोई छोटी मोटी बात नहीं है, बहुत सारे लोग और पैसे चाहिए। अगर दिमाग में कोई योजना है तो बताओ, मैं तो हमेशा साथ हूँ ही।

माताजी चाय लेकर कमरे में आते हुएः क्या ख्याली पुलाव पक रहा है?

नितिनः कुछ नहीं बस ऐसे ही बातें कर रहे हैं। माता जी कमरे में चाय रखकर चली गईं।

नितिनः पूरी योजना तो अभी नहीं बनाई मगर जो सोचा है वो बता देता हूँ,

हम कुछ और लोगों को अपने साथ जोड़ कर एक गैर सरकारी संगठन बनाते हैं और संगठन एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता करवाएगा जिसके विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप एक कप और प्रशस्ति-पत्र दिया जाएगा।

संगठन के उदघाटन समारोह में प्रथम, द्वितीय और तृतीय विजेता को क्रमशः मुख्य अतिथि, संगठन प्रमुख यानी मैं और सह प्रमुख यानी तुम पुरस्कृत करेंगे। शुरू में थोड़ा खर्च करके काम शुरू करना पड़ेगा और बाद में सदस्यता शुल्क और प्रायोजकों की मदद से काम चल जाना चाहिए।

प्रवीणः पहली बात कि कौन लोग हमारे साथ जुड़ना चाहेंगे और वो भी सदस्यता शुल्क के साथ, फिर उसके बाद हम ठहरे नये लोग कौन प्रायोजक हमें पैसा देगा। सुनने में तुम्हारी बात अच्छी लग रही है मगर हकीकत में ये संभव नहीं लगता।

नितिनः संभव तो है मगर मुश्किल भी है। एक बार कोशिश करने में हर्ज तो नहीं है, हो सकता है काम बन ही जाए। सबसे पहले ऐसे लोग ढूंढने होंगे जो हमारे साथ जुड़ने के लिए तैयार हों।

प्रवीणः बात तो सही है कि कोशिश करने में क्या हर्ज, तो फिर 'कल करे सो आज कर', सबसे पहले संगठन का नाम निर्धारित करते हैं। कोई नाम हो दिमाग में तो बताओ।

नितिनः नाम तो कुछ भी रख सकते हैं, 'सहज क्लब' कैसा रहेगा?

प्रवीणः थोड़ा अजीब सा लग रहा है, पहली बार ऐसा कुछ काम करने जा रहे हैं तो नाम किसी भगवान के नाम पर रखते हैं। मेरी राय में शंकर भगवान का नाम शुभ रहेगा। 'सुंदरम क्लब' अच्छा रहेगा अगर तुम्हें ठीक लगता हो तो।

नितिनः मुझे कोई एतराज नहीं है, चलो अभी के लिए यही नाम रखते हैं।

अगले चरण में सदस्यता अभियान शुरू हुआ और अपेक्षा के विपरीत तेजी के साथ लगभग पंद्रह लोग जुड़ गये। पहली बैठक में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता की योजना पर बात हुई और विचार विमर्श में निकल कर आया कि पहले संगठन को पंजीकृत करना चाहिए जिससे कोई कानूनी अड़चन न आये।

पंजीकरण कार्यालय में जाकर पता चला कि क्लब का पंजीकरण फैजाबाद में न होकर लखनऊ में होगा। ये नई समस्या खड़ी हो गई लेकिन वहीं के एक कर्मचारी ने समाधान भी बताया कि अगर क्लब के बजाय संस्था (सोसाइटी) पंजीकृत की जाए तो यहीं काम बन सकता है। नाम में बदलाव किया गया और आखिरकार हमें हमारी संस्था का नाम मिला 'सुन्दरम सोसाइटी क्लब'।

पंजीकरण हो गया और प्रतियोगिता की तैयारी की गई। प्रतियोगिता सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई और उसी दिन घोषणा कर दी गई कि आने वाली ३१ दिसम्बर को संस्था का उद्घाटन समारोह होगा और विजेताओं को पुरस्कार दिया जाएगा।

फिर आया नितिन की जिंदगी का एक बहुत बड़ा दिन, ३१ दिसम्बर १९९८। घमासान तैयारियां और बहुत सारा रोमांच, पूरा नरेन्द्रालय खचाखच भरा था। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बाद मुख्य अतिथि जिलाधिकारी महोदय ने प्रथम पुरस्कार दिया और फिर घोषणा हुई द्वितीय पुरस्कार की और उसे देने के लिए नाम पुकारा गया 'माननीय संस्था अध्यक्ष महोदय श्री नितिन श्रीवास्तव जी कृपया मंच पर पधारें' ये वो शब्द थे जिन्हें सुनने के लिए बचपन से तड़प रहा था, आज बरसों का सपना साकार हुआ नितिन मंच पर पहुंचा और जैसे ही पुरस्कार देने बढ़ा तालियों और लोगों के शोर को सुनकर ऐसा लगा जैसे अचानक ही बहुत बड़ा आदमी हो गया।

प्रस्तुत कहानी सत्य घटना से प्रेरित परंतु कुछ कल्पनाशीलता लिए हुए मेरे जीवन के अत्यंत करीब है।

धन्यवाद-नितिन श्रीवास्तव

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 19 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

सुदीप भोला

ये हमारे सब्र की परीक्षा ही तो है..?

हमारे सब्र के चलते ही तो थे हम छले सदियों,
तपस्या जानकर षड्यंत्र में ही हम जले सदियों,

किसी चंदन पे सर्पों ने किया जब विष वमन..चुप थे..!!
धरा के स्वर्ग में जब तय हुआ अपना मरण..चुप थे..!!

हमारे राम भी पंडाल में बैठे रहे सदियों
हमारी बोटियों पर गिद्ध भी ऐंठे रहे सदियों..

कहानी भी हमे सुनने नही दी सब भुला बैठे
हुआ इतना दमन हम चीख भी अपनी दबा बैठे

हमे मालूम तो हर बार थे कातिल के मंसूबे,
चुने दीवार में बेटे स्वयं के रक्त में डूबे,

हमारी आबरू की बोलियां मीना बाजारों में,
हमारे सूर्य को बन्दी बना रक्खा सितारों ने,

मगर जालिम सुनें जब जब हमारा सब्र डोला है
स्वयं विष पी चुके शिव ने ही तीजा नेत्र खोला है

अभी हनुमान भूले शक्ति मत स्मृत कराओ तुम
हमारे सब्र को मत आजमाओ मान जाओ तुम...

मुकेश सोनी सार्थक

वो खफा है

वो खफा है यही गवाही है
किसी रिश्ते की ये दुहाई है

वो मेरे हक में बोल पड़ता है
उसने यूँ रंजिशें निभाई है

दर्द कायम ओर खफा आँसू
गुमाँ ऐ जज्ब में ये दहाई है

जर्रे जर्रे में तू नजर आया
जाने ये कोन सी पिलाई है

मेरे कातिल सोचना यूँ कभी
देह में किसने जाँ मिलाई है

पहले नींद को नीलाम किया
फिर रात ख्वाब ले के आई है

ख्वाईशें आनो में मिल रही है
मगर मेरी मुठ्ठी में नही पाई है

राम किशोर मेहता

फिर वही चिर परिचित स्वर

आकाश में गूँज उठा
फिर वही
चिर परिचित स्वर
फिर वही डुगडुगी
बजने लगी है।
फिर पैदा हुआ
कोई स्वयंभू शिव
भाग भाग
सम्मोहित भीड़
फिर बढ़ने लगी है।

फिर खोल कर
खड़ा कोई
तीसरी आँख लाल लाल।
धर्म डमरू ताल पर
नाचता बेताल।
बाँट खाने देश को
फिर कोई डायन
इतिहास को
छलने लगी है।

दूर तक छाया है
वैचारिक अंधकार
मानवता के
मापदण्ढ नहीं मिलते।
अवधूतों और अघोरियों के
सत्ता से बने हुए
अवैध रिश्ते।
भूतों ने ओढ़ लिए
कई भद्र चेहरे।
अब तो लगते हैं
राजपथों पर पैशाचिक पहरे।

अस्तित्व को बचाने का
एक मात्र साधन था 'विवेक'
कुण्ठित करने को
भांग जूतियों में
बटने लगी है।

मै बसंत हूँ

अरुण कुमार अरु

मै वो हूँ जो फरवरी मार्च की हवाओं मे मिल जाता हूँ,
मै वो हूँ बगीचे के हर फूलो के साथ खिल जाता हूँ।
मेरे आते ही तुम्हारे एहसास जवां हो जाते हैं,
मेरे आते ही लोग गुजरे हुए ख्यालों मे खो जातें हैं।
मेरे आने की आहट से वो सरसो वाले खेत मुस्करातें हैं,
जब मै आता हू तो तो पंछी भी झूम के गाते हैं।
मेरे आने की खबर से फिजा का रूप निखर आता है,
सुरमयी सी शाम होती है सितारों से आकाश झिलमिलाता है।
कभी छन के आती हुई रोशनी चादनी रात में,
तुम भी खोते तो होगे कभी बीती बात बात में।
तो अब बता भी दू कि मै बसंत हूँ ये बहारें ये नजारे सब मुझसे हैं,
ये जो तुम झूमते हो नाचते हो
सच बताऊ यार ये मेरी खुशियाँ भी तुमसे हैं।

सुदर्शन चक्रधर

दिल्ली में चुनाव है... देश में तनाव है..!

एक बार फिर बड़ी अजीब स्थिति बन गई है। दिल्ली में चुनाव है...और देश में तनाव है। नागपुर के 'रेशमबाग' से लेकर दिल्ली के 'शाहीनबाग' तक परेशानी का आलम यह है कि कल को क्या होगा? कोई नहीं जानता है। कहीं से अफवाहें उड़ रही हैं कि अब दंगे होने वाले हैं!...और सियासी मोहरे नंगे होने वाले हैं! सीएए और एनआरसी के मुद्दे पर समर्थन और विरोध की जहरीली हवा बह रही है। पूरा देश भावनाओं के तीव्र ज्वार में डूबा हुआ है। भारत भर में राजनीतिक षड्यंत्रों का 'कोरोना वायरस' फैला हुआ है... और सरकार है कि ५० दिनों से सिर्फ तमाशा देख रही है। जबकि जगह-जगह विरोध की आग है, कई शहरों में शाहीनबाग है! क्या होगा देश का...?

जब खुद को ज्यादा से ज्यादा वतन-परस्त (राष्ट्रवादी) दिखाने के चक्कर में लोग, जनहित के मुद्दों पर चुप्पी साध लेते हैं...और नेता यह मान लेते हैं कि इन्हें तो ऐसे ही जीने की आदत हो चुकी है, तब लोकतंत्र संकट में दिखता है। दिल्ली में भी ऐसा ही हो रहा है। एक तरफ राष्ट्रवाद का सुनियोजित शोर है, तो दूसरी और 'शाहीनबाग' का जोर है। बीजेपी इसी मुद्दे पर अपनी चुनावी रोटियां सेकने में लगी है। दिल्ली की जनता को कन्फ्यूज कर स्कूल-कॉलेज- शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, बिजली-पानी जैसी मूलभूत जरूरतों को छोड़कर राष्ट्रीय मुद्दों पर वोट देने के लिए उकसाया जा रहा है। लेकिन क्या दिल्ली के समझदार वोटर बहक जाएंगे?...या 'आप' के केजरीवाल को दोबारा वापस सत्ता में लाएंगे?

यकीन मानिए, कुछ नामधारी नेताओं की जुबान में ऐसी खुजली हो गई है, जो खुजाए बिना रुकती नहीं है। इसी खुजली ने अब 'गजकरण और रिंग-वर्म' का भयानक रूप ले लिया है, जिसे रोकने के लिए चुनाव आयोग का 'बैन रूपी मरहम' भी कम पड़ रहा है। औरों की बात छोड़िए, खुद वित्त राज्यमंत्री भरी जनसभा में 'देश के गद्दारों को... गोली मारो सालों को'...जैसा भड़काऊ नारा लगाते हैं, तो दो दिन बाद ही एक सनकी नाबालिग किशोर जामिया मिलिया यूनिवर्सिटी के प्रदर्शनकारी छात्र पर पुलिस की मौजूदगी में गोली चला देता है। विडंबना यह कि तब पुलिस मूकदर्शक बनी रहती है। आखिर माजरा क्या है? क्या यह सीएए-विरोध का साइड-इफेक्ट नहीं है? दूसरी ओर, शरजील इमाम नामक एक छात्र नेता भड़काऊ भाषण देकर असम को भारत से काटने की बात करता है, तो उसे देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया जाता है। कौन जिम्मेदार है इसका?

उधर बीजेपी सांसद प्रवेश वर्मा, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को नक्सली और आतंकवादी बता रहे हैं। उन्होंने सांप्रदायिकता की सारी हदें तोड़ कर कहा कि ये लोग तुम्हारे घरों में घुसकर बहू-बेटियों से बलात्कार करेंगे! आखिर चुनाव के दौरान बलात्कार का भय दिखाने की क्या जरूरत है? क्या यह महिला मतदाताओं का अपमान नहीं है? उन्होंने जहर उगलते हुए यहां तक कह दिया कि ११ फरवरी को दिल्ली में हमारी सरकार बनते ही एक घंटे के भीतर शाहीनबाग खाली करा दिया जाएगा...और सरकारी जमीन पर बनी मस्जिदें तोड़ दी जाएंगी! क्या यह धार्मिक भावनाओं को भड़काने का मामला नहीं है? वहीं भाजपा उम्मीदवार (पूर्व विधायक) कपिल मिश्रा छाती ठोंक कर कहते हैं कि अगर शाहीनबाग में 'मिनी पाकिस्तान' खड़ा होगा, तो ८ फरवरी को दिल्ली के चुनाव में पूरा हिन्दुस्तान खड़ा होगा! समझ में नहीं आता कि दिल्ली के चुनाव को हिन्दू बनाम मुस्लिम और भारत बनाम पाकिस्तान क्यों बनाया जा रहा है?

दरअसल, सीएए को बीजेपी अपने 'ब्रह्मास्त्र' के तौर पर पेश कर रही है। लेकिन इससे देश बंट रहा है। मंदी-महंगाई-बेरोजगारी सहित तमाम समस्याओं को दबाकर देश में अराजकता का माहौल बनाया जा रहा है। देश में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण साफ दिख रहा है। इससे नेताओं को लगता है कि वोटों की मस्त फसल कटेगी। लेकिन ये अराजकता, हिंसा और नेताओं की जहरीली जुबान आखिर देश को कहां ले जाएगी? कवि शैलेश इनायत ने लिखा है -

इल्तजा करूं तो किससे अमन के वास्ते,
हाथ जोड़ सकता हूं बस चमन के वास्ते,
नेताओं इतना तो ना गिरो कुर्सी के लिए...
कुछ तो सोचो जरा अब वतन के वास्ते।

(संपर्क : ९६८९६ २६१०२)

अर्पणा संत सिंह

हे वीणावादिनी, हे हंसवाहिनी

माँ शारदा तू ज्ञान की देवी
वंदना करू बार बार तेरी
तू जीवन की आधार
तू अनुपम कीर्ति की मार्ग
दे जगत को ऐसी बुद्धि
संयम, साधना, संकल्प से
घर घर में चाणक्य आर्यभट्ट
सा बने मानव कोई महान माँ
कर दे सबका उद्धार माँ
हो सब का कल्याण माँ

हे ब्रह्मचारिणी, हे बुद्धिधात्री
हे माँ शारदा तू ज्ञान की देवी
वंदना करू बार बार तेरी
तू जीवन की आधार
जन जन को दे दुर्गा सी बुद्धि
घर घर में जलें ज्योति शौर्य साहस का
अशोक चन्द्रगुप्त सा बने कोई महान माँ
कर दे सबका उद्धार माँ
हो सब का कल्याण माँ

हे वीणावादिनी, हे सुरसम्राटनी
माँ शारदा तू ज्ञान की देवी
वंदना करू बार बार तेरी
तू जीवन की आधार
सृजित कर ऐसा संगीत माँ
जन जन के हृदय में मानवता का ऐसा सूर गूंजें
अहंकार, क्रोध, लोभ, ईष्या, हिंसा का हो नाश
घर घर में महावीर बुद्ध सा बने कोई महान माँ
कण कण हो जाये प्रकाशवान माँ
कर दे सबका उद्धार माँ
हो सब का कल्याण माँ

हे चन्द्रकांति, हे भुवनेश्वरी
माँ शारदा तू ज्ञान की देवी
वंदना करू बार बार तेरी
तू जीवन की आधार
तू ही लक्ष्मी की अवतार माँ
जन जन को दे ऐसी सद्बुद्धि
घर घर में धनकुबेर सा बनें कोई महान माँ
गरीबी भूख बेरोजगारी का हो नाश माँ
कण कण में हो सुख समृद्धि का हो वास माँ
कर दे सबका उद्धार माँ
हो सब का कल्याण माँ

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
'सृजन शब्द से शक्ति का'
संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी
अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

नेहा जी कहिन

पद्मश्री-एकता कपूर

एकता कपूर को जब से रुपद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया है..कितनों के सीने पर नागिनें लोट रही है। सोशल साइट पर तो इस एक पद्मश्री एकता का नाम खूब उफान पर है।

काफी बरसों से टीवी नहीं देख रही, देखती हूं तो बस न्यूज चैनल्स इसलिए सीरियलों के बारे में ज्यादा नही पता, लेकिन घर घर की कहानी, सास भी कभी बहू थी, पवित्र रिश्ता जैसे कुछ सीरियल ५०% तक देखे है।

यह वो वक्त था, जब टीवी की दुनिया में एकता का एक छत्र राज था। इस डेली सोप क्वीन का जलवा चारों ओर था।

नारी सशक्तिकरण की इससे बड़ी मिसाल क्या होगी, कि चॉकलेटी हीरो जितेंद्र की इस बेटी, बालाजी की डायरेक्टर, प्रोड्यूसर ने टीवी की दुनिया मे पुरुष महारथियों के बीच खुद को साबित किया।

इतनी कम उम्र में इतना बड़ा मुकाम शायद अन्य प्रोफेशन में बहुत कम महिलाओं को मिला होगा।

जहाँ इसने स्त्री की कुंठाओ, कुटिलताओं को भुनाया, वही स्त्री के अच्छे स्वरूप को भी पूरा महत्व दिया। तुलसी जैसी बहु किसको नही चाहिए थी। पवित्र रिश्ता की रचना जैसी बेटी, घर घर की कहानी के ओम-पार्वती से समर्पित बेटे बहु, मानव जैसा संस्कारी बेटा किसकी पसंद नही होगी भला?

बुजुर्गों का सम्मान, रिश्तों को जोड़े रखना, संयुक्त परिवार की परम्पराए, त्योंहारों को उत्सव में बदलने की कला, एकता की सीरियल्स ने सिखाई। दर्शकों की नब्ज पकड़ कर रखना, एकता से बेहतर किसी को नही आया ।

बच्चे, युवा हो या बुजुर्ग सबको उसकी बड़ी स्टार कास्ट वाले सीरियल जोड़े रखते थे। आज रात को क्या होगा घर, दफ्तर, स्कूल में उस पर चर्चा रहती। इसके सीरियल ने सबको ड्रॉइंग रूम में एक साथ बैठना, इंतजार करना सीखा दिया।

यह इसके सीरियल का जादू ही था कि जब एक कलाकार की मृत्यु पर घर-घर में स्त्रियों विलाप करती जैसे उनका कोई करीब उनसे दूर चला गया है। गरीब परिवार की कहानी हो या मध्यम वर्गीय सबके दिलों को छुआ। उच्च वर्गीय जीवन के सपने देखने, आगे बढ़ने के लिए महिलाओ बच्चो को प्रेरित किया।

एकता के सीरियल ने नारी को पहचान दी, पुरुष प्रधान समाज में नारी दोयम दर्जे की थी, इसने अपने सीरियल्स में पुरुष को दोयम दर्जे का बना दिया था।

करोड़ों महिलाओं कि नायिका एकता कपूर के साम्राज्य में कर्ताधर्ता सिर्फ महिलाएं ही थी। उन्ही की इर्दगिर्द घूमती थी कहानियां। घर बैठी करोड़ों महिलाओं का मनोरंजन इसने किया, जो जादू DD1 ओर DD मेट्रो भी उन पर नही चला पाए थे।

माना उसके काफी सीरियल बोल्ड थे, पर वो समाज की एक कड़वी सच्चाई भी तो परोसती थी। अवैध रिश्ते इस समाज का छुपा हुआ सच है। सावधान इंडिया, क्राइम पेट्रोल में यही हकीकत हम देखते आए है। हाई फाई सोसाइटी की घिनोनी सच्चाई से भी रूबरू कराया इसने।

सीखने वाले, देखने वाले, पर डिपेंड करता है कि उसने क्या और कितना लेना, सीखना है। सबका अपना अपना दिमाग है, अच्छा बुरा की समझ है। अगर सीरियल से गुमराह होते तो, उससे पहले बॉलीवुड मूवी देखकर लोग डाकू बन जाते या कोई औरत मन्थरा या शशिकला जैसा रूप धारण कर लेती, या सबके जीवन मे एक एक सौतन होती।

किसी को कोमोलिका, तो किसी को तुलसी, पार्वती, प्रेरणा या पवित्र रिश्ता वाली रचना बनना अच्छा लगा। जिनको कुटिलता, मेकअप पसन्द आया उसने वो लिया, जिसको किसी की सहनशीलता ओर सादापन भाया उसने वो लिया।

एकता ने तो बस समाज की सच्चाई दिखाई। हमारे चारों ओर आसपास घर परिवार में एकता के दिखाये सभी किरदार पहले भी ओर आज भी नजर आ जाएंगे।

कुछ अंधविश्वासी सीरियल दिखाकर गुमराह किया, तो लोगो को कल्पना के एक अनोखे संसार मे भी ले गयी।

जब एक लेखिका भूत प्रेत पर काल्पनिक कहानियां लिखे तो हम उसकी तारीफ करते है। जब एक लेखिका बोल्ड विषय पर लिखती है तो हम तारीफ करते है फिर एकता ने भी तो कल्पना बोल्डनेस को भुनाया था।

खास बात यह कि पुरुष कम विरोध कर रहे है, जिन स्त्रियों ने खूब मजे लेकर उनके सीरियल देखे, खूब चटकारे लेकर चर्चाएं की, वही आज उनके विरोध में उठ खड़ी हुई है।

मन बेहद आहत है। एक कलाकार के तौर पर हम उसे क्यों नही देख पा रहे। उसने समाज को क्या दिया या क्या नही यह आंकलन आप स्वंय करे। मैं बस इतना जानती हूं हमारी माँ, मामी, चाची, भाभी सब के चेहरे पर वो मुस्कान लाई, दिन भर की थकान को उतारने का जरिया बने उसके सीरियल। बेसुध सी रहने वाली महिलाएं सजने संवरने लगी, कई त्योहारों में नए रीति रिवाज अपनाने लगी, करवाचौथ, दीवाली, होली, वेलेंटाइन डे, क्रिसमिस की मार्केटिंग भी खूब हुई।

ईर्ष्या, जलन, कम्पीटिशन-एक शाश्वत सत्य है, किसी के काम के प्रति अगर ऐसे भाव सकारात्मक होता है तो प्रतिस्पर्द्धा जन्म लेती है, आगे बढ़ने की तमन्ना, तारीफ में खुद को हम संवारते ही है।

एकता के सीरियल आइना दिखाते हैं स्त्री सत्ता पर क्यों पुरुष सत्ता हमेशा हावी है। रोने धोने और सहानुभुति, संवेदनाएं बटोरने की मानसिकता को भुनाते रहना वह बखूबी जानती है, पैसे कमाने का तेज तर्रार दिमाग एकता के पास है।

हम पांच सीरियल वाली, वो बहनें आज भी गुदगुदाती है, लोगो ने बहुत पसन्द किया। कुछ सीरियल को छोड़ दे तो में एकता की फैन हूँ। शायद महाभारत, जोधा अकबर,

चंद्रकांता जैसे धार्मिक, हिस्टोरिकल सीरियल भी लाई थी पर कम सफल रहे।

बिजनेस करने आई थी फैल होने नही। वो ही उसने दिखाया जो हम सबने देखना चाहा, फिर उस पर फूहड़ता का आरोप क्यों, उसने TV इंडस्ट्री का चेहरा बदल दिया। उसने पुरुष प्रधान इंडस्ट्री में अपने जुनून से जगह बनाई जो कि काबिले तारीफ है। पहले लडकिया बॉलीवुड हीरोइन बनने भागती थी, वो इसके सीरियल में लीड रोल के लिए घर छोड़कर भागने लगी।

एकता कपूर ने देश की अर्थव्यवस्था में सहयोग दिया, हजारों, लाखो लोग के पेट उसके लम्बे स्टारकास्ट ओर **7-8** साल चलने वाले सीरियल्स पालते रहे हैं।

प्रोफेशनल एटीट्यूट वाली, एक बोल्ड लड़की ने इंडस्ट्री में क्रांति ला दी। मैं उसके जज्बे की मुरीद हूँ, अपनी बुद्धिमानी से मध्यमवर्ग की नब्ज पहचानकर, सबको ड्राइंग रूम में एकत्र कर दिया। रिश्तो में करीबी या सम्बन्धो में मिठास जो उसने घोली उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

एकता कपूर को गाली देने वाला स्त्री समाज इस बहाने अपने अंदर ही झांके, उसके सीरियल जैसी कीचड़, कटुता, कुटिलता, कड़वाहट क्या समाज मे नही। अभी गुनगुन थानवी ने अपनी पीड़ा पोस्ट की थी। यानी समाज मे, साहित्य में, वही सब हो रहा है जो एकता ने दिखाया। जिसे लोग ढकना चाहते है, छुपा-ढका सच दुनिया को दिखाती है। बिगबॉस में यही सब लोग चाव से देखते है। टॉप पर रहता है।

एकता एक बेहतरीन, उम्दा व्यापारी हैं। बिजनेस की धुरंधर है। उसको मार्केटिंग करना आता है, वे बाजार की नब्ज को ठीक पहचानती है। एकता को पता है एपिसोड को कहां खत्म करना है ताकि दूसरे दिन आगे की स्टोरी का दिनभर कयास लगे, और शाम को सब परिवार बेसब्री से इंतजार करें।

ट्विस्ट, TRP जैसे शब्द सबसे पहले एकता से ही जुड़े। सबसे बड़ी बात एकता के सीरियल ने रिमोट औरतों के हाथों में थमा दिया। स्त्री अपने हक के लिए, अपनी खुशी के लिए खुलकर बोलने लगी। खुद का वजूद समझने लगी है।

उनको पता लगा कि वो सिर्फ चूल्हे चौके के लिए नही बनी है।उनको सजना भी है, किटी भी करनी है और अपनी पसंद के कोर्स या शोक भी जारी रखने है, फैशन करना, भारी साड़ियाँ, ज्वेलरी, मेकअप, पर्स, ब्लाउज की डिजाइनिंग इसके सीरियल्स देने लगे।

जबरदस्त कास्टिंग से पेयरिंग कमाल की बनती, कलाकार सीरियल में अपने किरदार के नाम से समाज में जाने जाने लगे। मास्टर माइंड एकता कपूर अपने कंटेंट से स्टोरी में बखूबी जान डाल देती, यही वजह की कई सीक्वल ओर रीमेक भी उसने दिये।

हालांकि कुछ लम्बे सीरियल उबाऊ हो जाते, उसकी दादियां १०० नही २०० साल जीती है। महिलाओं को बेबस से अधिक शातिर दिखाया, अफेयर, चार चार शादियां, याददाश्त जाना, लोट आना, भगवान के चमत्कार या भूत-पिशाच व जादू-टोने, पुनर्जन्म २० साल का समंच, बेवजह खींचते जाना। पर यही मसाला तो हम एक मूवी में देखना चाहते हैं।

वह सबसे पहले एक मेहनती स्त्री है। टीवी स्क्रीन पर उनका डंका बज रहा था, एकता कपूर ने भारत को जिस तरह एकता के सूत्र में बांधा उसका उदाहरण आपको इतिहास में भी देखने को नहीं मिलेगा।

जो लोग कहते है फुल मेकअप, जेवर, बनारसी साड़ी में कैसे किचन में काम कर सकती है। नौकर चाकर, भारी साड़ी, उच्च वर्गीय संभ्रांत परिवार में तो हमने यह सब कबसे देखा है जब चूल्हे थे, अब तो फिर भी गैस, मॉड्यूलर किचन है। पवित्र रिश्ता में साधारण परिवार की कठिनाईयां दिखाई तो आम आदमी उससे कनेक्ट करने लगा। मानव और अर्चना की जोड़ी, वो गरीब मराठी परिवार, उनकी दुख तकलीफें सब को भायी।

भारतीय संस्कृति की धरोहर रहे संयुक्त परिवार, हमारी संस्कृति बड़े बुजुर्गों का सम्मान और पूजा पाठ, व्रत उपवास को इस डेली सोप क्विन्न ने पुनः जिंदा किया।

१००,१५० से ज्यादा सीरियल बनाने वाली एकता कपूर पर आरोप है कि उसने घर तोड़ने वाले सीरियल्स बनाए ।मुझे बताए आपकी जानकारी में इसके सीरियल देखने से कितने घर टूटे। बल्कि बॉलीवुड हीरोइन की तरह ही इसके सीरियल की अभिनेत्रियां घर घर मे पहचानी जाने लगी। इसके जबरदस्त कंटेंट ने लम्बे पीरियड के सीरियल दिए, लाखो लोगो को रोजगार देकर इसने भी समाज मे योगदान दिया।

हँसी आती है उन की सोच पर जो कहते है कि स्मृति ईरानी की वजह से यह पद्मश्री मिला, पर मेरा मानना है यह एकता की योग्यता का पुरस्कार है, अभी क्यों उसको तो कबसे पद्मश्री मिल जाना चाहिए था। टीवी इंडस्ट्री में दूसरी कोई महिला आज तक भी नही है। वो मील का पत्थर थी जिसने कई रिजेक्शन, फेलियर सहकर अपना एक मुकाम बनाया।

इस तरह उसके टेलेंट का मजाक न उड़ाए, उसका और इस सम्मान का कद छोटा ना करें। आप स्वयं एक स्त्री है, आप जानती है पुरुष के मुकाबले स्त्री को किसी भी फील्ड में ज्यादा कम्पीटिशन मिलता है। उसने इस चुनोती को स्वीकारा, लोगों ने पसंद किया, तभी वो आगे बढ़ी, निश्चित ही वो पद्मश्री की हकदार हैं। शत प्रतिशत हकदार है मेरी नजरों में,..!

नेहा नाहटा, दिल्ली

गीत

एक जरा ठंडी हवा आने के बाद

दिनेश 'देहाती'

खयाल अब हमारे बहकते बहुत है,
इच्छा के पंछी चहकते हैं बहुत है,
झिझकने लगी उम्र भी बढ़ने से अब,
मोहब्बत के गुलशन महकते बहुत है।
एक जरा ठंडी हवा आने के बाद...

लफ्जों की पतझड़ जुबानी जंग,
इरादे बड़े हैं मगर दिल है तंग,
बदली बदली है चमन की हवा,
है नफरत की आंधी में दुबकी उमंग।
एक जरा ठंडी हवा आने के बाद...

करेंगे हम कोशिश निकालेंगें हल,
यकीं है दोस्त हम बदल देंगे कल।
सरहदें जब पुकारेगी हमको कभी,
नजर आयेंगे सरफरोशों के दल,
एक जरा ठंडी हवा आने के बाद...

प्रकृति का चक्र है विकृत न हो देखना,
कोई अपना तिरस्कृत न हो देखना,
हम ही सारथी हैं हम ही पहरेदार,
कोई गलत इंसान उपकृत न हो देखना।
एक जरा ठंडी हवा आने के बाद...

दिसम्बर एवं जनवरी संयुक्तांक 21 वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तराशब्दशक्ति वारासिवनी व शब्दसुगंध नागपुर का शब्द कोविद सम्मान

दिनांक 22/12/2019 स्व. विश्वनाथ राय बहुउद्देशीय संस्था शब्द सुगंध के तत्वावधान में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेई जी के जन्मदिवस पर उनकी स्मृति में वार्षिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अंतराशब्दशक्ति प्रकाशन की सक्रिय सहभागिता रही ४५ पुस्तकों का विमोचन और ८० से अधिक प्रतिभाओं का एक साथ सम्मान का यह भव्य आयोजन आ. शेखर अस्तित्व की अध्यक्षता, आ. सौरभ सुमन के मुख्य आतिथ्य, आ. समकित सुराना के विशिष्ट आतिथ्य, आ. दिनेश देहाती जी के कुशल संचालन एवं डॉ वसुंधरा राय एवं डॉ प्रीति सुराना के संयोजन में एल बी होटल में संपन्न हुआ।

सुपर हिट फिल्म संजू के गीतकार 'शेखर अस्तित्व जी' ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। स्वस्थ भारत अभियान के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य शेखर अस्तित्व विगत १५ वर्षों से मायानगरी मुम्बई में निरन्तर लेखन में सक्रिय शेखर अस्तित्व रामायण, जय श्रीकृष्णा, मीरा, महावीर हनुमान, शनिदेव, बजरंगबली, साईबाबा, महादेव, पोरस, नव्या आदि २७ से ज्यादा मेगा सीरियल्स में गीत लिख चुके हैं। अभी तक ३००० से ज्यादा गीत लिख चुके गीतकार शेखर अस्तित्व ने फिल्म रॉकी हैण्डसम, इश्क क्लिक, माय फ्रेण्ड्स दुल्हनिया सहित अनेक फिल्मों एवं एलबम्स में भी गीत लिखे हैं।

मुख्य अतिथि 'सौरभ सुमन' जी ने अपने भाषण से सभा में उपस्थित सभी का मन मोह लिया। कवि दुष्यंत जी द्वारा लिखित मुक्तक ष्रहनुमाओं की अदा पे फिदा है दुनिया इस बहकती दुनिया को संभालो यारों, कैसे नही होगा आकाश में सुराख एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारोंष पढ़कर उन्होंने संस्था के कार्यो के लिए बधाई दी थी। सुप्रसिद्ध हिंदी न्यूज चैनल पर प्रसारित कवि युद्ध के संचालक व देश के चुनिन्दा मंच संचालकों में सौरभ सुमन का नाम आता है। चाहें वह नांदेड (महाराष्ट्र) की दो लाख की भीड़ का कवि सम्मलेन हो या दिल्ली के फिक्की अहडिटोरियम के चुनिन्दा श्रोता। चाहें वह BITS पिलानी, सागर विश्व-विद्यालय, IIT, IIMT, MIET, BIT Engineering College के छात्र-छात्राएं हों या मेला नौचंदी, नैनवा, जयपुर, हरदा महोत्सव के सार्वजानिक मंच सभी पर उनके मन्त्र-मुग्ध कर देने वाले संचालन की महक बिखरी हुई है।

कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती दीप प्रज्वलन से सभी गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया तत्पश्चात सरस्वती वंदना पर गुरू प्रियंका अभयंकर जी के विद्यार्थियों द्वारा कत्थक नृत्य की मनभावन प्रस्तुति दी गयी। अंतर्राष्ट्रीय भरतनाट्यम नृतक ऋषीकेश पी पोहणकर द्वारा भरतनाट्यम का मनोहरम नृत्य पेश किया गया।

डॉ.वसुंधरा राय द्वारा संस्था के माध्यम से सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में सभा में उपस्थित सभी अतिथियों को जानकारी दी व समाजसेवा के अपने दृढ़ संकल्प को दोहराया।

'विश्वपुष्प सम्मान'

शब्द सुगंध संस्था द्वारा अपने अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए श्री शेखर अस्तित्व, श्री सौरभ सुमन जी व डॉ.प्रीति सुराना को साहित्यिक विश्वपुष्प सम्मान, समाजिक सेवाओं में संलग्न श्री हितेश नंदकुमार बनसोड़ जी व श्री भोला नत्थुलाल गुप्ता जी को सामाजिक विश्वपुष्प सम्मान तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में कत्थक नृत्यांगना गुरू प्रियंका अभयंकर जी को सांस्कृतिक 'विश्वपुष्प सम्मान' से सम्मानित किया गया।

'साहित्य शिरोमणि सम्मान'

अन्तरा शब्द शक्ति की ओर से आ. शेखर अस्तित्व, आ. सौरभ सुमन, आ. दिनेश देहाती, डॉ. वसुंधरा राय को साहित्य शिरोमणि सम्मान से सम्मानित किया गया।

'शब्द सारथी सम्मान'

अन्तरा शब्दशक्ति की ओर से आ. संदीप सोनी और आ. राजेश पटले को 'शब्द सारथी' सम्मान से सम्मनित किया गया।

'अन्तरा शब्दशक्ति गौरव सम्मान'

डॉ रंजना श्रीवास्तव, डॉ मनोरमा गुप्ता, प्रीति हर्ष एवं श्रीमती उमा सुहाने को 'अन्तराशब्दशक्ति गौरव सम्मान' से सम्मनित किया गया।

'शब्द कोविद सम्मान'

स्व. विश्वनाथराय की स्मृति में आयोजित पुस्तक प्रकाशन एवं विमोचन हेतु देश के भिन्न भिन्न राज्यों से पधारे सभी साहित्यकारों को 'शब्द कोविद सम्मान' में स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया जिसमें डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे, मधु सिंघी, साधना छिरोल्या, विवेक असरानी, तेजकरण जैन, कृति गुप्ता, सीता गुप्ता, किरण टाटिया, रंजना श्रीवास्तव, डॉ. कविता परिहार, संजय बर्वे, रूपाली बहेती, डॉ. अरूणा अंचल, डॉ. सपन सिन्हा, अनुराग श्रीवास्तव 'मलय', नंदिता मनीष सोनी, गौरी कनौजे, धनेश्वरी देवांगन 'धरा', लता नायर, संतोष गर्ग, कृष्ण शरण पटेल, हेमलता शर्मा, किरण मोर, डा. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया), उमा सुहाने, मंजू सरावगी, तनवीर खान, सीमा प्रधान, ए. एन. पी. सिन्हा, आरती तिवारी 'सनत', संतोष कुमारी 'संप्रीति', अनुराग दीक्षित, पूनम कतरियार, प्रीति हर्ष, नागपुर, डॉ आशु जैन, सीमा सुनील काचोरे, हेमलता मिश्र 'मानवी', डॉ. चेतना उपाध्याय, राजकुमार यादव, अजय 'बेबस', सुमित अग्रवाल को सम्मलित किया गया। तत्पश्चात स्व. विश्वनाथ राय बहुउद्देशीय संस्था को समय समय पर सहयोग करने वालों का सम्मान भी किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से श्री प्रकाश कांबले रेशम मदान कवि दिनेश देहाती, अन्तरा शब्दशक्ति से समकित सुराना, ऋषिकेश.पी. पोहणकर, बीजेपी युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष सौरभ झा डॉ. जया छाबरा, मनीषा मालवीय और शिवांगी भट्टाचार्य का शामिल हैं तथा इंदिरा किसलय जयमाला तिवारी, दयाशंकर मौन, संगीता कुमार, संतोष बुद्धराजा, जेसी भूषण और जेसी मानिक धोने विशेष रूप से सम्मलित रहे। अंतराशब्दशक्ति डॉ. प्रीती सुराना जी ने सभी का अनोखे रूप से आभार प्रगट ४५ प्रकाशित पुस्तकों के नाम पर आधारित कविता पढ़कर किया। सभी के सहयोग से कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

सातवाँ अंतरराष्ट्रीय सोशल मीडिया सम्मेलन सार्थक सानंद सम्पन्न हुआ।

आ. किशोर श्रीवास्तव जी के 'हम सब साथ साथ' के इस आयोजन में अन्तरा शब्दशक्ति की विशेष सहभागिता रही।

स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं प्रमाणपत्र अन्तरा शब्दशक्ति की संस्थापक डॉ प्रीति सुराना द्वारा दिये गए।

अन्तरा शब्दशक्ति की महासचिव कीर्ति वर्मा एवं सदस्य वंदना दुबे को भी विशिष्ट प्रतिभा सम्मान दिया गया।

- सभी प्रतिभागियों को मिला विशिष्ठ प्रतिभा सम्मान।
- सुरेंद्र सिंह राजपूत को इंजी. आशा शर्मा द्वारा दिया गया गोवर्धन चौमाल स्मृति सम्मान।
- किशोर श्रीवास्तव जी एवं डॉ प्रीति सुराना को हम सब साथ साथ के सौजन्य से संस्कृति की उपाधि एवं सारथी सम्मान से सम्मानित किया गया। (जिसके लिए अन्तरा शब्दशक्ति की महासचिव कीर्ति वर्मा का विशेष आभार)

दो दिवसीय सातवाँ अंतराष्ट्रीय सोशल मीडिया मैत्री सम्मेलन एवं सम्मान समारोह २०१९ भीलवाड़ा के विनायक विद्यापीठ भुणास में धूमधाम से आयोजित हुआ। जिस में देश-विदेश के अपनी कला में माहिर विभिन्न क्षेत्र के कलाकारों ने भाग लिया। चित्र प्रदर्शनी, विमोचन, नृत्य, गायन, प्रहसन, मिमिक्री, बांसुरी वादन, काव्य पाठ, परिचर्चा जैसी अनेक कलाओं का बहुत ही उत्कृष्ट प्रस्तुतिकरण हुआ।

भारत के अलावा, नेपाल, फिजी, शिकागो से भी प्रतिभागी शामिल हुए। इस कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों को अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु 'विशिष्ट प्रतिभा सम्मान' से सम्मानित किया गया।

ये सम्मान देश के प्रख्यात साहित्यकार व आचार्य आ. विनोद बब्बर जी, आ. देवेंद्र कुमावत जी, फौजी भाईयों के पसंदीदा कवि आ. योगेन्द्र शर्मा जी, सहित्य मंडल नाथद्वारा के प्रसिद्ध साहित्यसेवी आ. श्यामप्रकाश देवपुरा जी, 'हम सब साथ साथ' के राष्ट्रीय संयोजक आ. किशोर श्रीवास्तव, अन्तराशब्दशक्ति की संस्थापक प्रीति सुराना, संयोजक आ. सुरेंद्र सिंह राजपूत, इंजी. आशा शर्मा, आ. अंजू मोटवानी, आ. सुषमा भंडारी, आ. उमाशंकर मिश्र जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

आयोजन स्थल, भोजन एवं आवास व्यवस्था सहित कार्यक्रम की समस्त आधारभूत व्यवस्थाएं आदरणीय विनोद बब्बर जी और श्री देवेन्द्र कुमावत जी ने की। परंपरा को जीवन करने में राज कुमावत जी सहित विनायक विद्यापीठ ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

अन्तरा शब्दशक्ति इस आयोजन का विशेष हिस्सा बन सका उसके लिए आयोजक मंडल सहित सभी प्रतिभागियों के आभार।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
'सृजन शब्द से शक्ति का'
संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी
अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

ठाकुर दास 'सिद्ध'

नहीं कहीं तकरार चाहते, हम भारत के लोग।
समता का व्यवहार चाहते, हम भारत के लोग।
अच्छे दिन हों, अच्छी रातें, अच्छी सुबह-ओ-शाम,
अच्छा कारोबार चाहते, हम भारत के लोग।
कोई आ कर जहर न घोले, न हो आहत प्रीत,
एक रहे परिवार चाहते, हम भारत के लोग।
झंडा ऊँचा रहे हमारा, सारे जग में मान,
एक नहीं सौ बार चाहते, हम भारत के लोग।
सबको एक बराबर माने, सबसे हो सद्भाव,
ऐसी ही सरकार चाहते, हम भारत के लोग।
न हों जात-धरम के झगड़े, हो आपस में मेल,
'सिद्ध' परस्पर प्यार चाहते, हम भारत के लोग।

उपेन्द्र सिंग 'सुमन'

भोजपुरी गीत

हमार देशवा

हमार देशवा ह दुनियाँ क सिंगार गोरी ना।
हउवे कोटि-कोटि कंठन क हार गोरी ना।
पर्वत हिमालय जेकर करें हो रखवारी।
ओकर जमनवा ई का हो बिगारी।
छिपल शक्ति हउवे हिन्द में अपार गोरी ना।
भोरवे सूरज जेकर आरती उतारेलंय।
सागर महान जेकर पाँव हो पखारेलंय।
तनि देखा एकर अजब चमत्कार गोरी ना।
जहाँ हो जनम लिहलंय राम अउर सीता।
लोगवा सुनेलं जहाँ रामायण गीता।
गंगा जमुना क लहरे जहाँ धार गोरी ना।
बिस्मिल भगत जेपर जान हो लुटवलयं।
खुदीराम कुँवर सिंह शीश हो चढवलयं।
लड़बंय हमहूँ हो लड़ईया आर-पार गोरी ना।
राणा शिवाजी अउर झांसी क रानी।
केकर-केकर गाथा ये गोरिया बखानी।
दिहल जिनगी ई उनकर उधार गोरी ना।
इतिहास जेकर बड़ाई हो गावेलंय।
वेद अउर पुराण जेकर कथा हो सुनावेलंय।
'सुमन' गावें जेकर गीत अउर मल्हार गोरी ना।

आर्यावर्ती सरोज 'आर्या'

बस तुम इतना याद ये रखना हिन्दुस्तान तुम्हारा है।
भिन्न-भिन्न के फूल भरें हों गुलशन सबसे प्यारा है।।
इस गुलशन को महकाने को सींचा अमर शहीदों ने।
हर कतरा कुर्बान किया है लहू का वीर सपूतों ने।।
इनकी शहादत जाए न खाली, बस यूं ही बेकार कहीं,
जिस भूमि की खातिर सबने अपना जीवन वारा है।।
बस तुम इतना याद ये रखना हिन्दुस्तान तुम्हारा है।
कमी नहीं है इस माटी में छुपे हुए गद्दारों की।
दुश्मन के टुकड़ों पर पलते टट्टू ऐसे भाड़ों की।।
देश सुरक्षित रखना इनसे निगल न जाए देश कहीं,
हर प्यारी चीजों से हमको देश हमारा प्यारा है।।
बस तुम इतना याद ये रखना हिन्दुस्तान तुम्हारा है।।
हिन्दू,मुस्लिम,सिख,ईसाई सब क्यारी हैं फूलों की।
नफरत फैलाने वालों के भेंट चढ़े सब भूलों की।।
देखो बचकर इनसे रहना बहक जाना कभी कहीं,
इनके वतनफरामोशी से बिखरा वतन ये सारा है।।
बस तुम इतना याद ये रखना हिन्दुस्तान तुम्हारा है।
भिन्न-भिन्न के फूल भलें हों गुलशन सबसे प्यारा है।।

नील मणि पाण्डेय

प्रिय स्वदेश गणतंत्र हमारा ,
सकल राष्ट्र में सबसे न्यारा।
अमर पूर्वजों की थाती यह,
हमको है प्राणों से प्यारा।।
सदा पूज्य अभिनन्दनीय है,
हम सबकी यह भारतमाता।
चाह यही हर जनम यहाँ पर,
हमको देता रहे विधाता।।
गीता, गंगा, राम, कृष्ण की,
साक्षी है अति पावन धरती।
अपनी पुण्य कीर्ति के कारण,
जहाँ नहीं आत्मायें मरती।।
जनम जनम व पुनर्जन्म की,
चाहत लेकर जाऊँगा।
बार बार इस धरती पर ही,
लौटके वापस आऊँगा।।

पूनम (कतरियार)

हम आजादी को मानते हैं,
अपनी शक्ति पहचानते हैं
टुकड़े टुकड़े गैंगवालें सुन
तेरी औकात भी जानतें हैं।
भले मत-भेद हो जायेगा,
कभी विवाद हो जायेगा,
पर दाल न गलेगी तुम्हारी,
मन-भेद न कभी हो पायेगा।
यह गणतंत्र हमारी शान है,
यह संविधान हमारी जान है
चूम रहा है जो व्योम तिरंगा,
वह तिरंगा हमारी पहचान है।
इस तिरंगे के हैं दीवाने सब,
मरने को आतुर,परवाने सब,
लिपटा हो तन, छोड़ें जब जहां,
हैं ऐसे-ऐसे इसके मस्ताने सब।
यह सीने में हमारे लहराता है,
दुश्मन का कलेजा थर्राता है,
दिल बाग-बाग हो जाता है
जब लाल किले पर फहराता है।

सुरेश नायक

जय गणतंत्र

वंदन है, हे मातृभूमि।
तुम्हें समर्पित, जन, गण, मन,
तुम्हें समर्पित, वीरों का जीवन
मां तुम्हें समर्पित हैं प्राण।
तेरा आराधन करते सर्वदा
रक्त से सींचेंगे मां हम सदा
राष्ट्रध्वज का गौरव गान।।
गर्व हमें, हम है भारतवासी।
मां भारती तू है अविनाशी।
राष्ट्रधर्म सर्वोपरि, देश है महान।
तेरा ऋण न चुका पाएंगे।
तेरी रक्षा में जान लुटाएंगे।
जय गणतंत्र, जय संविधान।।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

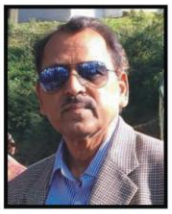

'मंगल' जितेंद्र

सारे जहां से अच्छा
हिंदुस्तान हमारा
हम सो रहे थे अब तक
उठने का दिन है आया
ये चील कोए अब तक
खाते रहे हैं गुप चुप
होकर के मोटे तकड़े
डराते रहें है अब तक
इनको उड़ा कर अपना
घर अपना हम बचाले
सारे जहां से अच्छा
फिर से..हिन्दुस्तान बनालें
न कोई दुश्मनी है
न कोई भेद भाव
खाते हैं जिस जमीं का
पीते हैं जिसका पानी
वो मां है वतन है अपना
इस पर है जां लुटाना
बस बात भी यही है
इतना सा है बताना
सारे जहां से अच्छा
फिर से... हिन्दुस्तान बनालें

आओ करें अहद सब
मिलजुल रहें हम सब
कीड़े मकोड़े और घुन
लिपटे हैं जो बदन से
उनको अलग कर खुद से
ठिकाने उन्हें लगा दें
सारे जहां से अच्छा
फिर से.... हिन्दुस्तान बना दें
लगता है गर बुरा ये
जिस भी किसी को भाई
वो भी नया ठिकाना
कहीं और जा बनालें
सारे जहां से अच्छा
फिर से ... हिन्दुस्तान बनाले
एनिय्या कनिहैया जैसे
जयचंदो को मिलकर भगा दो
महबूबा और ओवैसी जैसों को
गुमनामी में सुला दो
कुछ भांड मीडिया वाले
और दारू के अड्डे वाले
सब को देश से निकालो
खिलाकर के मुफ्त भोजन
ये सांड हमने पाले
ये है नहीं किसी के
न बेकार उम्मीद इनसे पालें
भगा कर के इनको यहां से
सुंदर जहां बनालें
सारे जहां से अच्छा...
फिर से..हिन्दुस्तान बनाले

बिमल तिवारी 'आत्मबोध', देवरिया

आईये मनाए अपना "गणतंत्र"
हर बार की तरह इस बार भी
खानापूर्ति करें,
झण्डा रोहण करके
संविधान की कसमें खा करके
मगर जो हैं असल मे "गणतंत्र"
जिसमें संविधान की कसमें खाने वाला
करता हैं गण के ऊपर अत्याचार
छिनता हैं जीने का अधिकार
गला दबाता हैं बोलने से
निजता बार बार भंग होती हैं
गनतंत्र के दखल देने से
स्वतंत्रता भी सबके लिए नहीं
बस कुछ लोगों के लिए सिमट गई
कुछ लोग जो चाहे, कर सकते हैं
मगर बहुत लोग तो कुछ करने को सोच भी नही सकतें
क्योंकि करने के लिए चाहिए 'धन'
जो आता हैं काम से
और इस गणतंत्र के पास काम ही नहीं है
लोगों को देने के लिए
काम मांगने पर लोगों की आवाज दबाई जाती हैं
पहले झूठें वादे नारे विज्ञापनों से
नहीं तो बंदूक के नालों से
गन के बल पर बन्द की जा रही हैं
आवाजें विरोध की
गन पर छीन लिया जा रहा हैं मासूमों के हाथ के खिलौने
गन से ही कि जा रही है औरतें अब बेइज्जत सड़कों पर
पूरा भारत गिरफ्त में आ गया है अब गनों के
इसीलिए मैं कहता हूँ ,यह हैं "गणतंत्र",
मान लीजिए और आईये मनाइए
हर बार की तरह
इसबार भी इसे मानकर "गणतंत्र दिवस"।।

छब्बीस जनवरी
छब्बीस जनवरी...

कैलाश चन्द्र यादव

छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी
छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी
कैसी हवा चली सबको दिशा मिली
छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी
भारत का संविधान हुआ है शुरू जहॉ से
बाबा भीमराव देखो लाये कहाँ कहाँ से
वीरों की सुन के गाथा दिल बैठ बैठ जाये
चढ़ गये हैं फांसियों पे हंसते हुए यहॉ पे
शमा आजादी की बुझे न फिर कभी
छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी
कैसी हवा चली सबको दिशा मिली
छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी
देखा नहीं है मुड़कर चले आसमां में हम अब
हमें विश्व ने है जाना ऐसे हमारे करतब
नहीं हम हैं इतने बुजदिल घुड़की से काँप जायें
सीनों पर जख्म इतने सहते रहेंगे कब तक
करने मुकाबला अब सेनायें चल पड़ी

छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी
कैसी हवा चली सबको दिशा मिली
छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी
जमकर लगाओ नारा हिन्दोस्तां हमारा
हिन्दू है या मुस्लिम हर भाई हमको प्यारा
छोड़ो ये राजनीति एक देश के वासिन्दे
हम राम के उपासक अल्लाह हमको प्यारा
मिलकर आज मनायें धड़ी है खुश भरी
छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी
कैसी हवा चली सबको दिशा मिली
छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
'सृजन शब्द से शक्ति का'
संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी
अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति ने मनाया गणतंत्र दिवस

सामाजिक एवं साहित्यिक संस्था 'अन्तरा शब्दशक्ति' के स्थानीय सदस्यों ने मनाया गौवंश रक्षण समिति के कर्मचारियों के साथ गणतंत्र दिवस।

संस्था के संस्थापक एवं कोषाध्यक्ष समकित सुराना जी ने ध्वज फहराया। संरक्षक संजय रूसिया जी, उपाध्यक्ष अदिति रूसिया जी, मीडिया प्रभारी संदीप सोनी जी, जिला संयोजक सौरभ संचेती जी, कार्यकारिणी सदस्य टीना सोनी जी, जैनम सुराना, जयति सुराना, शुभ संचेती सहित गौशाला के समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने राष्ट्रगीत और जयहिंद, जय भारत के उदघोष के साथ उल्लासित होकर ७१वाँ गणतंत्र दिवस मनाया।

गणतन्त्र दिवस

गणतन्त्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है जो प्रति वर्ष २६ जनवरी को मनाया जाता है। इसी दिन सन् १९५० को भारत सरकार अधिनियम (एक्ट) (१९३५) को हटाकर भारत का संविधान लागू किया गया था। एक स्वतंत्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान को २६ नवम्बर १९४९ को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया और २६ जनवरी १९५० को इसे एक लोकतांत्रिक सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया था। २६ जनवरी को इसलिए चुना गया था क्योंकि १९३० में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई९ एन९ सी९) ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया था। यह भारत के तीन राष्ट्रीय अवकाशों में से एक है, अन्य दो स्वरतंत्रता दिवस और गांधी जयंती हैं।

गणतन्त्र दिवस का इतिहास

सन् १९२९ के दिसंबर में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर इस बात की घोषणा की गई कि यदि अंग्रेज सरकार २६ जनवरी १९३० तक भारत को स्वायत्तयोपनिवेश (डोमीनियन) का पद नहीं प्रदान करेगी, जिसके तहत भारत ब्रिटिश साम्राज्य में ही स्वशासित एकाई बन जाने उस दिन भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के निश्चय की घोषणा की और अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ किया। उस दिन से १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्त होने तक २६ जनवरी स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। इसके पश्चात स्वतंत्रता प्राप्ति के वास्तविक दिन १५ अगस्त को भारत के स्वतंत्रता दिवस के रूप में स्वीकार किया गया। भारत के आजाद हो जाने के बाद संविधान सभा की घोषणा हुई और इसने अपना कार्य ९ दिसम्बर १९४७ से आरम्भ कर दिया। संविधान सभा के सदस्य भारत के राज्यों की सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के द्वारा चुने गए थे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर, जवाहरलाल नेहरू, डह राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद आदि इस सभा के प्रमुख सदस्य थे। संविधान निर्माण में कुल २२ समितीयां थी जिसमें प्रारूप समिति (ड्राफ्टींग कमेटी) सबसे प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण समिति थी और इस समिति का कार्य संपूर्ण 'संविधान लिखना' या 'निर्माण करना' था। प्रारूप समिति के अध्यक्ष विधिवेत्ता डॉ भीमराव आंबेडकर थे। प्रारूप समिति ने और उसमें विशेष रूप से डह. आंबेडकर जी ने २ वर्ष, ११ माह, १८ दिन में भारतीय संविधान का निर्माण किया और संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को २६ नवम्बर १९४९ को भारत का संविधान सुपूर्द किया, इसलिए २६ नवम्बर दिवस को भारत में संविधान दिवस के रूप में प्रति वर्ष मनाया जाता है। संविधान सभा ने संविधान निर्माण के समय कुल ११४ दिन बैठक की। इसकी बैठकों में प्रेस और जनता को भाग लेने की स्वतन्त्रता थी। अनेक सुधारों और बदलावों के बाद सभा के ३०८ सदस्यों ने २४ जनवरी १९५० को संविधान की दो हस्तलिखित कहपियों पर हस्ताक्षर किये। इसके दो दिन बाद संविधान २६ जनवरी को यह देश भर में लागू हो गया। २६ जनवरी का महत्व बनाए रखने के लिए इसी दिन संविधान निर्मात्री सभा (कांस्टीट्यूएंट असेंबली) द्वारा स्वीकृत संविधान में भारत के गणतंत्र स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई।

गणतंत्र दिवस समारोह

२६ जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्र ध्वज को फहराया जाता हैं और इसके बाद सामूहिक रूप में खड़े होकर राष्ट्रगान गाया जाता है। फिर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा को सलामी दिया जाता है। गणतंत्र दिवस को पूरे देश में विशेष रूप से भारत की राजधानी दिल्ली में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस अवसर के महत्व को चिह्नित करने के लिए हर साल एक भव्य परेड इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन (राष्ट्रपति के निवास) तक राजपथ पर राजधानी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है। इस भव्य परेड में भारतीय सेना के विभिन्न रेजिमेंट, वायुसेना, नौसेना आदि सभी भाग लेते हैं। इस समारोह में भाग लेने के लिए देश के सभी हिस्सों से राष्ट्रीय कडेट कोर व विभिन्न विद्यालयों से बच्चे आते हैं, समारोह में भाग लेना एक सम्मान की बात होती है। परेड प्रारंभ करते हुए प्रधानमंत्री अमर जवान ज्योति (सैनिकों के लिए एक स्मारक) जो राजपथ के एक छोर पर इंडिया गेट पर स्थित है पर पुष्प माला डालते हैं। इसके बाद शहीद सैनिकों की स्मृति में दो मिनट मौन रखा जाता है। यह देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े युद्ध व स्वतंत्रता आंदोलन में देश के लिए बलिदान देने वाले शहीदों के बलिदान का एक स्मारक है। इसके बाद प्रधानमंत्री, अन्य व्यक्तियों के साथ राजपथ पर स्थित मंच तक आते हैं, राष्ट्रपति बाद में अवसर के मुख्य अतिथि के साथ आते हैं।

परेड में विभिन्न राज्यों की प्रदर्शनी भी होती हैं, प्रदर्शनी में हर राज्य के लोगों की विशेषता, उनके लोक गीत व कला का दृश्यचित्र प्रस्तुत किया जाता है। हर प्रदर्शिनी भारत की विविधता व सांस्कृतिक समृद्धि प्रदर्शित करती है। परेड और जुलूस राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित होता है और देश के हर कोने में करोड़ों दर्शकों के द्वारा देखा जाता है। २०१४ में, भारत के ६४वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर, महाराष्ट्र सरकार के प्रोटोकहल विभाग ने पहली बार मुंबई के मरीन ड्राईव पर परेड आयोजित की थी, जैसी हर वर्ष नई दिल्ली में राजपथ में होती है।

क्या अंतर है गणतंत्र दिवस और संविधान दिवस में?

संविधान के पूर्णतः बनने का दिन २६ नवम्बर संविधान दिवस और देश मे लागू होने का दिन २६ जनवरी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संविधान दिवस से जुड़े रोचक तथ्य

संविधान दिवसः विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का विशिष्टताओं से भरा संविधान

२६ नवंबर, १९४९ को भारत गणराज्य का संविधान तैयार हुआ था। आंबेडकरवादी और बौद्ध मतावलंबी पिछले कई दशकों से इस तिथि को संविधान दिवस मनाते रहे हैं। नरेंद्र मोदी सरकार ने पहली बार २०१५ में इसे सरकारी तौर पर मनाने का फैसला किया। वह साल संविधान सभा की निर्मात्री समिति के अध्यक्ष डॉ भीमराव आंबेडकर का १२५ वां जयंती वर्ष था। संविधान दिवस मनाने का मकसद नागरिकों को संविधान के प्रति सचेत करना, समाज में संविधान के महत्व का प्रसार करना तथा डॉ भीमराव आंबेडकर के इस योगदान एवं उनके आदर्शों-विचारों का स्मरण करना है।

लोगों में उत्साह, होंगे कई तरह के कार्यक्रम

संविधान दिवस पर होगा ट्वीटाथॉन

२६ नवंबर को ट्वीटर पर कई ग्रुप ने मिलकर अपराहन दो-चार के बीच मैराथन की तर्ज पर ट्वीटाथॉन के लिए लोगों को आमंत्रित किया है। इस दौरान ट्वीटर पर संविधान को लेकर ट्वीट का मैराथन देखने को मिलेगा, जो भारत की सतत विकास लक्ष्य, तथ्य, दशा और दिशाओं पर आधारित होगा. यूनिसेफ समेत कई मीडिया समूह इस ट्वीटाथान के प्रायोजक हैं। इनसे रुसस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स, रुबीअजागरिक, रुकॉन्स्टीट्यूशन डे,/यूथकम्यूनिटी और/यूथकीआवाज पर जुड़ा जा सकता है।

७० नेता बने प्रजातंत्र के प्रहरी

संस्था 'कबीर के लोग' और 'सेंटर फॉर दलित स्टडीज, इंडिया फाउंडेशन' की ओर से एक कार्यक्रम रखा गया। प्रोग्राम की थीम 'संविधान ही समाधान' है. ७०वें संविधान दिवस के अवसर पर संस्था ने भारत के अलग-अलग प्रांत के ७० लोगों को 'प्रजातंत्र प्रहरी' अवॉर्ड दिया। साथ ही दलित समाज के साथ और दलित समाज के लिए काम करने वालों को 'नीलकंठ अवॉर्ड' दिया गया।

सेंट्रल लाइब्रेरी में सुरक्षित है संविधान

भारतीय संविधान की इन बेशकीमती प्रतियों को बहुत ही करीने से संसद भवन की लाइब्रेरी के एक कोने में बने स्ट्रांग रूम में रखा गया है। इन्हें पढ़ने की इजाजत किसी को नहीं है। संविधान की ये प्रतियां कभी खराब न हो पाये, इसके लिए इसे हीलियम भरे केस में सुरक्षित रखा

गया है। हीलियम एक अक्रिय गैस है, जो पन्नों को वातावरण के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया करने से रोकता है। यही कारण है कि आज भी हमारे देश की धरोहर हमारे पास सुरक्षित और मूल अवस्था में हैं।

संविधान पारित होने पर कक्ष में गूंजता रहा 'वंदे मातरम' और 'भारत माता की जय'

पूर्णिमा बनर्जी ने गाया राष्ट्रगान

संविधान पर सबसे पहले पंडित जवाहर लाल नेहरू ने हस्ताक्षर किये। हालांकि, कायदे से संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ राजेंद्र प्रसाद को हस्ताक्षर करने चाहिए थे।

इससे पहले संविधान के पारित होते ही काफी देर तक वंदे मातरम् और भारत माता की जय के नारों से केंद्रीय कक्ष गूंजता रहा था। इसके बाद पूर्णिमा बनर्जी ने राष्ट्रगान गाया था। जब वह गा रही थीं, तब वहां बैठीं अनेक हस्तियों की आंखें भींग गयी थीं। पूर्णिमा जी स्वाधीनता सेनानी अरुणा आसफ अली की बहन थी। संविधान लागू होने के दो दिन पहले, २४ जनवरी, १९५० को तीनों प्रतियों पर संविधान सभा के सभी ३०८ सदस्यों ने हस्ताक्षर किये थे।

नेहरूजी के आग्रह पर नंदलाल बोस ने २२ भागों में २२ चित्र बनाये।

नेहरू जी ने प्रख्यात चित्रकार नंदलाल बोस से भारतीय संविधान की मूल प्रति को अपनी चित्रकारी से सजाने का आग्रह किया था। २२१ पेज के इस दस्तावेज के हर पन्नों पर तो चित्र बनाना संभव नहीं था। लिहाजा, नंदलाल जी ने संविधान के हर भाग की शुरुआत में ८-१३ इंच के चित्र बनाये. संविधान में कुल २२ भाग हैं।

इस तरह उन्हें भारतीय संविधान की इस मूल प्रति को अपने २२ चित्रों से सजाने का मौका मिला। इन २२ चित्रों को बनाने में चार साल लगे। इस काम के लिए उन्हें २१,००० रुपये मेहनताना दिया गया। नंदलाल बोस का जन्म ३ दिसंबर, १८८२ में बिहार के मुंगेर जिले के हवेलीखड़गपुर में हुआ। उनके पिता पूर्णचंद्र बोस ऑर्किटेक्ट तथा महाराजा दरभंगा की रियासत के मैनेजर थे। १९२२ से १९५१ तक नंदलाल बोस शांति निकेतन के कला-भवन के प्रधानाध्यापक रहे। नंदलाल बोस की मुलाकात पंडित नेहरू से शांति निकेतन में ही हुई थी।

रास बिहारी और वीके वैद्य ने लिखी संविधान की प्रति

१४०० पन्नों की इस प्रति को अंग्रेजी में रास बिहारी ने बेहद सुंदर तरीके से लिखा, जबकि हिंदी की लिखावट वीके वैद्य की है। बदरुद्दीन तैयबजी ने ही अनेक लोगों की लिखावट देखने के बाद इन दोनों को यह महान दायित्व सौंपा था। इन दोनों ने मात्र एक हफ्ते में संविधान को लिखा था।

तीन प्रतियां बनवायी गयी थीं संविधान की

संविधान की तीन प्रतियां बनवायी गयी थीं, जिनमें से दो को नंदलाल बोस और राम मनोहर सिन्हा द्वारा सुसज्जित पन्नों पर प्रेम बिहारी रायाजादा ने, एक हिंदी और दूसरी अंग्रेजी में तैयार की, जबकि तीसरी कॉपी जो अंग्रेजी में है, उसे देहरादून में छपवाया गया।

१६ इंच चौड़ी है संविधान की मूल पांडुलिपि

२२ इंच लंबे चर्मपत्र शीटों पर लिखी गयी।

२५१ पृष्ठ शामिल थे पांडुलिपि में।

हस्तलिखित है मूल प्रति

किसी महान लेखक की दुर्लभ या कालजयी पुस्तक न होते हुए भी संविधान हमारे लिए बेहद खास है। इतना महत्वपूर्ण होते हुए भी संविधान की मूल प्रति हस्तलिखित है। इसकी पहली दो प्रतियां हिंदी और अंग्रेजी में हैं।

संविधान की प्रस्तावना

हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख २६ नवंबर १९४९ ई (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

संविधान निर्माण

२ वर्ष, ११ माह १८ दिन लगे थे।

२६ नवंबर, १९४९ को पूरा हुआ था।

२६ जनवरी, १९५० को भारत गणराज्य का यह संविधान लागू हुआ था।

डेनमार्क अपने संविधान दिवस को पितृ दिवस के रूप में मनाता है

डेनमार्क ने भारत से पूरे सौ साल पहले, ५ जून १८४९ को अपना संविधान स्वीकृत किया था। ५ जून १९५३ को यहां का संविधान दूसरी बार तैयार किया गया। वहां भी संविधान दिवस मनाया जाता है. इस दिन को डेनमार्क के लोग पितृ दिवस के रूप में मनाते हैं।

कैलीग्राफी के जरिये तैयार हुई थी संविधान की पहली प्रति

भारतीय संविधान की पहली प्रति के बारे में बहुत कम लोगों को ही पता है कि संविधान के सजे हुए जो फोटो हम देखते हैं, वह संविधान की पहली हस्तलिखित प्रति के फोटो हैं, जिन्हें कैलीग्राफी के जरिये तैयार किया गया था। इसे दिल्ली निवासी प्रेम बिहारी रायजादा ने तैयार किया था।

पंडित नेहरू ने किया था निवेदन रायजादा ने रखी थी अनोखी शर्त

२६ नवंबर, १९४९ को जब संविधान का पहला ड्राफ्ट तैयार हो गया, तब तय हुआ कि संविधान की पहली प्रति को कैलीग्राफी की खूबसूरत कला में सहेजा जाये। पंडित नेहरू ने प्रेम बिहारी रायजादा से खूबसूरत लिखावट में इटैलिक अक्षरों में संविधान की प्रति लिखने का अनुरोध किया। सक्सेना कायस्थ परिवार में जन्मे प्रेम बिहारी रायजादा का पारिवारिक कार्य कैलीग्राफी था। उन्होंने अपनी एक शर्त रख दी।

उन्होंने पंडित नेहरू से कहा कि संविधान के हर पृष्ठ पर मैं अपना नाम लिखूंगा और अंतिम पृष्ठ पर मैं अपने दादाजी का भी नाम लिखूंगा। प्रेम बिहारी रायजादा की इस शर्त पर तत्कालीन सरकार ने विचार किया और यह शर्त मान ली गयी।

ठुकरा दिया था मेहनताना, छह महीने में पूरा किया काम

सरकार ने जैसे ही रायजादा की शर्त मानी, रायजादा ने काम करना शुरू कर दिया। सरकार ने जब रायजादा से इसके लिए मेहनताना के बारे में पूछा, तो उनका जवाब बड़ा गंभीर था। उन्होंने कहा, मुझे एक भी पैसा नहीं चाहिए।

भगवान की कृपा से मेरे पास सबकुछ है और मैं अपने जीवन से काफी खुश हूं। जब प्रेम बिहारी रायजादा ने कैलीग्राफी के जरिये भावी भारत की वैधानिक संहिता को तैयार करने का काम स्वीकार कर लिया, तो उन्हें संविधान सभा के भवन में ही एक हॉल दे दिया गया, जहां उन्होंने छह महीने में यह कार्य पूरा किया।

संशोधन, जिसने जनतंत्र को दी मजबूती

भारतीय संविधान में अब तक १०१ बार संशोधन हुए हैं। इनके जरिये जनतंत्र और शासन प्रणाली को सामयिक जरूरतों के मुताबिक मजबूती प्रदान की गयी।

पहला संशोधन-१९५१: स्वतंत्रता, समानता एवं संपत्ति से संबंधित मौलिक अधिकारों को लागू करने के संबंधी व्यावहारिक कठिनाइयों का निराकरण। संविधान में नौवीं अनुसूची जोड़ी गयी। सातवां संशोधन-१९५६: भाषायी आधार पर राज्यों का पुनर्गठन।

४२वां संशोधन-१९७६: बेहद महत्वपूर्ण संशोधन। संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष एवं एकता और अखंडता शब्द जोड़े गये. नीति निर्देशक सिद्धांतों की मूल अधिकारों पर सर्वोच्चता, संविधान को न्यायिक परीक्षण से मुक्त करने और विधानसभाओं एवं लोकसभा की सीटों की संख्या को २००० तक स्थिर करने का प्रावधान किया गया।

४४वां संशोधन-१९७८: राष्ट्रीय आपात स्थिति लागू करने के लिए आंतरिक अशांति के स्थान पर सैन्य विद्रोह का आधार रखा गया एवं आपात स्थिति संबंधी अन्य प्रावधानों में परिवर्तन लाया गया, जिससे उनका दुरुपयोग न हो।

प्रमुख संविधान निर्मात्री समितियों के अध्यक्ष

जवाहर लाल नेहरू

संघ शक्ति समिति, संविधान समिति एवं राज्यों के लिए समिति

सरदार पटेल

रियासतों से परामर्श, मौलिक अधिकार, अल्पसंख्यक व प्रांतीय संविधान

जेबी कृपलानी

मौलिक अधिकारों पर उपसमिति, झंडा समिति

डॉ राजेंद्र प्रसाद

प्रक्रिया नियम समिति (संचालन)

अल्लादी कृष्णा स्वामी अय्यर

प्रारूप संविधान का परीक्षण करने वाली समिति

डॉ भीमराव आंबेडकर

प्रारूप समिति एवं मसौदा समिति

ये थे प्रारूप समिति के सात सदस्य : डॉ बीआर आंबेडकर, अल्लादी कृष्णा स्वामी अयंगर, एन गोपाल स्वामी अयंगर, कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुंशी, एन माधवराज (बीएल मित्तल के स्थान पर आये), टीटी कृष्णामाचारी (डीपी खेतान के स्थान पर आये), मोहम्मद सादुल्ला।

नमन देश के संविधान को

संकलनकर्ता
डॉ. प्रीति समकित सुराना
अन्तरा शब्दशक्ति
वारासिवनी (मप्र) ४८१३३१

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com
'सृजन शब्द से शक्ति का'
संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी
अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

शहीद दिवस पर विशेष

मोहनदास करमचन्द गांधी (२ अक्टूबर १८६९-३० जनवरी १९४८) भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा) के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव सम्पूर्ण अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गयी थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। उन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत भाषा में महात्मा अथवा महान आत्मा एक सम्मान सूचक शब्द है। गांधी को महात्मा के नाम से सबसे पहले १९१५ में राजवैद्य जीवराम कालिदास ने संबोधित किया था। उन्हें बापू (गुजराती भाषा में बापू यानी पिता) के नाम से भी याद किया जाता है। सुभाष चन्द्र बोस ने ६ जुलाई १९४४ को रंगून रेडियो से गांधी जी के नाम जारी प्रसारण में उन्हें राष्ट्रपिता कहकर सम्बोधित करते हुए आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं थीं। प्रति वर्ष २ अक्टूबर को उनका जन्म दिन भारत में गांधी जयंती के रूप में और पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है।

सबसे पहले गान्धी ने प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिये संघर्ष हेतु सत्याग्रह करना शुरू किया।१९१५ में उनकी भारत वापसी हुई। उसके बाद उन्होंने यहाँ के किसानों, मजदूरों और शहरी श्रमिकों को अत्यधिक भूमि कर और भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाने के लिये एकजुट किया। १९२१ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभालने के बाद उन्होंने देशभर में गरीबी से राहत दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण व आत्मनिर्भरता के लिये अस्पृश्यता के विरोध में अनेकों कार्यक्रम चलाये। इन सबमें विदेशी राज से मुक्ति दिलाने वाला स्वराज की प्राप्ति वाला कार्यक्रम ही प्रमुख था। गाँधी जी ने ब्रिटिश

सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाये गये नमक कर के विरोध में १९३० में नमक सत्याग्रह और इसके बाद १९४२ में अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन से खासी प्रसिद्धि प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीका और भारत में विभिन्न अवसरों पर कई वर्षों तक उन्हें जेल में भी रहना पड़ा। गांधी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिये वकालत भी की। उन्होंने साबरमती आश्रम में अपना जीवन गुजारा और परम्परागत भारतीय पोशाक धोती व सूत से बनी शाल पहनी जिसे वे स्वयं चरखे पर सूत कातकर हाथ से बनाते थे। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि के लिये लम्बे-लम्बे उपवास रखे।

प्रारम्भिक जीवन

मोहनदास करमचन्द गान्धी का जन्म पश्चिमी भारत में वर्तमान गुजरात के एक तटीय शहर पोरबंदर नामक स्थान पर २ अक्टूबर सन् १८६९ को हुआ था। उनके पिता करमचन्द गान्धी सनातन धर्म की पंसारी जाति से सम्बन्ध रखते थे और ब्रिटिश राज के समय काठियावाड़ की एक छोटी सी रियासत (पोरबंदर) के दीवान अर्थात् प्रधान मन्त्री थे। गुजराती भाषा में गान्धी का अर्थ है पंसारी जबकि हिन्दी भाषा में गन्धी का अर्थ है इत्र फुलेल बेचने वाला जिसे अंग्रेजी में परफ्यूमर कहा जाता है। उनकी माता पुतलीबाई परनामी वैश्य समुदाय की थीं। पुतलीबाई करमचन्द की चौथी पत्नी थी। उनकी पहली तीन पत्नियाँ प्रसव के समय मर गयीं थीं। भक्ति करने वाली माता की देखरेख और उस क्षेत्र की जैन परम्पराओं के कारण युवा मोहनदास पर वे प्रभाव प्रारम्भ में ही पड़ गये थे जिन्होंने आगे चलकर उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन प्रभावों में शामिल थे दुर्बलों में जोश की भावना, शाकाहारी जीवन, आत्मशुद्धि के लिये उपवास तथा विभिन्न जातियों के लोगों के बीच सहिष्णुता।

कम आयु में विवाह

मई १८८३ में साढे १३ साल की आयु पूर्ण करते ही उनका विवाह १४ साल की कस्तूर बाई मकनजी से कर दिया गया। पत्नी का पहला नाम छोटा करके कस्तूरबा कर दिया गया और उसे लोग प्यार से बा कहते थे। यह विवाह उनके माता पिता द्वारा तय किया गया व्यवस्थित बाल विवाह था जो उस समय उस क्षेत्र में प्रचलित था। लेकिन उस क्षेत्र में यही रीति थी कि किशोर दुल्हन को अपने माता पिता के घर और अपने पति से अलग अधिक समय तक रहना पड़ता था। १८८५ में जब गान्धी जी १५ वर्ष के थे तब इनकी पहली सन्तान ने जन्म लिया। लेकिन वह केवल कुछ दिन ही जीवित रही। और इसी साल उनके पिता करमचन्द गांधी भी चल बसे। मोहनदास और कस्तूरबा के चार सन्तान हुईं जो सभी पुत्र थे। हरीलाल गान्धी १८८८ में, मणिलाल गान्धी १८९२ में, रामदास गान्धी १८९७ में और देवदास गांधी १९०० में जन्मे। पोरबंदर से उन्होंने मिडिल और राजकोट से हाई स्कूल किया। दोनों परीक्षाओं में शैक्षणिक स्तर वह एक औसत छात्र रहे। मैट्रिक के बाद की परीक्षा उन्होंने भावनगर के शामलदास कॉलेज से कुछ परेशानी के साथ उत्तीर्ण की। जब तक वे वहाँ रहे अप्रसन्न ही रहे क्योंकि उनका परिवार उन्हें बैरिस्टर बनाना चाहता था।

विदेश में शिक्षा व विदेश में ही वकालत

अपने १९ वें जन्मदिन से लगभग एक महीने पहले ही ४ सितम्बर १८८८ को गांधी यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में कानून की पढाई करने और बैरिस्टर बनने के लिये इंग्लैंड चले गये। भारत छोड़ते समय जैन भिक्षु बेचारजी के समक्ष हिन्दुओं को मांस, शराब तथा संकीर्ण विचारधारा को त्यागने के लिए अपनी अपनी माता जी को दिए गये एक वचन ने उनके शाही राजधानी लंदन में बिताये गये समय को काफी प्रभावित किया। हालांकि गांधी जी ने अंग्रेजी रीति रिवाजों का अनुभव भी किया जैसे उदाहरण के तौर पर नृत्य कक्षाओं में जाने

आदि का। फिर भी वह अपनी मकान मालकिन द्वारा मांस एवं पत्ता गोभी को हजम नहीं कर सके। उन्होंने कुछ शाकाहारी भोजनालयों की ओर इशारा किया। अपनी माता की इच्छाओं के बारे में जो कुछ उन्होंने पढा था उसे सीधे अपनाने की बजाय उन्होंने बौद्धिकता से शाकाहारी भोजन का अपना भोजन स्वीकार किया। उन्होंने शाकाहारी समाज की सदस्यता ग्रहण की और इसकी कार्यकारी समिति के लिये उनका चयन भी हो गया जहाँ उन्होंने एक स्थानीय अध्याय की नींव रखी। बाद में उन्होने संस्थाएँ गठित करने में महत्वपूर्ण अनुभव का परिचय देते हुए इसे श्रेय दिया। वे जिन शाकाहारी लोगों से मिले उनमें से कुछ थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्य भी थे। इस सोसाइटी की स्थापना १८७५ में विश्व बन्धुत्व को प्रबल करने के लिये की गयी थी और इसे बौद्ध धर्म एवं सनातन धर्म के साहित्य के अध्ययन के लिये समर्पित किया गया था।

उन्हीं लोगों ने गांधी जी को श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ने के लिये प्रेरित किया। हिन्दू, ईसाई, बौद्ध, इस्लाम और अन्य धर्मों के बारे में पढ़ने से पहले गांधी ने धर्म में विशेष रुचि नहीं दिखायी। इंग्लैंड और वेल्स बार एसोसिएशन में वापस बुलावे पर वे भारत लौट आये किन्तु बम्बई में वकालत करने में उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली। बाद में एक हाई स्कूल शिक्षक के रूप में अंशकालिक नौकरी का प्रार्थना पत्र अस्वीकार कर दिये जाने पर उन्होंने जरूरतमन्दों के लिये मुकदमे की अर्जियाँ लिखने के लिये राजकोट को ही अपना स्थायी मुकाम बना लिया। परन्तु एक अंग्रेज अधिकारी की मूर्खता के कारण उन्हें यह कारोबार भी छोड़ना पड़ा। अपनी आत्मकथा में उन्होंने इस घटना का वर्णन अपने बड़े भाई की ओर से परोपकार की असफल कोशिश के रूप में किया है। यही वह कारण था जिस वजह से उन्होंने सन् १८९३ में एक भारतीय फर्म से नेटाल दक्षिण अफ्रीका में, जो उन दिनों ब्रिटिश साम्राज्य का भाग होता था, एक वर्ष के करार पर वकालत का कारोवार स्वीकार कर लिया।

दक्षिण अफ्रीका (१८९३-१८९४) में नागरिक अधिकारों के आन्दोलन

गांधी दक्षिण अफ्रीका में (१८९५)

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी को भारतीयों पर भेदभाव का सामना करना पड़ा। आरम्भ में उन्हें प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इन्कार करने के लिए ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इतना ही नहीं पायदान पर शेष यात्रा करते हुए एक यूरोपियन यात्री के अन्दर आने पर चालक की मार भी झेलनी पड़ी। उन्होंने अपनी इस यात्रा में अन्य भी कई कठिनाइयों का सामना किया। अफ्रीका में कई होटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। इसी तरह ही बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने नहीं माना। ये सारी घटनाएँ गान्धी के जीवन में एक मोड़ बन गईं और विद्यमान सामाजिक अन्याय के प्रति जागरुकता का कारण बनीं तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुईं। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गान्धी ने अंग्रेजी साम्राज्य के अन्तर्गत अपने देशवासियों के सम्मान तथा देश में स्वयं अपनी स्थिति के लिए प्रश्न उठाये।

१९०६ के जुलु युद्ध में भूमिका

१९०६ में, जुलु (नसन) दक्षिण अफ्रीका में नए चुनाव कर के लागू करने के बाद दो अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला गया। बदले में अंग्रेजों ने जूलू के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। गांधी जी ने भारतीयों को भर्ती करने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों को सक्रिय रूप से प्रेरित किया। उनका तर्क था अपनी नागरिकता के दावों को कानूनी जामा पहनाने के लिए भारतीयों को युद्ध प्रयासों में सहयोग देना चाहिए। तथापि, अंग्रेजों ने अपनी सेना में भारतीयों को पद देने से इंकार कर दिया था। इसके बावजूद उन्होने गांधी जी के इस प्रस्ताव को मान लिया कि भारतीय घायल अंग्रेज सैनिकों को उपचार के लिए स्टेचर पर लाने के लिए स्वैच्छा पूर्वक कार्य कर सकते हैं। इस कोर की बागडोर गांधी ने थामी।9ँ जुलाई (July २१), १९०६ को गांधी जी ने भारतीय जनमत इंडियन ओपिनिय (प्दकपंद व्वपदपवद) में लिखा कि २३ भारतीय, २४, निवासियों के विरूद्ध चलाए गए आप्रेशन के संबंध में प्रयोग द्वारा नेटाल सरकार के कहने पर एक कोर का गठन किया गया है।दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों से इंडियन ओपिनियन में अपने कॉलमों के माध्ययम से इस युद्ध में शामिल होने के लिए आग्रह किया और कहा, यदि सरकार केवल यही महसूस करती हे कि आरक्षित बल बेकार हो रहे हैं तब वे इसका उपयोग करेंगे और असली लड़ाई के लिए भारतीयों का प्रशिक्षण देकर इसका अवसर देंगे।

गांधी की राय में, १९०६ का मसौदा अध्यादेश भारतीयों की स्थिति में किसी निवासी के नीचे वाले स्तर के समान लाने जैसा था। इसलिए उन्होंने सत्याग्रह (Satyagrah), की तर्ज पर 'काफिर (Kaffir)' का उदाहरण देते हुए भारतीयों से अध्यादेश का विरोध करने का आग्रह किया। उनके शब्दों में, 'यहाँ तक कि आधी जातियां और काफिर जो हमसे कम आधुनिक हैं ने भी सरकार का विरोध किया है। पास का नियम उन पर भी लागू होता है किंतु वे पास नहीं दिखाते हैं।'

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष (१९१६ -१९४५)

गांधी १९१५ में दक्षिण अफ्रीका से भारत में रहने के लिए लौट आए।उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों पर अपने विचार व्यक्त किए, लेकिन उनके विचार भारत के मुख्य मुद्दों, राजनीति तथा उस समय के कांग्रेस दल के प्रमुख भारतीय नेता गोपाल कृष्ण गोखले पर ही आधारित थे जो एक सम्मानित नेता थे।

चंपारण और खेड़ा सत्याग्रह के समय १९१८ में गांधी

गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि १९१८ में चम्पारन सत्याग्रह और खेड़ा सत्याग्रह में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नील (indigo) नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भत्ता दिया गया जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गांवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर (unhygienic); और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढता ही गया। यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा

(Kheda), गुजरात में भी यही समस्या थी। गांधी जी ने वहां एक आश्रम (ashram) बनाया जहाँ उनके बहुत सारे समर्थकों और नए स्वेच्छिक कार्यकर्ताओं को संगठित किया गया। उन्होंने गांवों का एक विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया जिसमें प्राणियों पर हुए अत्याचार के भयानक कांडों का लेखाजोखा रखा गया और इसमें लोगों की अनुत्पादकीय सामान्य अवस्था को भी शामिल किया गया था। ग्रामीणों में विश्वायस पैदा करते हुए उन्होंने अपना कार्य गांवों की सफाई करने से आरंभ किया जिसके अंतर्गत स्कूल और अस्पताल बनाए गए और उपरोक्त वर्णित बहुत सी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए ग्रामीण नेतृत्व प्रेरित किया।

लेकिन इसके प्रमुख प्रभाव उस समय देखने को मिले जब उन्हें अशांति फैलाने के लिए पुलिस ने गिरफ्तार किया और उन्हें प्रांत छोड़ने के लिए आदेश दिया गया। हजारों की तादाद में लोगों ने विरोध प्रदर्शन किए ओर जेल, पुलिस स्टेशन एवं अदालतों के बाहर रैलियां निकाल कर गांधी जी को बिना शर्त रिहा करने की मांग की। गांधी जी ने जमींदारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन और हड़तालों को का नेतृत्व किया जिन्होंने अंग्रेजी सरकार के मार्गदर्शन में उस क्षेत्र के गरीब किसानों को अधिक क्षतिपूर्ति मंजूर करने तथा खेती पर नियंत्रण, राजस्व में बढोतरी को रद्द करना तथा इसे संग्रहित करने वाले एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस संघर्ष के दौरान ही, गांधी जी को जनता ने बापू पिता और महात्मा (महानआत्मा) के नाम से संबोधित किया। खेड़ा में सरदार पटेल ने अंग्रेजों के साथ विचार विमर्श के लिए किसानों का नेतृत्व किया जिसमें अंग्रेजों ने राजस्व संग्रहण से मुक्ति देकर सभी कैदियों को रिहा कर दिया गया था। इसके परिणामस्वरूप, गांधी की ख्याति देश भर में फैल गई।

असहयोग आन्दोलन

गांधी जी ने असहयोग, अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। पंजाब में अंग्रेजी फोजों द्वारा भारतीयों पर जलियावांला नरसंहार जिसे अमृतसर नरसंहार के नाम से भी जाना जाता है ने देश को भारी आघात पहुंचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी। गांधीजी ने ब्रिटिश राज तथा भारतीयों द्वारा प्रतिकारात्मक रवैया दोनों की की। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों तथा दंगों के शिकार लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा पार्टी के आरंभिक विरोध के बाद दंगों की भर्तूसना की। गांधी जी के भावनात्मक भाषण के बाद अपने सिद्धांत की वकालत की कि सभी हिंसा और बुराई को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है। किंतु ऐसा इस नरसंहार और उसके बाद हुई हिंसा से गांधी जी ने अपना मन संपूर्ण सरकार आर भारतीय सरकार के कब्जे वाली संस्थाओं पर संपूर्ण नियंत्रण लाने पर केंद्रित था जो जल्दीप ही स्वराज अथवा संपूर्ण व्यक्तिगत, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक आजादी में बदलने वाला था।

दिसम्बर १९०१ में गांधी जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया। उनके नेतृत्व में कांग्रेस को स्वराज के नाम वाले एक नए उद्देश्य के साथ संगठित किया गया। पार्दी में सदस्यता सांकेतिक शुल्क का भुगताने पर सभी के लिए खुली थी। पार्टी को किसी एक कुलीन संगठन की न बनाकर इसे राष्ट्रीय जनता की पार्टी बनाने के लिए इसके अंदर अनुशासन में सुधार लाने के लिए एक पदसोपान समिति गठित की गई। गांधी जी ने अपने अहिंसात्मक मंच को स्वदेशी नीति में शामिल करने के लिए विस्तार किया जिसमें विदेशी वस्तुओं विशेषकर अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करना था। इससे जुड़ने वाली उनकी वकालत का कहना था कि सभी भारतीय अंग्रेजों द्वारा बनाए वस्त्रों की अपेक्षा हमारे अपने लोगों द्वारा हाथ से बनाई गई खादी पहनें। गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन को सहयोग देने के लिए पुरूषों और महिलाओं को प्रतिदिन खादी के लिए सूत कातने में समय बिताने के लिए कहा। यह अनुशासन और समर्पण लाने की ऐसी नीति थी जिससे अनिच्छा और महत्वाकांक्षा को दूर किया जा सके और इनके स्थान पर उस समय महिलाओं को शामिल किया जाए जब ऐसे बहुत से विचार आने लगे कि इस प्रकार की गतिविधियां महिलाओं के लिए सम्मानजनक नहीं हैं। इसके अलावा गांधी जी ने ब्रिटेन की शैक्षिक संस्थाओं तथा अदालतों का बहिष्कार और सरकारी नौकरियों को छोड़ने का तथा सरकार से प्राप्त तमगों और सम्मान को वापस लौटाने का भी अनुरोध किया।

असहयोग को दूर-दूर से अपील और सफलता मिली जिससे समाज के सभी वर्गों की जनता में जोश और भागीदारी बढ गई। फिर जैसे ही यह आंदोलन अपने शीर्ष पर पहुंचा वैसे फरवरी १९२२ में इसका अंत चौरी-चोरा, उत्तरप्रदेश में भयानक द्वेष के रूप में अंत हुआ। आंदोलन द्वारा हिंसा का रूख अपनाने के डर को ध्याान में रखते हुए और इस पर विचार करते हुए कि इससे उसके सभी कार्यों पर पानी फिर जाएगा, गांधी जी ने व्यापक असहयोग के इस आंदोलन को वापस ले लिया। गांधी पर गिरफ्तार किया गया १० मार्च, १९२२, को राजद्रोह के लिए गांधी जी पर मुकदमा चलाया गया जिसमें उन्हें छह साल कैद की सजा सुनाकर जैल भेद दिया गया। १८ मार्च, १९२२ से लेकर उन्होंने केवल २ साल ही जैल में बिताए थे कि उन्हें फरवरी १९२४ में आंतों के ऑपरेशन के लिए रिहा कर दिया गया।

गांधी जी के एकता वाले व्यक्तित्व के बिना इंडियन नेशनल कांग्रेस उसके जेल में दो साल रहने के दौरान ही दो दलों में बंटने लगी जिसके एक दल का नेतृत्व सदन में पार्टी की भागीदारी के पक्ष वाले चित्त रंजन दास तथा मोतीलाल नेहरू ने किया तो दूसरे दल का नेतृत्व इसके विपरीत चलने वाले चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया। इसके अलावा, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अहिंसा आंदोलन की चरम सीमा पर पहुंचकर सहयोग टूट रहा था। गांधी जी ने इस खाई को बहुत से साधनों से भरने का प्रयास किया जिसमें उन्होंने १९२४ की बसंत में सीमित सफलता दिलाने वाले तीन सप्ताह का उपवास करना भी शामिल था।

स्वराज और नमक सत्याग्रह (नमक मार्च) दांडी में गाँधी, ५ अप्रैल, १९३०, के अंत में नमक मार्च

गांधी जी सक्रिय राजनीति से दूर ही रहे और १९२० की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता, शराब, अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ आंदोलन छेड़ते भी रहे। उन्होंने पहले १९२८ में लौटे। एक साल पहले अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक नया संवेधानिक सुधार आयोग बनाया

जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। इसका परिणाम भारतीय राजनैतिक दलों द्वारा बहिष्कार निकला। दिसम्बर १९२८ में गांधी जी ने कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा गया था अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में संपूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहें। गांधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे पुरूषों द्वारा तत्काल आजादी की मांग के विचारों को फलीभूत किया बल्कि अपनी स्वयं की मांग को दो साल की बजाए एक साल के लिए रोक दिया। अंग्रेजों ने कोई जवाब नहीं दिया। नहीं ३१ दिसम्बर १९२९, भारत का झंडा फहराया गया था लाहौर में है।२६ जनवरी १९३० का दिन लाहौर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने मनाया। यह दिन लगभग प्रत्येक भारतीय संगठनों द्वारा भी मनाया गया। इसके बाद गांधी जी ने मार्च १९३० में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया जिसे १२ मार्च से ६ अप्रेल तक नमक आंदोलन के याद में ४०० किलोमीटर (२४८ मील) तक का सफर अहमदाबाद से दांडी, गुजरात तक चलाया गया ताकि स्वयं नमक उत्पन्न किया जा सके। समुद्र की ओर इस यात्रा में हजारों की संख्या में भारतीयों ने भाग लिया। भारत में अंग्रेजों की पकड़ को विचलित करने वाला यह एक सर्वाधिक सफल आंदोलन था जिसमें अंग्रेजों ने ८०,००० से अधिक लोगों को जेल भेजा।

लार्ड एडवर्ड इरविन द्वारा प्रतिनिधित्व वाली सरकार ने गांधी जी के साथ विचार विमर्श करने का निर्णय लिया। यह इरविन गांधी की संधि मार्च १९३१ में हस्ताक्षर किए थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन को बंद करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने सभी राजनैतिक कैदियों को रिहा करने के लिए अपनी रजामंदी दे दी। इस समझौते के परिणामस्वरूप गांधी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में लंदन में आयोजित होने वाले गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। यह सम्मेलन गांधी जी और राष्ट्रीयवादी लोगों के लिए घोर निराशाजनक रहा, इसका कारण सत्ता का हस्तांतरण करने की बजाय भारतीय कीमतों एवं भारतीय अल्पसंख्यतकों पर केंद्रित होना था। इसके अलावा, लार्ड इरविन के उत्तराधिकारी लार्ड विलिंगटन, ने राष्ट्रतवादियों के आंदोलन को नियंत्रित एवं कुचलने का एक नया अभियान आरंभ कर दिया। गांधी फिर से गिरफ्तार कर लिए गए और सरकार ने उनके अनुयाईयों को उनसे पूर्णतया दूर रखते हुए गांधी जी द्वारा प्रभावित होने से रोकने की कोशिश की लेकिन, यह युक्ति सफल नहीं थी।

दलित आंदोलन और निश्चय दिवस

१९३२ में, दलित नेता और प्रकांड विद्वान डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर के चुनाव प्रचार के माध्यम से, सरकार ने अछूतों को एक नए संविधान के अंतर्गत अलग निर्वाचन मंजूर कर दिया। इसके विरोध में दलित हतों के विरोधी गांधी जी ने सितंबर १९३२ में छः दिन का अनशन ले लिया जिसने सरकार को सफलतापूर्वक दलित से राजनैतिक नेता बने पलवंकर बालू द्वारा की गई मध्यरस्ता वाली एक समान व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया। अछूतों के जीवन को सुधारने के लिए गांधी जी द्वारा चलाए गए इस अभियान की शुरूआत थी। गांधी जी ने इन अछूतों को हरिजन का नाम दिया जिन्हें वे भगवान की संतान मानते थे। ८ मई १९३३ को गांधी जी ने हरिजन आंदोलन में मदद करने के लिए आत्म शुद्धिकरण का २१ दिन तक चलने वाला उपवास किया। यह नया अभियान दलितों को पसंद नहीं आया तथापि वे एक प्रमुख नेता बने रहे। डॉ अम्बेडकर ने गांधी जी द्वारा हरिजन शब्द का उपयोग करने की स्पष्ट निंदा की, कि दलित सामाजिक रूप से अपरिपक्व हैं और सुविधासंपन्न जाति वाले भारतीयों ने पितृसत्तात्मक भूमिका निभाई है। अम्बेडकर और उसके सहयोगी दलों को भी महसूस हुआ कि गांधी जी दलितों के राजनीतिक अधिकारों को कम आंक रहे हैं। हालांकि गांधी जी एक वैश्य जाति में पैदा हुए फिर भी उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि वह डॉ अम्बेडकर जैसे दलित मसिहा के होते हुए भी वह दलितों के लिए आवाज उठा सकता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हिन्दुस्तान की सामाजिक बुराइयों में में छुआछूत एक प्रमुख बुराई थी जिसके के विरूद्ध महात्मा गांधी और उनके अनुयायी संघर्षरत रहते थे। उस समय देश के प्रमुख मंदिरों में हरिजनों का प्रवेश पूर्णतः प्रतिबंधित था। केरल राज्य का जनपद त्रिशुर दक्षिण भारत की एक प्रमुख धार्मिक नगरी है। यहीं एक प्रतिष्ठित मंदिर है गुरुवायुर मंदिर, जिसमें कृष्ण भगवान के बालरूप के दर्शन कराती भगवान गुरूवायुरप्पन की मूर्ति स्थापित है। आजादी से पूर्व अन्य मंदिरों की भांति इस मंदिर में भी हरिजनों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध था।

केरल के गांधी समर्थक श्री केलप्पन ने महात्मा की आज्ञा से इस प्रथा के विरूद्ध आवाज उठायी और अंततः इसके लिये सन् १९३३ ई० में सविनय अवज्ञा प्रारंभ की गयी। मंदिर के ट्रस्टियों को इस बात की ताकीद की गयी कि नये वर्ष का प्रथम दिवस अर्थात १ जनवरी १९३४ को अंतिम निश्चय दिवस के रूप में मनाया जायेगा और इस तिथि पर उनके स्तर से कोई निश्चय न होने की स्थिति मे महात्मा गांधी तथा श्री केलप्पन द्वारा आन्दोलनकारियों के पक्ष में आमरण अनशन किया जा सकता है। इस कारण गुरूवायूर मंदिर के ट्रस्टियो की ओर से बैठक बुलाकर मंदिर के उपासको की राय भी प्राप्त की गयी। बैठक मे ७७ प्रतिशत उपासको के द्वारा दिये गये बहुमत के आधार पर मंदिर में हरिजनों के प्रवेश को स्वीकृति दे दी गयी और इस प्रकार १ जनवरी १९३४ से केरल के श्री गुरूवायूर मंदिर में किये गये निश्चय दिवस की सफलता के रूप में हरिजनों के प्रवेश को सैद्वांतिक स्वीकृति मिल गयी। गुरूवायूर मंदिर जिसमें आज भी गैर हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है तथापि कई धर्मों को मानने वाले भगवान भगवान गुरूवायूरप्पन के परम भक्त हैं। महात्मा गांधी की प्रेरणा से जनवरी माह के प्रथम दिवस को निश्चय दिवस के रूप में मनाया गया और किये गये निश्चय को प्राप्त किया गया। १९३४ की गर्मियों में, उनकी जान लेने के लिए उन पर तीन असफल प्रयास किए गए थे।

जब कांग्रेस पार्टी के चुनाव लड़ने के लिए चुना और संघीय योजना के अंतर्गत सत्ता स्वीकार की तब गांधी जी ने पार्टी की सदस्यता से इस्तीफा देने का निर्णय ले लिया। वह पार्टी के इस कदम से असहमत नहीं थे किंतु महसूस करते थे कि यदि वे इस्तीफा देते हैं तब भारतीयों के साथ उसकी लोकप्रियता पार्टी की सदस्यता को मजबूत करने में आसानी प्रदान करेगी जो अब तक कम्यूनिसटों, समाजवादियों, व्यापार संघों, छात्रों, धार्मिक नेताओं से लेकर व्यापार संघों और विभिन्न आवाजों के बीच विद्यमान थी। इससे इन सभी को अपनी अपनी बातों के सुन जाने का अवसर प्राप्त होगा। गांधी जी राज के लिए किसी पार्टी का नेतृत्व करते हुए प्रचार द्वारा कोई ऐसा लक्ष्य सिद्ध नहीं

करना चाहते थे जिसे राज के साथ अस्थायी तौर पर राजनैतिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार कर लिया जाए।

गांधी जी नेहरू प्रेजीडेन्सी और कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के साथ ही १९३६ में भारत लौट आए। हालांकि गांधी की पूर्ण इच्छा थी कि वे आजादी प्राप्त करने पर अपना संपूर्ण ध्यान केंद्रित करें न कि भारत के भविष्य के बारे में अटकलों पर। उसने कांग्रेस को समाजवाद को अपने उद्देश्य के रूप में अपनाने से नहीं रोका। १९३८ में पार्टी अध्यक्ष पद के लिए चुने गए सुभाष बोस के साथ गांधी जी के मतभेद थे। बोस के साथ मतभेदों में गांधी के मुख्य बिंदु बोस की लोकतंत्र में प्रतिबद्धता की कमी तथा अहिंसा में विश्वास की कमी थी। बोस ने गांधी जी की आलोचना के बावजूद भी दूसरी बार जीत हासिल की किंतु कांग्रेस को उस समय छोड़ दिया जब सभी भारतीय नेताओं ने गांधी जी द्वारा लागू किए गए सभी सिद्धातों का परित्याग कर दिया गया।

लेखन कार्य एवं प्रकाशन

गाँधी जी पर हवाई बहस करने एवं मनमाना निष्कर्ष निकालने की अपेक्षा यह युगीन आवश्यकता ही नहीं वरन् समझदारी का तकाजा भी है कि गाँधीजी की मान्यताओं के आधार की प्रामाणिकता को ध्यान में रखा जाए। सामान्य से विशिष्ट तक सभी संदर्भों में दस्तावेजी रूप प्राप्त गाँधी जी का लिखा-बोला प्रायः प्रत्येक शब्द अध्ययन के लिए उपलब्ध है। इसलिए स्वभावतः यह आवश्यक है कि इनके मद्देनजर ही किसी बात को यथोचित मुकाम की ओर ले जाया जाए। लिखने की प्रवृत्ति गाँधीजी में आरंभ से ही थी। अपने संपूर्ण जीवन में उन्होंने वाचिक की अपेक्षा कहीं अधिक लिखा है। चाहे वह टिप्पणियों के रूप में हो या पत्रों के रूप में। कई पुस्तकें लिखने के अतिरिक्त उन्होंने कई पत्रिकाएँ भी निकालीं और उनमें प्रभूत लेखन किया। उनके महत्त्वपूर्ण लेखन कार्य को निम्न बिंदुओं के अंतर्गत देखा जा सकता है:

गाँधीजी द्वारा सम्पादित पत्र-पत्रिकाएँ

गाँधी जी एक सफल लेखक थे। कई दशकों तक वे अनेक पत्रों का संपादन कर चुके थे जिसमे हरिजन, इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया आदि सम्मिलित हैं। जब वे भारत में वापस आए तब उन्होंने श्नवजीवनश नामक मासिक पत्रिका निकाली। बाद में नवजीवन का प्रकाशन हिन्दी में भी हुआ।ख्६८, इसके अलावा उन्होंने लगभग हर रोज व्यक्तियों और समाचार पत्रों को पत्र लिखा

प्रमुख प्रकाशित पुस्तकें

गाँधी जी द्वारा मौलिक रूप से लिखित पुस्तकें चार हैं- हिंद स्वराज, दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, सत्य के प्रयोग (आत्मकथा), तथा गीता पदार्थ कोश सहित संपूर्ण गीता की टीका। गाँधी जी आमतौर पर गुजराती में लिखते थे, परन्तु अपनी किताबों का हिन्दी और अंग्रेजी में भी अनुवाद करते या करवाते थे।

हिंद स्वराज

हिंद स्वराज (मूलतः हिंद स्वराज्य) नामक अल्पकाय ग्रंथरत्न गाँधीजी ने इंग्लैंड से लौटते समय किल्डोनन कैसिल नामक जहाज पर गुजराती में लिखा था और उनके दक्षिण अफ्रीका पहुँचने पर इंडियन ओपिनियन में प्रकाशित हुआ था। आरंभ के बारह अध्याय ११ दिसंबर १९०९ के अंक में और शेष १८ दिसंबर १९०९ के अंक में। पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन पहली बार जनवरी १९१० में हुआ था और भारत में बम्बई सरकार द्वारा २४ मार्च १९१० को इसके प्रचार पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। बम्बई सरकार की इस कार्रवाई का जवाब गाँधीजी ने इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करके दिया। इस पुस्तक के परिशिष्ट-१ में पुस्तक में प्रतिपादित विषय के अधिक अध्ययन के लिए २० पुस्तकों की सूची भी दी गयी है जिससे गाँधीजी के तत्कालीन अध्ययन के विस्तार की एक झलक भी मिलती है।

दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास

'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' मूलतः गुजराती में 'दक्षिण आफ्रिकाना सत्याग्रहनो इतिहास' नाम से २६ नवंबर १९२३ को, जब वे यरवदा जेल में थे, लिखना शुरू किया। ५ फरवरी १९२४ को रिहा होने के समय तक उन्होंने प्रथम ३० अध्याय लिख डाले थे। यह इतिहास लेखमाला के रूप में १३ अप्रैल १९२४ से २२ नवंबर १९२५ तक 'नवजीवन' में प्रकाशित हुआ। पुस्तक के रूप में इसके दो खंड क्रमशः १९२४ और १९२५ में छपे। वालजी देसाई द्वारा किये गये अंग्रेजी अनुवाद का प्रथम संस्करण अपेक्षित संशोधनों के साथ एस९ गणेशन मद्रास ने १९२८ में और द्वितीय और तृतीय संस्करण नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद ने १९५० और १९६१ में प्रकाशित किया था।

सत्य के प्रयोग (आत्मकथा)

आत्मकथा के मूल गुजराती अध्याय धारावाहिक रूप से श्नवजीवनश के अंकों में प्रकाशित हुए थे। २९ नवंबर १९२५ के अंक में श्प्रस्तावनाश के प्रकाशन से उसका आरंभ हुआ और ३ फरवरी १९२९ के अंक में श्पूर्णाहुतिश शीर्षक अंतिम अध्याय से उसकी समाप्ति। गुजराती अध्यायों के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी नवजीवन में उनका हिन्दी अनुवाद और यंग इंडिया में उनका अंग्रेजी अनुवाद भी दिया जाता रहा। तदनुसार श्प्रस्तावनाश का अनुवाद श्हिन्दी नवजीवनश के ३ दिसंबर १९२५ के अंक में प्रकाशित हुआ था। हिन्दी अनुवाद में आत्मकथा का पहला खंड पुस्तक के रूप में पहली बार सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली से सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था। गाँधी जी की रचनाओं के स्वत्वाधिकारी नवजीवन ट्रस्ट ने अपनी ओर से उसके हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन सन् १९५७ में किया था।

गीता माता

श्रीमद्भगवद्गीता से गाँधी जी का हार्दिक लगाव प्रायः आजीवन रहा। गीता पर उनका चिंतन-मनन तथा लेखन भी लंबे समय तक चलते रहा। सम्पूर्ण गीता का गुजराती अनुवाद, प्रस्तावना सहित, उन्होंने जून १९२९ में पूरा किया था और १२ मार्च १९३० को नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद से श्अनासक्ति योगश नाम से उसका पुस्तकाकार प्रकाशन हुआ था। उसका हिंदी, बांग्ला एवं मराठी में अनुवाद भी तत्काल हो गया था। अंग्रेजी अनुवाद इसके बाद जनवरी १९३१ में संपन्न हुआ था तथा पहले यंग इंडिया के अंक में प्रकाशित हुआ था।

गीता के प्रत्येक श्लोक का अनुवाद सामान्य पाठकों के लिए सहज बोधगम्य न होने से गाँधी जी ने गीता के प्रत्येक अध्याय के भावों को सामान्य पाठकों के लिए सहज बोधगम्य रूप में लिखा। यरवदा सेंट्रल जेल में १९३० और १९३२ में प्रत्येक सप्ताह पत्र के रूप में ये भाव भी नारायणदास गांधी को भेजे जाते रहे ताकि उन्हें आश्रम की प्रार्थना सभाओं में पढ़े जायें। इन्हीं का प्रकाशन बाद में पुस्तक रूप में श्गीता-बोधश नाम से हुआ। इनके अतिरिक्त भी उन्होंने गीता पर प्रार्थना सभाओं में अनेक प्रवचन दिये थे। गीता से गाँधी जी का जुड़ाव इस कदर था कि अपने अत्यंत व्यस्त जीवन के बावजूद उन्होंने गीता के प्रत्येक पद का अक्षर

क्रम से कोश तैयार किया जिसमें पद के अर्थ के साथ-साथ उनके प्रयोग-स्थल भी निर्दिष्ट थे। इन समस्त सामग्रियों का एकत्र प्रकाशन ही 'गीता माता' के नाम से हुआ है।

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय के प्रथम संस्करण (१९५८) एवं नवीन संस्करण (१९९७) की झलक

गाँधी जी के लिखित एवं वाचिक समग्र साहित्य के प्रकाशन हेतु भारत सरकार द्वारा एक ग्रंथमाला के प्रकाशन का निर्णय प्रकाशन जगत में निःसंदेह एक ऐतिहासिक कदम रहा है। इस ग्रंथमाला का उद्देश्य गाँधी जी ने दिन-प्रति-दिन और वर्ष-प्रति-वर्ष जो कुछ कहा और लिखा उस सबको एकत्र करना था।

इसी निर्णय के तहत अनेक अधीत विद्वानों के सहयोग से सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय का प्रकाशन हुआ। यह प्रकाशन तीन भाषाओं में हुआ। अंग्रेजी में पहली बार १०० खंडों में (THE COLLECTED WORKS OF MAHATMA GANDHI नाम से) तथा संशोधित रूप में ९८ खंडों में इसका प्रकाशन हुआ है। हिन्दी में ९७ खंडों में तथा गुजराती में ७० खंडों में यह प्रकाशकीय महाकुंभ संपन्न हुआ है। सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (हिन्दी) में दो अतिरिक्त वैशिष्ट्य भी सम्मिलित हैं। एक तो यह कि प्रत्येक खंड के अंत में अक्षरक्रम से शब्दानुक्रमणिका दी गयी है जिससे अध्ययन तथा विभिन्न कार्यवश पुनरावलोकन में अत्यंत सुविधा हो गयी हैय तथा दूसरी यह कि प्रत्येक खंड के अंत में गाँधी जी का तारीखवार जीवन-वृत्तान्त दिया गया है, जिससे सरलतापूर्वक एक नजर में गाँधीजी के जीवन की सभी महत्वपूर्ण घटनाओं एवं बातों की संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध हो जाती है।

अन्य

इनके अतिरिक्त गाँधी जी के समग्र साहित्य से चुनिंदा अंशों के संचयन तथा विभिन्न विषयों पर केंद्रित छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का भी विभिन्न नामों से प्रकाशन होते रहा है। इनमें दो संचयन अति प्रसिद्ध तथा अत्युपयोगी रहे हैं और इन दोनों का प्रकाशन भी गाँधी जी के जीवन-काल में ही (अंग्रेजी में, १९४५ एवं १९४७ में) हो गया था।

महात्मा गांधी के विचार- सं.-आर.के. प्रभु एवं यू.आर.राव (नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली)

मेरे सपनों का भारत- सं.-आर.के.प्रभु (नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद)

गाँधी जी ने जॉन रस्किन की अन्टू दिस लास्ट की गुजराती में व्याख्या भी की है। अन्तिम निबंध को उनका अर्थशास्त्र से सम्बंधित कार्यक्रम कहा जा सकता है उन्होंने शाकाहार, भोजन और स्वास्थ्य, धर्म, सामाजिक सुधार पर भी विस्तार से लिखा है।

सन् १९९९ में गाँधी जी के संपूर्ण कार्य का संशोधित संस्करण विवादों के घेरे में आ गया क्योंकि गाँधी जी के अनुयायियों ने सरकार पर राजनीतिक उद्देश्यों के लिए परिवर्तन शामिल करने का आरोप लगाया।

महात्मा गांधी की हत्या

भारत में ३० जनवरी का दिन इतिहास की सबसे दुखद घटनाओं में से एक के लिए याद किया जाता है। १९४८ में आज ही के दिन नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की गोली मार कर हत्या कर दी थी। अहिंसा को अपना सबसे बड़ा हथियार बना कर अंग्रेजों को देश से बाहर का रास्ता दिखाने वाले महात्मा गांधी उस दिन भी रोज की तरह शाम की प्रार्थना के लिए जा रहे थे. उसी दौरान अचानक सामने आए गोडसे ने उन्हें बहुत करीब से गोली मारी और साबरमती का संत 'हे राम' कहकर दुनिया से विदा हो गया।

३० जनवरी, १९४८ को एक नव स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत के सिर से उसके 'पिता' का साया उठ गया. बाद में गोडसे ने कहा कि उसने देश के बंटवारे के लिए गांधीजी को जिम्मेदार मानते हुए उनकी हत्या की। लेकिन उस घटना के बाद का इतिहास गवाह है कि देश ने गोडसे को नकारा है और गांधी को एक विचार के रूप में जिंदा रखा है। उन्हें मृत्यु के बाद दुनियाभर में और ज्यादा सम्मान मिला।

गांधी जी की आलोचना

गांधी के सिद्धान्तों और करनी को लेकर प्रायः उनकी आलोचना भी की जाती है।उनकी आलोचना के मुख्य बिन्दु हैं-

- जुलु विद्रोह में अंग्रेजों का साथ देना।
- दोनो विश्वयुद्धों में अंग्रेजों का साथ देना।
- खिलाफत आन्दोलन जैसे साम्प्रदायिक आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन बनाना।
- अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र क्रान्तिकारियों के हिंसात्मक कार्यों की निन्दा करना।
- गांधी-इरविन समझौता- जिससे भारतीय क्रन्तिकारी आन्दोलन को बहुत धक्का लगा।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर सुभाष चन्द्र बोस के चुनाव पर नाखुश होना।
- चौरीचौरा काण्ड के बाद असहयोग आन्दोलन को सहसा रोक देना।
- भारत की स्वतंत्रता के बाद नेहरू को प्रधानमंत्री का दावेदार बनाना।
- स्वतंत्रता के बाद पाकिस्तान को ४४ करोड़ रूपये देने की जिद पर अनशन करना।
- भीमराव आम्बेडकर, महात्मा गांधी को जाति प्रथा का समर्थक समझते थे।

देश-दुनिया के इतिहास में ३० जनवरी को दर्ज अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का ब्यौरा इस प्रकार है-

१९३३- राष्ट्रपति पॉल वान हिंडेनबर्ग ने अडोल्फ हिटलर को जर्मनी का चांसलर बनाया।

१९४१- नौवहन के इतिहास की एक बड़ी घटना में सोवियत संघ की एक पनडुब्बी ने जर्मनी का एक पोत डुबा दिया, जिससे उसमें सवार करीब ९,००० लोगों की मौत हो गई।

१९४८- भारत में ३० जनवरी १९४८ को नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की गोली मार कर हत्या कर दी थी।

१९६५- ब्रिटेन के लोगों ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय देश के प्रधानमंत्री रहे विंस्टन चर्चिल को अंतिम विदाई दी।

२००४- वैज्ञानिकों ने एक संवाददाता सम्मेलन में ऐलान किया कि मंगल पर भेजे गए अंतरिक्ष यान 'अपोर्चुनिटी' को मंगल ग्रह पर आयरन ऑक्साइड की मौजूदगी के संकेत मिले हैं। इसका सीधा मतलब है कि संभवतः एक समय वहां पानी रहा होगा।

२००७- एक बड़े अंतरराष्ट्रीय सौदे में भारत की दिग्गज कंपनी टाटा ने एंग्लो डच स्टील निर्माता कंपनी कोरस ग्रुप को १२ अरब डॉलर से अधिक में खरीदा।

२००९ - ऑस्ट्रेलिया ओपन के मिक्स्ड डबल मुकाबले में सानिया मिर्जा और महेश भूपति की जोड़ी फाइनल में पहुंची।

२००९ - कोका कोला कंपनी ने ऐलान किया कि वह अमेरिका में अपने प्रमुख उत्पाद 'कोका कोला क्लासिक' का नाम बदलकर कोका कोला करने जा रही है। कोका कोला के साथ 'क्लासिक' शब्द को १९८५ में जोड़ा गया था।

पंजीयन क्रमांक (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

''सृजन शब्द से शक्ति का''

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन झलकियाँ

अन्तरा शब्द शक्ति के प्रकल्प एवं अब तक किये कार्य

१. व्हाट्सअप समूह २ फरवरी २०१६ से।

२. फेसबुक समूह २ फरवरी २०१६ से।

३. लोकजंग दैनिक संध्या समाचार पत्र में अन्तरा शब्दशक्ति के पेज पर ७-८ रचनाओं का सोमवार से शुक्रवार तक प्रकाशन १ नवंबर २०१६ से।

४. फेसबुक पेज १६ फरवरी २०१७ से।

५. मासिक वेब पत्रिका १ जुलाई २०१७ से।

६. अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन २५ मार्च २०१८ से।

७. ईबुक प्रकाशन १५ जनवरी २०१९ से।

८. अब तक लगभग ३०० से अधिक पुस्तकों और १५ साझा संग्रहों का प्रकाशन, विमोचन और ८४० सम्मान अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा किये गए।

९. १ जून २०१९ से अन्तरा शब्द शक्ति एक पंजीकृत सेवा संस्था के रूप में भी कार्यरत है।

१०. २१ सितंबर २०१९ से बहुभाषा समन्वय प्रकल्प कार्यरत है।

११. १ अक्टूबर २०१९ से अन्तरा शब्दशक्ति की रचनाओं का वेब पृष्ठ ''सृजन शब्द से शक्ति का'' संपादित एवं प्रकाशित।

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-088-9

मुल्य - 120/-